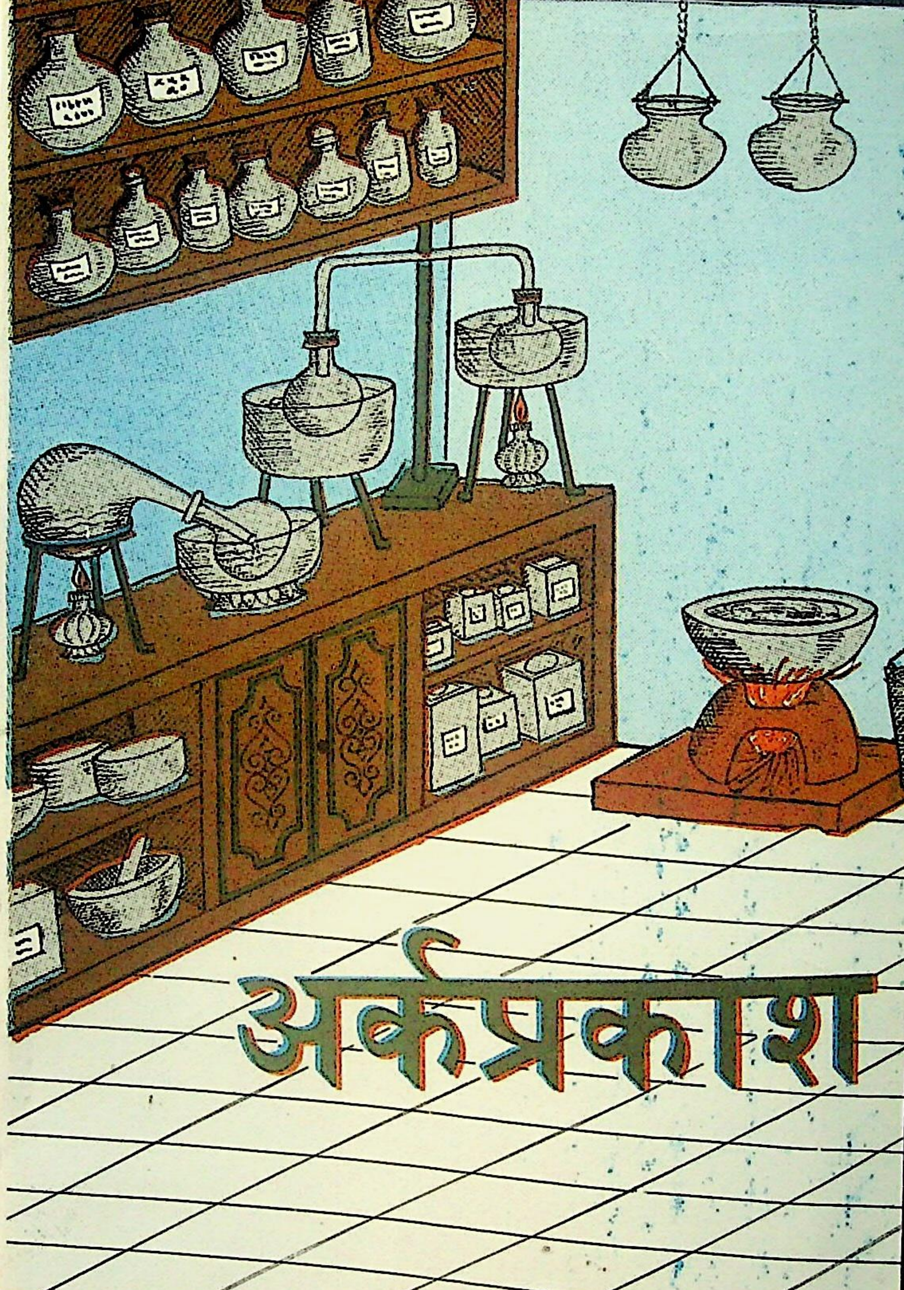

अर्कप्रकाश

अर्कप्रकाश

बांसबरेलीनिवासी पंडित मुकुन्दरामकृत-
हिन्दीटीकासहित

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई-४

संस्करण : सितंबर २०१९, संवत् २०७६

मूल्य : २०० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

अर्कप्रकाश की विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठांक

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त

अर्कप्रकाशः

हिन्दीटीकासहितः

प्रथमं शतकम्

मंगलाचरणम्

औषधीपतिनेत्राय पद्मिनीपतिमूर्तये ।।
कालकालाय नीलाय पार्वतीपतये नमः ।।१।।

औषधी के पति चन्द्रमा जिनँके मस्तक में हैं और चन्द्रमा के सदृश जिनकी सुन्दर मूर्ति है और जो काल के भी मारने वाले ऐसे जो नीलकण्ठ पार्वतीपति श्रीमहादेव हैं सो उनके अर्थ हमारा नमस्कार है।।१।।

गर्भभारपरिक्रान्ता कन्या मन्दोदरी तथा ।।
रावणं परिपप्रच्छ पूजान्ते तुष्टमानसम् ।।२।।

पंच कन्याओं में से मन्दोदरी नाम करके जो कन्या है सो गर्भ के भार से दु:खित भई और पूजन से निवर्त्तने के समय प्रसन्नमन जो अपने स्वामी रावण हैं उनको देखकर पूछा।।२।।

मन्दोदर्युवाच

स्वामिन्दैत्यसुराराध्य चतुर्वेदविशारद ।।
सदाऽणिमाद्याप्तकाम भुवनत्रयपालक ।।३।।

इदं शुक्रममोघं ते यदारभ्योदरे स्थितम् ।।
तदारभ्य न शक्नोमि वक्तुं वक्तुमना मनाक् ।।४।।

स्वामी से मन्दोदरी बोलती है कि हे स्वामिन्! दैत्य और देवताओं से आराधन योग्य और चारों वेदों के जानने में निपुण और अणिमादि सिद्धियों से पूर्ण कामवाले! और तीनों भुवनों के रक्षक अर्थात् पालन करने वाले! यह आपका शुद्ध सार्थक वीर्य गर्भरूप तेज जब से मेरे पेट में स्थित हुआ है तभी से मैं बोलने को चाहती हूं परन्तु पीड़ा के सबब से बोल नहीं सकती हूं।।३-४।।

दुखं रोगश्च कालश्च त्वत्प्रसादान्मनागपि ।।
रक्षोगणा न स्पृशन्ति त्वेषा पीडा कथं मम ।।५।।
उपायं ब्रूहि मे नाथ गर्भिण्या हि यथोचितम् ।।
यथा विवर्धते गर्भो जायते च बलं मम ।।६।।

पर आपके प्रसन्न होने पर दुःख और रोग व काल और राक्षसगण भी कोई मुझे स्पर्श नहीं कर सकते हैं, परन्तु यह फिर इनकी पीड़ा मुझे कैसे हुई। सो हे मेरे स्वामिन्! मुझे गर्भिणी का यथोचित उपाय कहो कि जिससे गर्भ खूब बढ़े और बल भी अधिक होवे।।५-६।।

रावण उवाच

एकदा हि मया पृष्टा पार्वती प्रीतमानसा ।।
उमे ते हि जगन्मातस्तव देहोद्भवाः सुताः ।।७।।
कथं न हि गणेशाद्याः सदृशास्तव बालकाः ।।
तिष्ठन्ति नानुरूपास्ते कारणं ब्रूहि मे शिवे ।।८।।

इस प्रकार सुनकर रावण ने कहा कि हे प्यारी! ऐसे ही एक समय मुझकरके प्रसन्न मन पार्वती से यही बात पूछी गई थी कि हे जगन्माता पार्वती! तुम्हारे शरीर से उत्पन्न हुए जो गणेशादि पुत्र हैं सो आपके समान बल तेज और रूपवाले क्यों नहीं दीख पड़ते हैं? इन सबसे आप अधिक बल व रूप तेजस्वी दीखती हो सो उसका क्या कारण है सो आप

दया करके मुझसे कहो।।७-८।।

श्रीदेव्युवाच

कामिनोऽनङ्गनाशाय जायन्ते बालकाः सुत ॥
भार्यापि वृद्धा भवति तरुण्यपि सुते सति ॥९॥
एवं सदाशिवं रन्तुं सदैवाहं कुमारिका ॥
गणेशस्कन्दनन्द्याद्याः कल्पिता मानसाः सुताः ॥१०॥

श्रीमहादेवी पार्वती बोलती भई कि हे पुत्र रावण! सुन, जो सिर्फ कामियों का काम नाश करने के लिये यह संतान उत्पन्न होती है और तरुणी युवा अवस्थावाली जो स्त्री उनके पुत्र उत्पन्न होने से शीघ्रता से वृद्धा हो जाती हैं। और मैं रीतिमार्ग से रहती हूं, श्रीसदाशिवजी की सेवा के निमित्त हमेशा कुमारी अवस्था से रहती हूं और गणेश स्कंद नन्दी आदि पुत्र मैंने अपने मन से कल्पित किये हैं।।९-१०।।

रावण उवाच

नमस्तुभ्यं मया किं हि संसाराकृष्टचेतसा ॥
विवाहं न करिष्यामि प्रत्युत स्यां कुमारकः ॥११॥

रावण बोले—हे माता! मैं बारंबार तुमको नमस्कार करता हूं और हमसे संसारी जीव से कुछ बन नहीं सकता है और अब मैं विवाह ही नहीं करूंगा किन्तु कुमार अवस्था में ही रहूंगा।।११।।

इति मद्वचनं श्रुत्वा पार्वती वाक्यमब्रवीत् ॥
निर्विण्णो भव मा पुत्र कुरु राज्यं चिरं स्थिरम् ॥१२॥
मया सह कृतेर्ष्येयं विष्णुपत्न्यतिचञ्चला ॥
त्वया गृहे समानेया स्थाप्या वै बन्धनेऽरिवत् ॥१३॥

इस प्रकार रावण के वंचन सुनकर फिर पार्वती बोली हे पुत्र! तू दुःखी मत होना, तुम अधिक कालतक चिरंजीव रहकर राज पाट करोगे और यह मेरे संग ईर्षा करने वाली विष्णु भगवान् की पत्नी अर्थात् जानकी है सो इसको तू अपने स्थान में लाकर शत्रु के तुल्य बन्धन में

रख॥१२-१३॥

तयोन्मत्ताः सुराः सर्वे निर्जेतव्या महाबलाः ॥
मम प्रकृतिदेहस्थरोमेभ्यः शतशोऽभवन् ॥१४॥
ओषध्यस्तद्बलादेवं त्वं विश्वं जय बालक ॥
इत्युक्त्वा मामकथयत्पार्वती महिमानकम् ॥१५॥

उसी लक्ष्मीरूपी जानकी करके उन्मत्त जो महाबली देवता हैं उनको तू जीत लेना अर्थात् विजय पावेगा और मेरी देह में जो आप रोम स्वभाव से ही सैकड़ों औषधि उत्पन्न हुई हैं सो हे पुत्र! उन्हीं के बल से तू संसार को जीतेगा इस प्रकार मुझसे पार्वतीजी ने कोमल वचनों से सुन्दर औषधियों की महिमा कही॥१४-१५॥

दिव्यौषधिकथन

दिव्यौषधीनां कथितः प्रकल्पः प्रीतया तया ॥
तमहं सम्प्रवक्ष्यामि शृणुष्वावहिता प्रिये ॥१६॥

फिर उन्हीं ने प्रसन्नातापूर्वक औषधियों का कल्प वर्णन किया सो ही मैं आपसे कहता हूं सो हे प्रिये! सावधान चित्त से तू सुन॥१६॥

रावण उवाच

ओषध्यः पञ्चधा ख्याता लता गुल्माश्च शाखिनः ॥
पादपाः प्रसराश्चेति तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥१७॥

फिर रावण ने कहा कि औषधि पांच तरह की होती है एक वेल, दूसरी गुच्छ, तीसरी शाखा (डालीवाली), चौथी बडे वृक्ष और पांचवीं प्रसर (कटिवाली), अब मैं इनका लक्षण कहता हूं॥१७॥

औषधियों के लक्षण

गुडूच्याद्या लताः प्रोक्ता गुल्माः पर्प्पटकादयः ॥
आम्राद्या शाखिनो ज्ञेया वटाश्वत्थादि पादपाः ॥१८॥
कण्टकार्यादिकाः सर्वाः प्रसरा इति कीर्तिताः ॥
तासां पञ्चैव चाङ्गानि प्रबलानि यथाक्रमम् ॥१९॥

गुडूची अर्थात् गिलोय से आदि लेकर जो दवाई है, सो लता कहाती हैं और पर्पट (पित्तपापड़ा) आदि गुल्मसंज्ञक कही जाती हैं, और आम्रादि वृक्ष शाखिसंज्ञक हैं और वड पीपरि आदि पादप हैं और कटहरी आदि सर्व प्रसरसंज्ञक कही जाती हैं और इन्हीं औषधियों के पांच अंग क्रम से बली कहे जाते हैं।।१८-१९।।

औषधियों के पंचांग

पत्रं पुष्पं वल्कलं च फलं मूलं क्रमेण च ।।
अनुक्ते बलमेतेषामुष्णमङ्गे यथोचितम् ।।२०।।

मनुष्यों को औषधियों के पांच अंग समझना योग्य है प्रथम पत्ते, फिर फूल, फिर वक्कल (बांययन्दा), फिर फल और मूल (जड़) होती है और इनमें एक से एक में अधिक बल पाया जाता है, वैद्य को उचित है कि समय पर उष्ण व शीतल जानकर इनको रोग के अनुसार देवे।।२०।।

पंचांगों का उपयोग

तालिसादेस्तु पत्राणि सुमनो धातकीमुखात् ।।
न्यग्रोधादेस्त्वचो ग्राह्याः फलं स्यात्त्रिफलादितः ।।२१।।
पञ्चागुलादेर्मूलानि ह्यनुक्ते परिकल्पयेत् ।।
खदिरासनकादीनां सारोऽपिपरिगृह्यते ।।२२।।

तालीसादि के पत्ते लेना उचित है और धातकी (धाई) आदि के फूल लेना और बड़ इत्यादि की त्वचा व वक्कल लेना योग्य है और त्रिफला आदि के फल लेना उचित है और पंचांगुल (एरंड) आदि की जड़ लेना उचित है और खैरी विजयसार आदि औषधियों का विना कहे स्थान में सार (मेंगी) ग्रहण करना उचित है। इसी प्रकार विना कहे स्थान में वैद्य ने अपनी बुद्धि से सोचविचार करके पूर्वोक्त कहे अंगों में से लेना चाहिये।।२१-२२।।

द्रव्यस्वरूप

रसो गुणस्ततो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च ।।
पञ्चानां यः समाहारस्तद्द्रव्यमिति कीर्त्यते ।।२३।।

जो रस किसी प्रकार का स्वाद हो और गुण व बल व पकापन और शक्ति नाम सामर्थ्य जिसमें ये पांच मिले होवें उसको द्रव्य नाम औषधि कहते हैं, इसी प्रकार औषधि के सब जगह लक्षण जानना।।२३।।

षड्रसवर्णन

स्वाद्वम्लो लवणस्तिक्तः कटुकश्च कषायकः ।।
अमी षट् च रसाःख्याता निर्बलोऽत्र परस्परः ।।२४।।

एक स्वादु, दूसरा खट्टा, तीसरा खारी, चर्परा, पांचवा कड़ुआ और छठा कसैला इसी प्रकार ये छः रस कहे हैं, इनमें से स्वादु जो मीठा उससे खट्टा निर्बल है खट्टे से खारी खारी से चर्परा, चर्परे से कड़ुआ और कड़ुए से कसैला निर्बल जानना चाहिये।।२४।।

मधुर रस के गुण

मधुरः पिच्छिलः शीतो धातुस्तन्यबलप्रदः ।।
चक्षुष्यो वातपित्तादीन् कुर्यात्त्वंक्स्थो मलकृमीन् ।।२५।।

मीठे रस का यह गुण है कि पिच्छिल और शीतल है, धातुओं को अधिक करने वाला है, माता के दुग्ध के समान बल देने वाला है, नेत्रों को हित कारक है और वातपित्त को नाश करने वाला है। यह त्वचा में रखने से मल और कीड़ों को उत्पन्न करता है।।२५।।

अम्लरस के गुण

अम्लोष्णान्तर्बहिः शीतो रुच्यः पित्तकफास्रदः ।।
विबन्धानाहदृष्टिघ्नो दन्ताक्षिभ्रूनिकोचनः ।।२६।।

अम्लरस खट्टा और भीतर गर्म, बाहर ठंडा, रोचक है, पित्त, कफ और रुधिर को ज्यादा करता है। विबन्ध नाम मलमूत्र की रुकावट और अफरे को दूर करता है, दृष्टि को कम करता है और दांत, आंख, भौंए

इनको भी हानि कारक है॥२६॥

लवणरस के गुण

लवणः शोधनो रुच्यः पाचनः कफपित्तहा ॥
प्रायो वातहरः कायशैथिल्यमृदुकारकः ॥२७॥

खारी (लवण) रस शोधन करने वाला है और रोचक है, पाचन करने वाला है और कफपित्त को नाश करता है, वायु को दूर करता है, शरीर को शिथिल और कुछ कोमलता करता है॥२७॥

तिक्तरस के गुण

तिक्तः शीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाञ्जयेत् ॥
रुच्यः स्वयमरोचिष्णुः कण्ठस्तन्यास्थिरोधकः ॥२८॥

तिक्तरस शीतल और तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त, कफ इन सबको दूर करता है और रूखा है, रुचि को बढ़ाता है और आप कम रुचि को देने वाला है, कण्ठ और छाती के अस्थि को रोकता है, ये इसके गुण हैं॥२८॥

कटुरस के गुण

कटू रूक्षस्तन्यमेदः श्लेष्मकण्डूविषापहः ॥
वातपित्तकफाग्नेयः सोऽक्षिपाचनरोचकः ॥२९॥

कडुआ रस रूखा है और छाती को व मेदा, कफ, खाज और मूर्च्छादि को नाश करता है, तेज है, आंख को रुचिप्रद है, तथा पाचक और रोचक है॥२९॥

कषायरस के गुण

कषायः कृमिकण्डूघ्नः कफशैथिल्यनाशनः ॥
वातव्याधिहरः सूक्ष्मो सोऽतियुक्तोऽक्षिरोगकृत् ॥३०॥

कसैला रस कीड़ा और खाज को नाश करता है और कफ की शिथिलता का नाश करता है और वातव्याधि को दूर करता है और अधिक सेवन से नेत्रों में रोग बढ़ता है॥३०॥

द्रव्यस्वरूप

रसो गुणस्ततो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च ।।
पञ्चानां यः समाहारस्तद्द्रव्यमिति कीर्त्यते ।।२३।।

जो रस किसी प्रकार का स्वाद हो और गुण व बल व पकापन और शक्ति नाम सामर्थ्य जिसमें ये पांच मिले होवें उसको द्रव्य नाम औषधि कहते हैं, इसी प्रकार औषधि के सब जगह लक्षण जानना।।२३।।

षड्रसवर्णन

स्वाद्वम्लो लवणस्तिक्तः कटुकश्च कषायकः ।।
अमी षट् च रसाःख्याता निर्बलोऽत्र परस्परः ।।२४।।

एक स्वादु, दूसरा खट्टा, तीसरा खारी, चर्परा, पांचवा कड़ुआ और छठा कसैला इसी प्रकार ये छः रस कहे हैं, इनमें से स्वादु जो मीठा उससे खट्टा निर्बल है खट्टे से खारी खारी से चर्परा, चर्परे से कड़ुआ और कड़ुए से कसैला निर्बल जानना चाहिये।।२४।।

मधुर रस के गुण

मधुरः पिच्छिलः शीतो धातुस्तन्यबलप्रदः ।।
चक्षुष्यो वातपित्तादीन् कुर्यात्त्वंक्स्थो मलकृमीन् ।।२५।।

मीठे रस का यह गुण है कि पिच्छिल और शीतल है, धातुओं को अधिक करने वाला है, माता के दुग्ध के समान बल देने वाला है, नेत्रों को हित कारक है और वातपित्त को नाश करने वाला है। यह त्वचा में रखने से मल और कीड़ों को उत्पन्न करता है।।२५।।

अम्लरस के गुण

अम्लोष्णान्तर्बहिः शीतो रुच्यः पित्तकफास्त्रदः ।।
विबन्धानाहदृष्टिघ्नो दन्ताक्षिभ्रूनिकोचनः ।।२६।।

अम्लरस खट्टा और भीतर गर्म, बाहर ठंडा, रोचक है, पित्त, कफ और रुधिर को ज्यादा करता है। विबन्ध नाम मलमूत्र की रुकावट और अफरे को दूर करता है, दृष्टि को कम करता है और दांत, आंख, भौंए

इनको भी हानि कारक है॥२६॥

लवणरस के गुण

लवणः शोधनो रुच्यः पाचनः कफपित्तहा ॥
प्रायो वातहरः कायशैथिल्यमृदुकारकः ॥२७॥

खारी (लवण) रस शोधन करने वाला है और रोचक है, पाचन करने वाला है और कफपित्त को नाश करता है, वायु को दूर करता है, शरीर को शिथिल और कुछ कोमलता करता है॥२७॥

तिक्तरस के गुण

तिक्तः शीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाञ्जयेत् ॥
रुच्यः स्वयमरोचिष्णुः कण्ठस्तन्यास्थिरोधकः ॥२८॥

तिक्तरस शीतल और तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त, कफ इन सबको दूर करता है और रूखा है, रुचि को बढ़ाता है और आप कम रुचि को देने वाला है, कण्ठ और छाती के अस्थि को रोकता है, ये इसके गुण हैं॥२८॥

कटुरस के गुण

कटू रूक्षस्तन्यमेदः श्लेष्मकण्डूविषापहः ॥
वातपित्तकफाग्नेयः सोऽक्षिपाचनरोचकः ॥२९॥

कड़ुआ रस रूखा है और छाती को व मेदा, कफ, खाज और मूर्च्छादि को नाश करता है, तेज है, आंख को रुचिप्रद है, तथा पाचक और रोचक है॥२९॥

कषायरस के गुण

कषायः कृमिकण्डूघ्नः कफशैथिल्यनाशनः ॥
वातव्याधिहरः सूक्ष्मो सोऽतियुक्तोऽक्षिरोगकृत् ॥३०॥

कसैला रस कीड़ा और खाज को नाश करता है और कफ की शिथिलता का नाश करता है और वातव्याधि को दूर करता है और अधिक सेवन से नेत्रों में रोग बढ़ता है॥३०॥

पञ्चभूतों के गुण

गुरुः स्निग्धस्तीक्ष्णरूक्षो लघुरेते गुणाः स्मृताः ॥
पञ्चभूतेषु तिष्ठन्ति आधिक्यादुपलक्षतः ॥३१॥

गुरु (भारीपन) १, स्निग्ध (चिकनाई) २, तीक्ष्ण (तीखापन) ३, रूक्ष (रूखापन) ४, लघु (हलकापन) ५ ये पांच गुण हैं, सो ही पृथिवी आदि पंचभूतों में रहते हैं, इतने विशेष लक्षण हैं॥३१॥

गुरु और स्निग्धगुणों का प्रभाव

गुरुर्वातहरः पुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाचकः ॥
स्निग्धो वातहरः श्लेष्मा कटिमर्द्धबलापहः ॥३२॥

भारी गुण का स्वभाव है कि यह वादी को दूर करता है, कफ को अधिक करता है, अन्नादि को देर में पचाता है । स्निग्ध गुण वात को दूर करता है, कफ कारक है, कटि और मस्तक के बल को कम करता है॥३२॥

तीक्ष्ण और रूक्षगुणों का प्रभाव

तीक्ष्णं पित्तकरं प्रोक्तं लेखनं कफवातकृत् ॥
रूक्षं समीरणकरं परं कफहरं मतम् ॥३३॥

तीक्ष्ण गुण पित्तकारी कहा गया है, वह मल को साफ करता है और कफवात को अधिक करने वाला होता है। रूखा रस बात को पैदा करता है और कफ को भी दूर करता है॥३३॥

लघुगुण का प्रभाव

लघु पथ्यपरं प्रोक्तं कफघ्नं चिरपाकि च ॥
पृथिव्यादिगुणाधिक्याद् गुणं द्रव्ये प्रकल्पयेत् ॥३४॥

हलका रस अधिक पथ्य कहा है और कफ को भी दूर करता है और देर में पचता है, ऐसी पृथिव्यादि के गुणों का निश्चय करके अनुमान करके देख कर औषधियों को कार्य में लावे॥३४॥

द्विविधवीर्य

उष्णं शीतं द्विधा वीर्यं तत्कालाद्युपलक्षयेत् ॥
स्थलादपि तयोर्योगादयोगान्मध्यमं तु तत् ॥३५॥

गर्माई और सर्दाई ये दो किस्म का बल और काल आदि भी देखे, स्थान के बल से औषधियाँ भी बल संयुक्त हो जाती हैं और मध्यम स्थल के योग से औषधियां भी कम गुणकारक हो जाती हैं॥३५॥

जाङ्गल तथा आनूपद्रव्यों के गुण

सर्वं जाङ्गलसम्भूतं प्रायो भवति पित्तहृत् ॥
अनूपसंभवं सर्वं प्रायः कफकरं स्मृतम् ॥३६॥

जो जांगलदेश में पैदा होती हैं वे सब औषधियां पित्त को ही दूर करती हैं और जो जलदेश में पैदा भई हैं वे सब औषधियां कफकारी होती हैं॥३६॥

दक्षिणदेश और साधारण देशों में उत्पन्न द्रव्यों के गुण

तत्कालोष्णं दक्षिणजं परिणामे तु शीतलम् ॥
धनदाशासमुद्भूतं विपरीततया स्मृतम् ॥३७॥

दक्षिण देशों की औषधियां उखाड़ते ही तत्काल गर्म हो जाती हैं और आखिर में शीतल होती हैं और उत्तर में उत्पन्न हुई औषधियां विपरीत अर्थात् उखाड़ते ही ठंडी होती हैं और अन्त में गर्म होती हैं॥३७॥

मध्यदेश द्रव्य और उनका विपाक

अन्तर्वेदिभवं सर्वं यथोक्तगुणमादिशेत् ॥
विपाकस्तु त्रिधा प्रोक्तः स्वाद्वम्लकटुकात्मकः ॥३८॥

अन्तर्वेदि अर्थात् मध्यदेश में उत्पन्न हुई औषधियों का यथोक्त बल समझना। अब विपाक कहते हैं कि विपाक (स्वभाव, तासीर) तीन तरह का है, एक स्वादु, दूसरा खट्टा और तीसरा कडुआ॥३८॥

पक्व हुए रसों के गुण

क्रमाद्धीनबलो ज्ञेयो मधुरोऽमधुरः कटुः ॥

पचत्यम्लोऽम्लमितरे रसाः कटुकषाकिनः ।।३९।।

रस हमेशा पाक के वश कुछ २ हीनबल भी जानना चाहिये। मधुर पेस्तर मीठा और पाक के वश से कड़ुआ होता है, खट्टा पके पर भी खट्टा ही बना रहता है और शेष चार रस खारी, चर्परा, कड़ुआ और कसैला ये पके पर कड़ुवे हो जाते हैं।।३९।।

पक्व मधुर और पक्वाम्ल रसों के गुण

श्लेष्मकृन्मधुरः पाके वातपित्तहरो मतः ।।
अम्लस्तु कुरुते पित्तं वातश्लेष्मगदापहः ।।४०।।

मीठारस पकने पर पित्त को पैदा करता है और वातपित्त को दूर करता है, खट्टारस पकने पर पित्त को पैदा करता है और वातकफ को दूर करता है।।४०।।

पक्वकटु रस के गुण

कटुः करोति पवनं कफपित्ते च नाशयेत् ।।
विशेष एष रसजो विपाकानां प्रदर्शितः ।।४१।।

कड़ुआ रस पकने पर वात को अधिक करता है और कफ व पित्त को दूर करता है, यहां विशेष करके रसों को दर्शाया है।।४१।।

द्रव्यप्रभाव

रसादिसाम्ये यत्कर्मावशिष्टं तु प्रभावजम् ।।
दन्तीरसेन तुल्याऽपि चित्रकस्य विरेचति ।।४२।।

रस आदिकों की समानता में जो कर्मप्रभाव से शेष रहे सो भी कहते हैं। दंती (वज्रदंती) बराबर भाग भी चित्रक के रस से विरेचक (दस्त को कराने वाली हो जाती है)।।४२।।

मधुना चाथ मृद्वीका घृतं क्षीरेण दीपनम् ।।
प्रभावस्तु यथा धात्री लकुचस्य रसादिभिः ।।४३।।
समाऽपि कुरुते दोषत्रितयस्य विनाशनम् ।।
क्वचित्तु केवलं द्रव्यं कर्म कुर्यात्स्वभावतः ।।४४।।

दाख सहत के साथ होने से और घी दूध के योग से दीपन और तेज कराने वाली होती है। अब प्रभाव कहेंगे कि, जैसे आंवला कटहर आदि के रस से बराबर हो तो भी तीनों दोषों को दूर करने वाला होता है और कोई २ औषधि केवल स्वभाव से ही कर्म करे है।।४३-४४।।

ज्वरं हन्ति शिरोबद्धा सहदेवी जटा यथा ।।
धृता निवारयेल्लोहं पुष्यार्के किल मूलिका ।।४५।।

सहदेई की जड़ शिरपर बांधी हुई ज्वर को दूर करे है, और पुष्यनक्षत्र में धारण की हुई मूली लोह के रोग को दूर करे है।।४५।।

पांच प्रकार का द्रव्यकल्प

द्रव्यकल्पः पञ्चधा स्यात् कल्कश्चूर्णं रसं तथा ।।
तैलमर्कं क्रमाज्ज्ञेयं यथोत्तरगुणं प्रिये ।।४६।।

रावण अपनी स्त्री मंदोदरी से कहता है कि हे प्रिये! द्रव्य (औषध) कल्प पांच प्रकार का होता है, १ कल्क (खल से कुटी हुई), २ चूर्ण, ३ रस (पतली), ४ तेल, ५ अर्क (यंत्र से खींचा हुआ) इनमें क्रम से यथोत्तर एक से एक में ज्यादा, २ गुण है।।४६।।

प्रयोगविधि

पृथग्ध्वंशे सन्निपाते संकरेऽसाध्यरोगिणि ।।
क्रमादेते प्रयोक्तव्याः कालमग्निं निरीक्ष्य च ।।४७।।

पृथक् २ रोगों में, सन्निपात में, संकर (मिले हुये) दोषों में और असाध्य रोगों में ये क्रम से दिये जाते हैं। कालबल और अग्निबल देखकर औषधी देनी चाहिये।।४७।।

द्रव्यकल्पों के गुण

आद्ये गुणे गुणाः सर्वे द्वितीये ह्यल्पतः स्मृताः ।।
तृतीये शीघ्रकारित्वं चतुर्थो न हि दोषकृत् ।।४८।।

इनमें से पहले में सब गुण हैं, दूसरे में कुछ कम गुण है, तीसरे में शीघ्रता की क्रिया रहती है, चौथे में कुछ दोष नहीं है।।४८।।

पञ्चमं दोषरहितं गुणसंघप्रकाशकम् ॥
पञ्चमत्य तु सामर्थ्यं स्वयं पञ्चाननोऽब्रवीत् ॥४९॥

पांचवां दोषरहित और सम्पूर्ण गुणों का प्रकाश करने वाला है। श्रेष्ठ अर्करूप है इसका सामर्थ्य प्रभाव गुण स्वयं महादेवजी ने हमसे कहा है॥४९॥

अर्कस्तुति पार्वत्युवाच

वर्षाणां तु सहस्रेण कथितोऽहर्निशं मया ॥
सम्पूर्णतां न जायेत कल्पोऽर्कस्य दशानन ॥५०॥

पार्वती बोलीं कि हे रावण! हजारों वर्षों तक हमसे रात्रि दिन कहा जाय तो भी अर्ककल्प का वर्णन सम्पूर्णता को प्राप्त नहीं होवे॥५०॥

स्त्रीपुरुषों के लिये वार व्यवस्था

पुंवारे पुरुषर्क्षे च दिवार्को यस्तु निर्मितः ॥
रमणीषु प्रदातव्यो विलोमात्पुंसि योजयेत् ॥५१॥

जो अर्क पुरुष वार (सूर्य, मंगल, बृहस्पति) में पुरुषनक्षत्र और दिन में बनाया गया होय सो स्त्री को देना उचित है और इसके विपरीत जो अर्क स्त्री संज्ञक वार (चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि) स्त्रीनक्षत्र में तैयार होय वह पुरुष को देना चाहिये॥५१॥

यंत्र के वास्ते मृत्तिकाकरण

लोहचूर्णं सस्फटिका च गैरिका भ्राष्टमृत्तिका ॥
मृत्तिकास्थिभवं चूर्णं कांचं कीकसजं रजः ॥५२॥
एतानि समभागानि सर्वतुल्या च मृत्तिका ॥
भ्रंशनीया पञ्चमूत्रैर्गवाश्वमहिषोद्भवैः ॥५३॥
गजाजसंभवाभ्यां च सटितं तद्विशोषयेत् ॥
यावद्गन्धविनाशः स्यात्तावत्सम्मर्दयेच्च ताः ॥५४॥

लोहचूर्ण, फटकरी, गेरू, वालु और भाड़ से भुजी मिट्टी के संग कुटा हुआ

हाड़ों का चूरा, कांच का चूरा, कसीस का चूर्ण ये सब बराबर २ और इन सबके बराबर मिट्टी लेवे और फिर पांच मूत्रों से खूब सान लेवे। उन पांचों के नाम बताते हैं एक तो गाय का, सरा घोड़े का, तीसरा भैंस का, चौथे हाथी का और पांचवें बकरे का इन पांचों के मूत्र में भली भांति सान लेवे और धूप में खूब सुखा लेवे फिर जब तक दुर्गन्ध जाती रहे तभी तक मसले।।५२-५३-५४।।

यंत्रकरणविधि

लघुहस्तः कुलालोऽस्य कुर्याद्यन्त्रं सुनिर्मलम् ।।
यथेष्टां स्थालिकां कुर्यात्त्र्यङ्गुलांप्रान्तसारिकाम् ।।५५।।
पृथुब्रध्नोदराकारां द्व्यङ्गुलां सन्धिवेष्टिताम् ।।
सारिकांते तु परिधिं त्र्यङ्गुलोत्सैधशोभिताम् ।।५६।।

यंत्र के बनाने की भली भांति विधि लिखी जाती है। हलके हाथ वाला कुम्हार उसका शुद्धतापूर्वक यत्र बनावे और औषधि प्रमाण से जितना अर्क निकालना हो उतनी चौड़ी तथा अनुमान तीन अगुल ऊँचे किनारे वाली थाली बनवावे तथा गोल सूर्य के समान मंडल के आकार चौड़ाई की संधि यानी जोड़ है उसमें दो अंगुल चौड़ी खाम लगावे और ढ़कने के पात्र की किनारी तीन अंगुल नीचे को चली जावे इस प्रकार छुटाव लिये होना ठीक है और ऊपर नीचे दोनों थालियों का मुख परस्पर मिला जावे और फिर उस पर दो अंगुल की उत्तम पक्की खाम लगावे।।५५-५६।।

विनिर्मायाथ सार्य्यन्ते यथा शिल्पविनिर्मितम् ।।
छिद्रं कृत्वा नलं दद्याद्‌गजशुंडासमं सुधीः ।।५७।।
सारिकापरिधेरन्तस्तस्य कुर्यात्पिधानकम् ।।
अर्द्धनिंबूफलसमं परिधेस्तस्य चान्ततः ।।५८।।

इसी प्रकार श्रेष्ठ सुधीजन बनाय उस ऊपर के पात्रं के बीच में अच्छे कारीगरों से छिद्र करावे और उसमें हाथी के सूण्ड के बराबर नल

लगावे फिर ऊपर के ढकने के पात्र में ऐसा पिधान नाम ढकने में आ जावे ताके नल उसके भीतर तीन अंगुल घुस जाये।।५७-५८।।

वदांगुलं मस्तकोर्ध्वं कार्यं तोयस्य धारणे ।।
समर्थां तस्य नलिकां कुर्यात्तोयविमोचनीम् ।।५९।।
तस्यैवान्तरतो लेप्या घनाजीर्णास्थिमृत्तिका ।
अथवा श्वेतकाचं च सर्वदोषापनुत्तये ।।६०।।

उस यंत्र का मस्तक चार अंगुल ऊंचा होय सो यह जल के धारण करने के वास्ते अर्थात् दोनों थालियों का पुट लगा तिसपर खास लगी ऊपर को बीच में छेद उसमें नल तीन अंगुल भीतर घुसाकर और उसके चार अंगुल ऊंचा माथा उसके सम्यक् प्रकार से जल को छोड़ने वाला उत्तम नल बनावे फिर उसके मध्य में बहुत जीर्ण हाड़ों से सनी हुई गाढ़ी मृत्तिका का लेप करे और सर्व दोषों के दूर करने के वास्ते श्वेत कांच लेपन करे।।५९-६०।।

भोजनपात्रकरण

अथ वक्ष्ये तु जीर्णास्थिमृत्तिकाकरणं प्रिये ।।
शिलाजतुस्थले कुर्याद्दीर्घं गर्तं मनोहरम् ।।६१।।
निक्षिपेत्तत्र नानास्थिसञ्चयं द्विचतुष्पदाम् ।।
स्वर्जिक्षारं महाक्षारं मृत्क्षारं लवणानि च ।।६२।।
गन्धकोष्णजलं क्षेप्यं नानामूत्राणि तत्र च ।।
एवं कृत्वा मासषट्कं दद्यात्पाषाणमृत्तिकाम् ।।६३।।

रावण बोले कि हे प्रिये! अब हम जीर्णास्थि मृत्तिका बनाने का विधान कहते हैं। जहां से शिलाजीत निकली है वहां पर पर्वत की भूमि में गहिरा और सुन्दर गढ़हा बनावे। फिर तिस गढ़हे में दुपग और चार पगों के हाड़ डाले और सज्जीखार महाखार पांचों नोन और गंधक व गर्म जल छोड़े और अनेक जनों के मूत्र वहां डाले इसी भांति छः मासभर रखे उपरान्त फिर उसमें मिट्टी व पत्थर

डाले॥६१-६२-६३॥

पंकास्थ्यूर्ध्वं तदूर्ध्वं तु कुर्याद्वह्निष्टिकाः शुभाः ॥
त्रिवर्षाज्जायते सर्वमेकीभूतं द्रवत्समम् ॥६४॥
ततो निष्पिष्य तच्चूर्णं कृत्वा पात्राणि निर्मयेत् ॥
प्रशस्तं भोजनं तत्र सूचमेद्दूषणं द्रुतम् ॥६५॥

फिर कींच के ऊपर हाड़ आदिक और तिसके ऊपर से उत्तम २ ईटें लगा देवे फिर अनुमान तीन साल में सर्व सामान एकत्र होकर फिर पतला हो जावेगा। फिर उसको पीसकर खूब महीन चूर्ण कर लेवे और फिर पात्र बना लेवे उपरान्त उसमें भोजन करना सर्वोपर होता है क्योंकि वह सर्व दोष को शीघ्रता से ही बता देता है॥६४-६५॥

भोजनपात्र के लक्षण

महाविषस्य संयोगात्तस्य भङ्गः प्रजायते ॥
सूचीविषादिसंयोगात्तस्य स्फोटा भवंति हि ॥६६॥
तत्र क्षिप्तं क्षुद्रविषं पात्रं कृष्णं करोति च ॥
एवं ज्ञात्वा तत्र दद्यान्न कदाचिद्विषादिकम् ॥६७॥

पहचान यह कि उसमें किसी महाविष का संयोग हो जावे तो उस पात्र के तुर्त टुकड़े हो जावेंगे और सूची विष आदि का संयोग होय तो छिद्र हो जाते हैं। यदि उसमें कोई छोटा विष पड़ जावेगा तो वह पात्र का काला रंग हो जावेगा, इस प्रकार जानना और इससे उसमें विषादि का संयोग नहीं होने पावे॥६६-६७॥

विषअर्क के लिये पात्र

विषादीनामर्कसिद्धौ कुर्यात्पात्रं तु लोहजम् ॥
स्वर्णजं रौप्यकं वापि कुर्यात्पात्रमकल्मषम् ॥६८॥
अथवा ताम्रजं वापि ह्यन्तर्वङ्गविलेपनम् ॥
पात्रं तु बुद्धया कुर्वीत कषायो न भवेद्रसः ॥६९॥

विषादि के अर्क सिद्धि में लोहे आदि का पात्र बनावे या सोने चांदी का

खालिस पात्र बनावे, या तांबे का पात्र बनाके उसके भीतर वंग डाले या कलई करा लेवे। वह पात्र अपनी बुद्धि से बनावे जिससे रस व अर्क उसमें कसैला न होवे॥६८-६९॥

अर्कस्तुति

द्रव्यान्तरस्य संयोगादर्कं तैलं च गुर्विणः ॥
सर्वेषां निःसरत्येवं पाषाणस्य तु किं पुनः ॥७०॥
अनग्न्यर्कस्तथा तैलं गन्धतैलादिसम्भवम् ॥
वेधकं सर्वधातूनां देहस्यापि च पुष्टिदम् ॥७१॥

सर्वोत्तम औषध उसमें संयोग से अर्क व तेल सबका निकलता है चाहे बड़ा पत्थर भी हो फिर और क्या रहा? वगैर अग्नि का अर्क व तेल और गन्धक का तेल ये सब धातुओं के वेधक हैं और शरीर को पुष्ट करते हैं॥७०-७१॥

यस्तैलकरणे दक्षश्चार्क निःसारणे पटुः ॥
तस्य सेवा भवेन्नित्यं रोगैश्च न स बाध्यते ॥७२॥

जो मनुष्य तैल बनाने में निपुण व चतुर होय और अर्क निकालने में सावधान होय तो वह नित्य ही सेवा करने योग्य है और उसे कोई रोग प्राप्त नहीं होता है॥७२॥

कुत्सितार्कस्तु यामे स्याद्द्वियामाभ्यां तु मध्यमः ॥
त्रिभिर्यामैर्भवेच्छ्रेष्ठ अर्कोऽमितगुणप्रदः ॥७३॥

जो अर्क १ प्रहर में निकल के तैयार होता है वह कुछ न्यून होता है उसमें पूरा २ गुण नहीं होता है और जो दो प्रहर में निकलकर तैयार होता है वह मध्यम है और जो तीन प्रहर में तैयार होता है सो उत्तम होता है॥७३॥

अर्कों के लक्षण

द्रव्यादधिकसौगन्ध्यं यस्मिन्नर्के प्रदृश्यते ॥
जीर्णास्थिपात्रसंक्षिप्तो द्रव्यकर्णः प्रदृश्यते ॥७४॥

शंखकुन्देन्दुधवलोऽन्यथापात्रान्तरस्थितः ॥
जिह्वोपरिगतः स्वादं दद्याद्द्रव्यभवं तु यः ॥७५॥

जिस औषध से अर्क निकाले उससे उसके अर्क में अधिक सुगन्धि निकले और जीर्णास्थि प्रकार से बनाये पात्र में धर देवे तो रङ्ग भी वही होवे तो वह अर्क उत्तम है और शंख व कुन्द और चन्द्रमा के समान सफेद वर्ण निर्मल हो और अनेक तरह के पात्र में स्थित हुआ, जीभपर रखने से जिस द्रव्य का अर्क है उसी द्रव्य का स्वाद देवे तो वह अर्क उत्तम श्रेष्ठ होगा।।७४-७५।।

अर्कसेवन और निषेध

तमेवार्कं विजानीयादन्यस्तु स्याद्रसादिवत् ॥
कृत्वा सुगन्धिमेतस्य ह्यर्कपुष्पादिभिः सुधीः ॥७६॥
गुणाय पश्चात्सेवेत त्वन्यथाऽपगुणो भवेत् ॥
दुर्गन्धं भक्षयेदर्कं यदि मोहात्कथञ्चन ॥७७॥

वाकी अर्क जलादि समान होते हैं। सुधी मनुष्य को उचित है कि, जिस अर्क में दुर्गन्ध होवे तो उसको अर्कादि से व फूलों से सुगन्धि कर लेवे और काम में लावे, उपरांत फिर युक्ति के साथ उसको सेवे (पीवे) और जो पुरुष इसके अन्यथा दुर्गन्ध युक्त द्रव्य को मोह व लोभ से पीवे तो वह अर्क विकार करने वाला हो जाता है।।७६-७७।।

तदाऽस्य जायते ग्लानिर्वान्तिमालस्यकं तथा ॥
तद्दोषस्य विनाशाय कुर्याद्वान्तिमतन्द्रितः ॥७८॥

इसके सेवन से ग्लानि हो जाती है और कै होने लगती है और आलस्य आने लगता है इस दोष को दूर करने अर्थ चैतन्य होके कै करे।।७८।।

अर्क पीने की विधि

दीपोद्भवप्रसूनानां पिबेदथ पलं जलम् ॥
अर्कदुर्गन्धिविभ्रष्टो मालत्या दुस्तृषार्दितः ॥७९॥

अर्क की दुर्गंधि दूर करने के अर्थ मालती नाम चमेली के खिले हुए फूलों का जल पिलाने से शान्ति होती है॥७९॥

अग्नि के छः नाम तथा धूमाग्नि के लक्षण

अर्कनिष्कासनार्थाय क्रमाद्देयाः षडग्नयः ॥
धूमाग्निश्चैव मन्दाग्निर्दीपाग्निर्मध्यमस्तथा ॥८०॥
खराग्निश्च भटाग्निश्च तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥
विज्वलो यो धूमशिखो धूमाग्निः स उदाहृतः ॥८१॥

अर्क निकासने के निमित्त क्रम से छः अग्नि देना चाहिये प्रथम धूमाग्नि १, फिर मंदाग्नि २, दीपाग्नि ३, मध्यमाग्नि ४, खराग्नि ५ और भटाग्नि ६। अब आगे इनके लक्षण कहते हैं। बिना ज्योति के धुवां और बहुत ऊंचा चोटी तक उठे तो धूमाग्नि कहाती है॥८०-८१॥

दीपाग्नि तथा मंदाग्नि के लक्षण

द्वाभ्यां तस्य चतुर्थाभ्यां योऽग्निर्दीपाग्निरुच्यते ॥
चतुरंशेन तेनैव मन्दाग्निः स प्रकीर्तितः ॥८२॥

उस धूमाग्नि को जो दूनी और फिर उसको चौगुनी करे उसी को दीपाग्नि कहिये, फिर उस दीपक समान अग्नि को चौगुनी जला देने से ही वह मन्दाग्नि कहाती है॥८२॥

मध्यमाग्नि तथा खराग्नि के लक्षण

आर्द्रीकृताभ्यां द्वाभ्यां तु मध्यमाग्निरुदाहृतः ॥
अर्धस्तैः पञ्चभिः प्रोक्तः खराग्निः सर्वकर्मसु ॥८३॥

'आर्दीकृत कहिये मंदाग्नि उससे दूनी अग्नि को मध्यमाग्नि कहते हैं और पांचो अग्नि अर्थात् पूरी अग्नि से आधी जलाने से सब अर्क कर्मों में खराग्नि कहाती है॥८३॥

भटाग्नि का लक्षण

मस्तकावधि पात्रस्य चतुर्दिक्षु क्रमेण च ॥
प्रसरंति यदा ज्वालाः स भटाग्निरुदीरितः ॥८४॥

पात्र के मस्तक अर्थात् ऊपर तक क्रम से चारों दिशाओं में खूब ज्वाला फैलाती है, उस अग्नि को भटाग्नि कहते हैं।।८४।।

अग्निमान्

सार्द्धयामं च यामं च यामार्द्धं च मुहूर्तकम् ।।
मुहूर्तमात्रमित्येवमर्कार्थं वह्नयः स्मृताः ।।८५।।

इसके उपरान्त अर्क के निमित्त यथोक्त अग्नि लगाने का क्रम कहते हैं, १ पहले डेढ़ प्रहर, २ दो प्रहर, ३ आधे प्रहर, ४ ढ़ाई घड़ी और ५ मुहूर्त मात्र (२ घड़ी) ही यह क्रम है।।८५।।

काष्ठमान

ससारमतिशुष्कं यं मुष्टिमध्ये समेष्यति ।।
तत्काष्ठं ग्राह्यमित्याहुः खदिरादिसमुद्भवम् ।।८६।।

अब लकड़ी के गुण कहते हैं जो कि सार सहित अर्थात् कठीली और भारी व सूखी लकड़ी होवे, और हलका वीधा न हो, खदिरादि (खैर आदि) की उत्पन्न हो तो वह काष्ठ वैद्यों ने अर्कों में ग्रहण करने योग्य कहा है।।८६।।

अर्कपात्रग्रहण

जीर्णास्थिपात्रे गृह्णीयादर्कं वा काचसम्भवे ।।
पाषाणकेऽथवा पात्रे अभावे मृन्मये न्यसेत् ।।८७।।

पूर्वोक्त जीर्णास्थि पात्र में या कांच के बर्तन में या पत्थर के बर्तन में अर्क को ग्रहण करना अगर इन बर्तनों का अभाव होने पर मिट्टी के पात्र में धरे।।८७।।

अर्क पीने की विधि

पिबेदर्कमनिर्वार्य पीत्वा ताम्बूलभक्षणम् ।।
कुर्यादमुक्तताम्बूलो लवंगं भक्षयेत्तु च ।।८८।।

अर्क को प्रेम से पी लेवे और ताम्बूल को तुर्त खा लेवे और यदि पान नहीं मिले तो लौंग खा लेवे।।८८।।

औषधी और उसके अर्क का साम्य

ये ये द्रव्य गुणाः प्रोक्ताः सर्वे तेऽर्कं समाश्रिताः ।।
सेवेतार्कं श्रिये तस्माद्राजा परमधार्मिकः ।।८९।।

जो गुण द्रव्य के कहे हैं अर्थात् औषधियों में जितने गुण हैं वे उन औषधियों के अर्क के संयोग में रहते हैं। इसी कारण धार्मिक राजा अपने कल्याण के वास्ते अर्क पीवे।।८९।।

अर्क और तेल के नियम

मर्दनादिषु सर्वत्र द्रव्यं तैलं प्रयोजयेत् ।।
अर्क एव प्रयोक्तव्यो भक्षणे न तु भोजने ।।९०।।

मर्दन करने में सर्वत्र औषधी का तेल कार्य में आता है, और भोजन खाने में अर्क ही योग्य है, भोजन में तेल नहीं लेना चाहिये।।९०।।

अर्क किसको देना चाहिये

स्वस्थेन रोगिणा वाऽपि याचितोऽर्कस्य येन वा ।।
ज्ञात्वा तल्लक्षणं दद्यादन्यथा ब्रह्महा भवेत् ।।९१।।

मनुष्यों को विचारना योग्य है कि स्वस्थ (आरोग्य मनुष्य) को वा रोग जिसको होवे उसके बल को देखकर तथा देश काल व बल जानकर अर्क देवे अन्यथा नहीं देवे, देवे तो ब्रह्महत्यारा होवे है।।९१।।

दूतमुखाक्षरप्रश्न

वर्णस्वराणां प्रमितिं दूतोक्तानां हि कारयेत् ।।
एकयुक्तां द्विगुणितो त्रिभिर्भागं समाहरेत् ।।९२।।
एकशेषे गुणः शीघ्रं द्विशेषे वर्द्धते गदः ।।
त्रिशेषे मरणं वाच्यं स्वार्थं याचयतेऽथवा ।।९३।।
अर्कं तदेतद्विज्ञाय दद्याद्योग्यं न चान्यथा ।।
गदिना तु यदा दूतः प्रेषितस्तद्विचारयेत् ।।९४।।

मनुष्य को उचित है कि दूत के कहे अक्षरों की संख्या को गिने और जोड़ देवे और दूना करके तीन का भाग देवे फिर एक शेष रहे तो बहुत ही

जल्दी गुण हो, दो शेष रहें तो रोग जानना, तीन शेष रहें तो अवश्य मरण जानना या स्वार्थ को याचे यानी प्रश्न करे तो भी विचार करना योग्य है। यह सब बातें विचार करके अर्क देवे तो योग्य कार्य होते हैं। अन्यथा नहीं देना, और यदि रोगी ने दूत भेजा होय तो यह बातें विचारे सो आगे लिखेंगे।।९२-९३-९४।।

रोगोद्धारे एकादशकोष्ठकम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	कोष्ठ संख्या
						ऐ	ओ	औ	अं	अः	स्वर
क	च	ट	त	प	य	श	क्ष	त्र	ज्ञ	छ	वर्ण
ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष	०	०	०	०	वर्ण
ग	ज	ड	द	ब	ल	स	०	०	०	०	वर्ण
घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह	०	०			वर्ण
ङ	ञ	ण	न	म	०	०	०	०	०	०	वर्ण
	३	३	४	८	६	४	३	१	०	१	अंक ११

रोगोद्धारचक्र

नपुंसकान्त्यैरूनास्तु स्वरा एकादश प्रिये ।।
वर्णास्तत्संख्यका लेख्या कचटाद्यास्तु तत्स्थले ।।९५।।
एकादशसु कोष्ठेषुक्रमादंकांश्च विन्यसेत् ।।
रसास्त्रयो द्वयं वेदाः पर्वता ऋतवः कृताः ।।
वह्नयः पृथिवी शून्यं चन्द्रमाश्च ह्यतिक्रमात् ।।९६।।

मंदोदरी से रावण कहते हैं कि हे प्रिये! नपुंसक अक्षर को बनाने वाले जो स्वर हैं सो उसमें अंत्यवालों को छोड़ के ग्यारह स्वर हैं सो इन ग्यारहों स्वरों को ग्यारह कोठों में लिखे फिर ग्यारह ही अक्षर उन

कोठों में क, च, ट, इत्यादि लिखे। फिर ग्यारह कोठों में क्रम से सब अंक रखे, और रस ६, त्रय ३, द्वय २, वेद ४, पर्वत ८, ऋतु ६, कृता ४, वह्नि ३, पृथिवी १, शून्य० और चन्द्रमा १ इस प्रकार क्रम से चक्र में देखना योग्य है।।९५-९६।।

रोगोद्धारचक्रफल

विहाय जीवदूतस्य नामाक्षरसुयोजनम् ।।९७।।
एकमेवाऽऽतुरे युक्त्वा द्वयोरष्टावशेषितम् ।।
कृत्वाङ्कयोगं गदिनोऽधिकशेषे शुभं भवेत् ।।९८।।

अब ध्यान से अंत में जो २ कहते हैं उनको छोड़ फिर दूत के नाम के अक्षर स्वर के समेत जोड़े। इसी प्रकार रोगी के नामाक्षरों को मिलावे और फिर दोनों को आठ का भाग देवे उपरान्त फिर दोनों में से शेषांकों का भी मिलान करे फिर देखे कि कौनसा अधिक होता है अगर रोगी के शेषांक पर अंक होवे तो शुभ जानना।।९७-९८।।

समशेषे दीर्घरोगो न्यूनशेषे तदा मृतिः ।।
एतद्विचार्य दातव्यमन्यदप्यौषधं बुधैः ।।९९।।
चक्रद्वयं तु यो ज्ञात्वा दद्यादर्कं विमोहितः ।।
जायते यद्यपयशो तत्र चापि मृते सति ।।१००।।

इति लंकेशरावणकृतार्कप्रकाशे प्रथमं शतकं समाप्तम् ।।१।।

जो दोनों के सम यानी बराबर शेष रहें तो रोग बढ़े और जो कमती शेष रहे तो रोगी का मरण जानना, यह विचार के पंडित ने अन्य औषध देना उचित है। यह पूर्वोक्त दोनों चक्र जानकर जो वैद्य निर्लोभ होकर अर्क देवे सो वह मरे के समान भी हो जावे तो भी रोग से निवृत्त होकर सुखी होता है।।९९-१००।।

इति पंडितमुकुन्दरामकृतार्कसंग्रहहिन्दीटीकायां प्रथमं शतकं समाप्तम् ।।१।।

द्वितीयं शतकम्

रावण उवाच

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि ह्यर्कनिः सारणं प्रिये ।।
पञ्चप्रकारद्रव्यस्य कुर्यान्निष्कासनं बुधः ।।१।।

रावण अपनी स्त्री मंदोदरी से कहते हैं कि हे प्रिये! अब मैं तेरे सामने द्रव्य में से अर्क निकालने की युक्ति कहता हूं, पांच प्रकार की औषधि का अर्क निकालना चाहिये।।१।।

पंचविधद्रव्यवर्णन

अत्यन्तकठिनं चाद्यं कठिनं च द्वितीयकम् ।।
आर्द्रं तृतीयमुद्दिष्टं चतुर्थं पल्वलं भवेत् ।।
पञ्चमं तु द्रवद्रव्यं तेषां विधिरथोच्यते ।।२।।

प्रथम अत्यंत कठिन, दूसरा साधारण कठिन, तीसरा आर्द्र यानी गीला, चौथे पल्वल कहिये कुछ ढीला हो, पांचवें पतला चुवने वाला द्रव्य है, इसके उपरान्त इन द्रव्यों की विधि कही जाती है।।२।।

द्रव्य के अर्क की विधि

बुसवच्चूर्णयेद्‌द्रव्यमत्यन्तकठिनं तु वै ।।
द्विगुणे निक्षिपेत्तोये छायायां स्थापयेत्तु तत् ।।३।।
यावच्छुष्कं भवेत्तोयं द्रव्यं स्याच्छिथिलं तथा ।।
ततः पुनः क्षिपेत्तोयं पूर्वद्रव्यसमं भिषक् ।।४।।
कृत्वाऽष्टप्रहरैस्तप्तं सूर्यचन्द्रकरैरलम् ।।
सम्पूज्य गणपं सूर्यं भैरवं कुलदेवताम् ।।
निक्षिपेदर्कयंत्रे तच्छित्वाऽस्यार्कं समाहरेत् ।।५।।

मनुष्य को उचित है कि बहुत कठिन द्रव्य का भूसा के समान चूरा करे।

उपरान्त उसमें दुगुणा पानी डाले फिर उसी पानी में द्रव्य को छोड़े फिर छाया में रख देना चाहिये और जब पानी सूख जावे और जल सूखने से द्रव्य गाढ़ा हो जावेगा तब वैद्य को उचित है कि उसमें पूर्व द्रव्य समान यानी पेस्तर जिस कदर पानी छोड़ा था उतना ही पानी फिर छोड़े और उसको दिन में सूर्य की किरणों से खूब ताप देवे और रात को चांदनी में रखे, इसी तरह आठ प्रहर तक धूप और ठंड भी देवे उपरान्त गणेश सूर्य भैरव कुलदेवता का पूजन करे फिर औषधी को अर्क यन्त्र में डाले और पूर्वोक्त प्रकार से अर्क खींचे।।३-४-५।।

अर्कयोग्यद्रव्य

वर्षाधिकं तु यद्द्रव्यमत्यन्तकठिनं च यत् ।।
चन्दनादीनि सर्वाणि ह्यत्यन्तकठिनानि हि ।।६।।
कीटैर्भुक्तं घुणैर्भुक्तं यच्च गंधविवर्जितम् ।।
रहितं च रसेनापि नार्ककर्मणि योजयेत् ।।७।।
यथार्के संस्थितं द्रव्यं कुर्याद्धोक्तुस्तथा वपुः ।।
अर्के तरुणभैषज्यं तस्मात्संयोजयेत्प्रिये ।।८।।

परंतु जो द्रव्य वर्षभर से ज्यादा पुराना और बहुत कठिन द्रव्य होय जैसे चंदनादि यह सब अधिक कठिन द्रव्य है और जो द्रव्य कीड़ों से खाया गया होय और घुनों का भी खाया हुआ होय और छिद्र भी होय और जो गन्ध भी नहीं होय और रस से भी रहित होय और सूखा होवे तो उस औषध को अर्क वगैरह के काम में नहीं लाना चाहिये। जैसा द्रव्य अर्क में पड़ेगा तैसे ही पीनेवाले का शरीर उत्तम होवेगा इससे हे प्रिये! नवीन दवाई को अर्क कार्य में लाना उचित है।।६-७-८।।

कठिन द्रव्यों के अर्क की विधि

यबान्यजाजीत्रिकटुभूनिम्बादिकमौषधम् ।।९।।
ज्ञेयं तत्कठिनं द्रव्यं तदर्कस्य विधिं शृणु ।।
द्विगुणं निक्षिपेत्तोयं द्रव्ये हि कठिने प्रिये ।।१०।।

अजवायन, काला जीरा, त्रिकटु (सोंठ, मिर्च, पीपल), भूनिम्ब, चिरायता इत्यादि जो द्रव्य हैं सो इनको कठिन द्रव्य जानना। हे प्रिये! कठिन औषधी का अर्क निकालना होय तो उसमें दूना पानी डाल देवे।।९-१०।।

अष्टप्रहरकं तं च कुर्यात्पर्यायमेककम् ।।
रक्षेद्द्रव्यं द्विगुणितं दृष्ट्वा देशं तु कालकम् ।।
पश्चाद्दत्त्वाऽर्कयंत्रे तदर्कं निष्कासयेच्छनैः ।।११।।

उपरान्त फिर पूर्वोक्त प्रमार से आठ ही प्रहर तक सूर्य और चन्द्रमा की धूप व ठंड देना, परंतु देश काल को देखकर द्विगुणित कहिये दो दिन और दो रात अर्थात् सोलह प्रहर तक सूर्य चन्द्रमा की धूप व ठड़ में धरना योग्य है और फिर अर्कयंत्र में उसको देकर उसके अर्क को धीरे से निकाले।।११।।

आर्द्र और नीरस द्रव्यों के भेद

आर्द्रं द्रव्यं द्विधा प्रोक्तं सरसं नीरसं तथा ।।
सदुग्धं गुप्तरसकं द्विधा नीरसमुच्यते ।।१२।।
वास्तुकं सार्षपं शाकं निर्गुण्डचैरण्डमार्कवम् ।।
धत्तूराद्यमिदं सर्वमार्द्रं सरसमुच्यते ।।१३।।

आर्द्र कहिये गीला द्रव्य जो है सो दो प्रकार का होता है रस सहित और नीरस दो प्रकार का एक तो दूध सहित और दूसरा गुप्तरस कहिये रसहीन, वथुआ, सरसों का शाक, संभालु, अरंड, भांगरा, धतूरा इत्यादि यह सब द्रव्य गीले रसवाले कहे गये हैं।।१२-१३।।

इनका अर्क निकालने की विधि

एषां नालांश्चूर्णयित्वा विंशांशं निक्षिपेज्जलम् ।।
मुहूर्तमुष्णे संस्थाप्य ग्राह्योऽर्को विबुधोत्तमैः ।।१४।।

इनकी नालों का चूर्ण कर लेवे और फिर इनसे बीसवां हिस्सा पानी लेवे और मुहूर्त कहिये दो घड़ी धूप में खूब सुखा लेवे फिर उपरान्त उत्तम

वैद्य यंत्र से इनका अर्क निकाल लेवे॥१४॥

पत्रार्क निकालने की विधि

पत्राणि च शतांशेन तुल्यतोयेन सेचयेत् ॥
दद्याद्घटीमकक्करे ततोऽर्कं कलयेच्छनैः ॥१५॥

जो पत्तों का अर्क निकालना होय तो उनसे सौ हिस्से पानी सींच लेवे उपरान्त फिर एक घड़ी बराबर सूर्य की धूप देवे फिर धीरे से अर्क को खींच लेवे॥१५॥

नीरसार्द्र द्रव्यों की अर्कविधि

वटाश्वत्थकरीराद्यमार्द्रद्रव्यं तु नीरसम् ॥१६॥
विशांशं निक्षिपेत्तोयं यामं घर्मे च धारयेत् ॥
ततो निष्कासयेदर्कं क्रमवृद्धयग्निनोक्तवत् ॥१७॥

वड़, पीपल और बांस यह जो हैं सो विना रस के आर्द्र यानी गीले द्रव्य हैं इसमें बीसवां हिस्सा पानी डाले और एक प्रहर तक धूप में रख देवे, उपरान्त फिर क्रम से पूर्वोक्त बँधी हुई अग्नि से अर्क को निकासे॥१६-१७॥

सदुग्ध द्रव्यों के अर्क

सदुग्धं तु द्विधा प्रोक्तं मृदुतीक्ष्णमिति क्रमात् ॥
शातलावज्रसेहुंडशौरिण्याद्यास्तु तीक्ष्णकाः ॥१८॥
खंडानि तेषां कृत्वाऽथ निक्षिपेदुष्णके जले ॥
दिनत्रये तु निष्कास्य तोयं दद्याच्च कुट्टयेत् ॥१९॥
यावन्न दृश्यते दुग्धं दद्यात्तोयं दशांशकम् ॥
शनैर्निष्कासयेदर्कं स तु तीक्ष्णार्कसंज्ञकः ॥२०॥

दूध सहित द्रव्य दो भांति का कहा है मृदु अर्थात् कोमल और तीक्ष्ण। शातला (शाथर), वज्र (कोकिलवृक्ष), सेहुंड़ (थूहर), शौरिणी (उत्तर दिशा की प्रसिद्ध औषधी) आदि तीक्ष्ण द्रव्य हैं। तीक्ष्ण द्रव्य के खंड नाम टुकड़ा करके फिर गरम पानी में डाल देवे उपरान्त तीन दिनों

से निकाल के फिर पानी मिलाय खूब कूटे जब तक दुग्ध देखने से बन्द हो, उपरान्त फिर उसमें दशवां हिस्सा पानी मिलाय देवे और अर्क को सावधानता से धीरे २ निकाले, यह अर्क तीक्ष्ण होता है।।१८-१९-२०।।

मृदुदुग्ध औषधियों का अर्क

दुग्धिकार्कक्षीरिण्याद्या मृदुदुग्धाः प्रकीर्तिताः ।।
जले चतुर्गुणे दद्यात्तान् घर्मे विनिवेशयेत् ।।२१।।
यावज्जलस्योष्णता स्यात्ततो यंत्रे विनिक्षिपेत् ।।
शनैर्निष्कासयेदर्कं ततोऽर्को मृदुसंज्ञकः ।।२२।।

दुद्धी और आक (मदार) खिरणी इत्यादि ये कोमल दुग्ध वाले कहाते हैं, इनको चौगुने पानी में मिलाय संयुक्त कर फिर धूप में धरे जब लग गर्म होवे, उपरान्त फिर यंत्र में छोड़ देवे और फिर धीरे २ अर्क निकास लेवे, इस अर्क को मृदु (कोमल) जानना चाहिये।।२१-२२।।

रसवाले आम्र आदि फलों के अर्क

खण्डीकृत्वैव चाम्राणां फलानां मृदुपाकिनाम् ।।
सरसानां च गृह्णीयादक तोयेन वर्जितः ।।२३।।

नरम पके हुये सरस आम्र आदि फलों के खण्ड (टुकड़ा) करके जल के बिना अर्क निकाल लेवे।।२३।।

काष्ठार्क

काष्ठौदुम्बरिकादीनामाम्राणां दारुभागिनाम् ।।
कृत्वा स्वल्पानि खण्डानि अशीत्यंशं प्रदापयेत् ।।२४।।
पृथक् पृथक् चतुर्वारं स्वर्जिक्षारं च सैन्धवम् ।।
दत्त्वा विमर्दयेत्सर्वं चत्वारिंशांशकं जलम् ।।२५।।
क्षिप्त्वा तत्कलशे घर्मे यामार्द्धेनोष्णता भवेत् ।।
ततो यन्त्रे हि तद्दत्वा गृह्णीयादर्कमुत्तमम् ।।२६।।

गूलर आदिकों का गीला काष्ठ तथा आंव, देवदारु आदि काष्ठ का अर्क

निकालना होवे तो उनके छोटे टुकड़े करके अस्सीवां हिस्सा जल डाल देवे। फिर अलाहिदा अलाहिदा चार बार सज्जीखार और सेंधानोन छोड़ के सबको अच्छे प्रकार मसल लेवे और चालीसवां हिस्सा जल मिलाकर उसको कलश (घड़ा) में डाल के अर्ध प्रहर (४ घड़ी) तक घाम में रख देवे, जब गर्म हो जाय तब उसको यंत्र में डाल के विधि पूर्वक श्रेष्ठ अर्क को निकाल लेवे।।२४-२५-२६।।

अत्यंत पक्व फलों का और फूलों का अर्क

अतिपक्वफलानां तु वितोयं चार्कमाहरेत् ।
पुष्पार्कार्थं षोडशांशजलं पुष्पेषु चार्पयेत् ।।२७।।

जो बहुत पके रसीले फल हों उनका बिना जल के अर्क निकाल ले और फूलों का अर्क निकालने के निमित्त फूलों से सोलहवां हिस्सा जल देवे और अर्क खींच लेवे।।२७।।

कायफर आदि का अर्क

अथवा कटुफलादीनि चिल्हिकादीनि यानि च ।।
प्रक्षेप्यान्युदके तानि बहुधा दोषशांतये ।।
ततश्चत्त्वारिंशदंशं जलं दत्त्वा समाहरेत् ।।२८।।

या कायफर इत्यादि और चीड़ आदि काष्ठ का अर्क निकालना चाहे तो उनका दोष दुर्गन्धि दूर होने के अर्थ ज्यादा बारा पानी में छोड़कर सुखावे उपरान्त चालीसवां हिस्सा पानी मिलाकर अर्क खींच लेना चाहिये।।२८।।

द्रवद्रव्यों का अर्क

तदर्कमथ च द्रावद्रव्यार्कोपाय उच्यते ।।२९।।
द्रवद्रव्यक्षेपणे च प्रोच्यते बाधकल्पना ।।
पिधानानि विचित्राणि तेषामंतो न विद्यते ।।३०।।

अब द्रव यानी गीले द्रव्यों के अर्क निकालने का उपाय कहते हैं। द्रव (गीले) द्रव्य के छोड़ने में जो २ उपद्रव कहे हैं सो पिधानादि अनेक

नाम हैं उनका कोई अन्त नहीं, उन योगों का बहुत अधिक विस्तार है।।२९-३०।।

आच्छादन की विधि

शतपत्रप्रसूनैर्वा जात्युत्थैर्मालतीभवैः ।।
पारिजातैः केतकिजैर्वा पिधानं समाचरेत् ।।३१।।

पेस्तर पिधान कहते हैं। कमल के पुष्पों से या जाती चमेली के पुष्पों से अथवा नींब के फूलों से यद्वा केतकी के पुष्पों से पिधान (आच्छादन) करे।।३१।।

स्निग्ध पदार्थों की आच्छादनविधि

दुग्धे दध्न्यथवा तक्रे क्षौद्रे तैले च सर्पिषि ।।
सूत्रादो देवतोये च चम्वेल्यादि पिधानकम् ।।३२।।

दूध, दही या छाछ में या सहत, तेल या घी में या गोमूत्र में और सुन्दर देने योग्य पानी में चंवेली कें फूलों का जो पिधान है सो देना योग्य है।।३२।।

द्रवद्रव्यों को अर्कों के लिये पात्र?

कान्तयायससत्वस्य कृतं पात्रमनुत्तमम् ।।
निष्कासयेदेवमर्कं द्रवद्रव्यस्य नान्यथा ।।३३।।

कान्तिसार, लोहसत, पाषाणसत से मिलाय उत्तम पात्र बनावे, एवं द्रव (गीले) द्रव्य का अर्क निकाले इससे अन्यथा नहीं निकालना।।३३।।

द्रवद्रव्यों के स्तंभक द्रव्य

अथ च स्तम्भकं द्रव्यं दध्नो हि नवनीतकम् ।।
दृढबिल्वो जलस्योक्तो मधूच्छिष्टं तु सर्पिषः ।।३४।।
गोकण्टकस्तु दुग्धस्य तथा मद्यस्य कीचकम् ।।
तैलस्य तस्य पिण्याकं सर्वं घृतसमन्वितम् ।।३५।।

अब गीले द्रव्यों के स्तम्भक अर्थात् रोकने वाले द्रव्य कहते हैं। दही का स्तम्भक (रोकने वाला) माखन है, जल का स्तम्भक दृढ़ बिल्व

(बेलगिरी) है। घी का स्तम्भक शहत है, दुग्ध का स्तम्भक गोकंटक यानी गोखरू है, मद्य (मदिरा) का स्तम्भक कीचक (बांस) का सार है। यह स्तम्भनौषधि पिधान योग के लिये कही गई हैं और योग्य वस्तु बुद्धि से जान लेवे और तेल का स्तंभक पिण्याक खल जानिये। ये सारी वस्तुयें घी के साथ यंत्र में रखे।।३४-३५।।

द्रवद्रव्यों के अर्क की विधि

यंत्रे दत्वा द्रवद्रव्यं यथा स्थालीनिवेशनम् ।।
तथा स्थलं स्थापयित्वा द्रव्यैर्यंत्रं प्रपूरयेत् ।।३६।।
आच्छाद्यं सारिकैः पूर्णं स्थालीं कुर्यादधोमुखीम् ।।
तथा चाकर्षितः सर्वो द्रवः फेनं परित्यजेत् ।।३७।।

गीले द्रव्य को यथा योग्य थाली में रखकर यंत्र में धरे जिसमें पतला हो के बहे नहीं ऐसी थाली में रखे और सब चीजों से यंत्र को पूर्ण कर देवे। उसके सारिका (किनारे) से पूर्ण आच्छादित कर दे याने जोड़ दे और अच्छे प्रकार बन्द कर देवे और औंधी थाली से बन्द कर खाम लगा देवे इसी प्रकार ऐसे ही सब द्रव द्रव्य खींचे, जब कि फेन (झाग) न्यारा छोड़े तो सर्वोपरि श्रेष्ठ अर्क जानना चाहिये।।३६-३७।।

अर्कों का दुर्गंधनाशन

दुर्गन्धिर्यो भवेदर्कस्तं कुर्याच्चारुगन्धकम् ।।
सर्वेषामेव मांसानां दुर्गन्धानां च सर्वशः ।।३८।।
घृताभ्यक्ता हिंगुजीरमेथिका राजिकाकृताः ।।
नवीनायां हंडिकायां दद्याद्धूपं पुनः पुनः ।।३९।।
तत्र दद्यात्तदर्कं तु यथा दुर्गन्धता व्रजेत् ।।
तथा पुनः पुनः कार्यं जायते गन्धवारणम् ।।
आयाति रोचको गन्धो स भवेद्वह्निदीपनः ।।४०।।

दुर्गंधि वाले मांसादिक द्रव्य का जो अर्क दुर्गंध युक्त होय तो उसको सुगंधियुक्त ऐसे कर लेवे कि, उनमें घृत मिलाय हींग, जीरा, मेथी, राई

भुनी हुई ले के नवीन हांड़ी में रख उपरान्त बेर बेर धूनी देवे इस प्रकार करने से अर्क में जितनी दुर्गंध होवे फौरन दूर होवे और उपरान्त उत्तम सुगंध वाला द्रव्य होता है और वह जठराग्नि को भी दीपन करता है।।३८-३९-४०।।

अर्क को गंधक की वासना देना

सर्वेष्वर्कप्रयोगेषु गंधपाषाणवासना ।।
अर्काणां तु प्रदातव्या ते भवंत्यर्कसम्भवाः ।।४१।।

अव अर्क प्रयोगों में गंध पाषाण (गंधक) की वासना (सहाय) देना क्योंकि अर्कों को वासना देने से श्रेष्ठ अर्क हो जाते हैं।।४१।।

वात आदि दोषशमन के अर्थ अर्कों को पृथक् पदार्थों की वासना

सर्वत्र वातरोगेषु महिषाक्षादिवासना ।।४२।।
महिषाक्षस्तथा रालं निर्यासः सरलस्य च ।।
कृष्णागुरुलवङ्गं च महिषाक्षाहिपञ्चकम् ।।४३।।
सर्वेषु पित्तरोगेषु चन्दनादि च वासनम् ।।
सर्वेषु कफरोगेषु जटामांस्यादिवासनम् ।।४४।।

बहुधा करके यह वात रोगों में महिषाक्ष (भैंसहा गूगल) की वासना देना उचित है सो कहते हैं कि, महिषाक्ष, राल, निर्यास, सरल, कृष्णागरु (काला अगर) और लवंग (लौग) यह महिषादिपंचक कहाता है। सर्व प्रकार के पित्त रोगों पर चन्दनादि की वासना देनी उचित है और कफ के रोगों में जटामांसी इत्यादि की वासना देना उचित है।।४२-४३-४४।।

चन्दनादिवासना

चन्दनं च तथोशीरं कर्पूरो गन्धबाकुची ।।
एला कचूरिणी धूली सप्तैते चन्दनादयः ।।४५।।

अब चन्दनादि वासना कहते हैं कि, चन्दन, उशीर (खस) कपूर, गंधक, बाकुची, एला (इलायची), कचूर और धूली (धमासा) यह सातों

चन्दनादि वासना का गण है।।४५।।

जटामांस्यादि वासना

जटामांसी नखं पत्री लवङ्गं तगरं रसः ।।
शिलाया गन्धपाषाणः सप्त मांस्यादिका अमी ।।४६।।

अब जटामांस्यादिगण कहते हैं, जटामांसी, नखी, पत्रज, लौंग, तगर, रसकपूर, गंधक, यह जटामास्यादि वासना का गण है।।४६।।

त्रिदोषनाशक धूप

वासयेद्द्वादशाङ्गेन त्रिदोषघ्नेन चार्ककम् ।।
नश्यन्ति यस्य धूपेन उपग्रहपिशाचकाः ।।४७।।

तीनों दोषों को जैसे वात, पित, कफ इन तीनों को दूर करने वाला द्वादशांग धूप से अर्कों को सुगन्धित करे। जिस धूप की धूनी देने से सर्व उपग्रह, पूतना, भूतादि, पिशाचादि सर्व नष्ट हो जाते हैं।।४७।।

दशांगधूप

पञ्चांशो गन्धपाषाणस्तावन्महिषगुग्गुलुः ।।
चतुरांशं चन्दनं च जटामांसी च तावती ।।४८।।
त्रिभागः सर्जकः क्षारस्तावदेव हि रालकम् ।।
उशीरं च द्विभागं स्याद्घृतमष्टनखं समम् ।।४९।।
कर्पूरो मृगनाभिस्तु ह्येकभागौ प्रकीर्तितौ ।।
एषो दशाङ्गधूपस्तु रुद्रस्यापि मनो हरेत् ।।५०।।

इसके उपरान्त अब दशांगधूप कहते हैं, पांच भाग गन्धक, उसी के बराबर भैंसहा गूगल, चार भाग चन्दन, उसी के बराबर जटामांसी और तीन भाग सज्जीखार, उसी के बराबर राल और दो भाग उशीर (खस), उपरान्त अट्ठाईस भाग घृत और कपूर और कस्तूरी एक एक भाग यह सब दशांगधूप महादेवजी के चित को भी हरने वाला होता है।।४८-४९-५०।।

प्याज और लहसन का अर्क

पलाण्डुलशुनादीनां निर्गन्धीकरणं भृणु ॥
उत्पाद्यान्तर्विषं सम्यक् तक्रमध्ये विनिःक्षिपेत् ॥५१॥
पर्यायमेकमत्यम्ले मध्येऽस्मिन्विरसे सति ॥
दद्यान्निस्कास्यान्यतक्रं कुर्यात्तच्चाष्टयामकम् ॥५२॥
द्रोणीपुष्परसेष्वेव मूर्वापत्ररसेऽपि वा ॥
त्रिपर्यायोत्तरं तत्तु रसोन्नं क्षालयेत्सुधीः ॥५३॥
हरिद्राराजिकातोये स्थाप्यं पर्यायमेककम् ॥
उष्णोदकेन संक्षाल्यं पर्यायं वासयेत्ततः ॥५४॥

अब पलांडु (प्याज), लहसन इत्यादि की दुर्गन्ध नष्ट करने की युक्ति कहते हैं, हे प्यारी महादेवी पार्वती! तू श्रवण कर कि, प्याज व लहसुन के भीतर का विष यानी गूदा निकालकर उपरान्त फिर उसको तक्र यानी छाछ में डालकर उपरान्त अति ही खट्टी छाछ में आठ प्रहर तक रखे उपरान्त फिर निकालकर द्रोणी (नील) के पुष्प के रस में या मुहर के पत्ते के रस में तीन तीन बेर प्याज व लहसुन को खूब धोवे इस प्रकार करे उपरान्त फिर एक वेर हलदी और राई के पानी में रखे उपरान्त गर्म पानी में रखे और उसी पानी में धो करके फिर धूनी देवे।।५१-५२-५३-५४।।

सहस्रपत्रैः पुष्पैर्वा अभावे पल्लवैरपि ॥
आलोडयेद्दशांशेन पंचांशेन च वासना ॥५५॥

फिर सहस्रपत्र कहिये कमल के फूलों से या उनके पत्तों से धूनी देना और फिर उसको दशांश धूप की धूनी देवे और पञ्चांश से वासना देवे।।५५।।

युक्तं कृत्वा याममात्रं स्थापयेत्प्रकटातपे ॥
ततो निष्कासयेदर्कं जात्यादिकपिधानकम् ॥५६॥
तस्यार्कस्य सुगंधेन एकदा मोहितो हरः ॥

को जानाति रसोनस्य ह्यर्कोऽयमिति भूतले ।।५७।।

फिर एक प्रहर तक तीक्ष्ण धूप में धर देवे उपरान्त फिर उसमें चमेली का पिधान देकरके अर्क निकाले उस अर्क की सुगंध करके एक बेर महादेवजी भी तो मोहित हो गये थे फिर कौन जान सकता है, मनुष्य की क्या शक्ति है कि लहसुन जान सके और इसका अर्क इस प्रकार का हो जाता है। ऐसा यह अर्क सुगंधदार और अनेक गुण का है।।५६-५७।।

मांस के अर्क की प्रशंसा

एकतः सर्व एवार्का मांसार्कस्तु तथैकतः ।।
मया स्वर्गो गृहीतस्तु प्राप्तं तत्र मयाऽमृतम् ।।५८।।
तदा प्रोक्तं शिवस्याग्रे मम धिग्जीवनं प्रभो ।।
नीता वाथ प्रयुक्ता वा सुधा देवैर्मया तु सा ।।५९।।

सब अर्क एक तरफ और मांसार्क एक तरफ है, मैंने स्वर्ग को जीत लिया और मुझको अमृत प्राप्त हुआ सो उस अमृत को देवता चुरा ले गये तब मैंने शिवजी महाराज के आगे कहा कि हे प्रभु! मेरे जीवन को धिक्कार है, क्योंकि हमारा लाया हुआ अमृत देवताओं ने ले जाकर काम में प्रयुक्त किया है।।५८।।५९।।

न दृष्ट्वा तत्र देवेश शिरश्छेदं करोम्यहम् ।।
ततः प्रसन्नो गिरिशो वाक्यं मां प्रति सोऽब्रवीत् ।।६०।।
दत्तं मया समस्तं ते देवावध्यत्वमेव च ।।
किं ते कार्यं तु सुधया सुधातोऽधिकरोचनम् ।।६१।।
सम्प्रवक्ष्यामि मांसार्कं मद्यस्यार्कं तथैव च ।।
द्रव्याणां विजयादीनां लभ्यते यैः सुखं महत् ।।६२।।

जहां मैंने अमृत रखा था वहां नहीं देखकर हे शिवजी! मैं खुद अपना शिर छेदन करता हूँ। महादेवजी बोले कि मैं प्रसन्न हूँ। हमने तुमको सर्व देवताओं से अवध्य वरदान दिया अर्थात् तुम किसी से न डरोगे, न

हारोगे और न किसी से मरोगे और सर्व देवता तुम्हारे वश में रहेंगे फिर तुम अमृत को लेकर क्या करोगे? अमृत से भी रोचक मांस और मद्य का अर्क अच्छे प्रकार कहता हूं जिससे सर्व प्रकार धनादिकों का और विजय आदिकों का अधिक सुख प्राप्त होवेगा सो सुनो।।६०-६२।।

मांस के भेद

मांसं तु त्रिविधं ज्ञेयं मृदुलं कठिनं घनम् ।।
तेषामर्कं यथा प्रोक्तं यंत्रान्निष्कासयेच्छनैः ।।६३।।

मांस जो है सो तीन तरह का है मृदुल नाम कोमल, दूसरा कठिन नाम करा, तीसरा घन नाम गाढ़ा। इन सबका अर्क जैसे कहा गया वैसे ही यंत्र में निकाल लेवे।।६३।।

कोमलमांस का अर्क अष्टगंधसहित

मृदुलं यद्भवेन्मांसं चत्वारिंशांशकं पटुः ।।
स्थूलखंडीकृते तस्मिन्दत्त्वा तत्क्षालयेज्जलैः ।।६४।।
षष्टचंशेनाष्टगन्धेन तद्विलोडच च निक्षिपेत् ।।
रसमिक्षोरष्टमांशं तदभावे पयः क्षिपेत् ।।६५।।
जातीपत्रं लवंगं च त्वगेलानागकेशरम् ।।
मरीचं मृगनाभिश्च विदुर्गन्धाष्टकं त्विदम् ।।६६।।

जो मांस कोमल होवे उसको चालीस भाग लेवे और बड़े बड़े टुकड़े करके जल से धोवे उपरान्त फिर उससे साठवां हिस्सा ईख का रस डाले और ईख का रस न होय तो इसी के बराबर दूध डाले। अब अष्टगन्ध कहते हैं, जायफल १, लौंग २, तज ३, सफेद इलायची ४, नागकेशर ५, स्याह मिर्च ६, कस्तूरी ७, कपूर ८, ये सब अष्टगंध होते हैं।।६४-६६।।

कार्यं पुष्पापिधानाद्यमर्कं निष्कासयेत्ततः ।।
जायतेऽसौ महास्वादुः सुधारससमः प्रिये ।।६७।।

उसमें पुष्प इत्यादि का पिधान देकर उपरान्त अर्क निकाल लेवे। हे प्रिये! यह अर्क सर्वोंपर मीठा और अमृत के तुल्य गुणकर होता है।।६७।।

कठिन मांस का अर्क

दृढमांसस्य खंडानि लघून्येव प्रकल्पयेत् ।।
दद्याच्च तुवरं तत्र लवणं प्रोक्तया दिशा ।।६८।।
क्षालयेदारनालेन त्रिवारं कोष्णवारिणा ।।
क्षालयेत्सप्तवाराणि हरेदर्कं तु पूर्ववत् ।।६९।।

दृढ मांस के छोटे छोटे टुकड़े करे उपरान्त फिर तुवर (खारी) नोन छोड़े और आरनाल (कांजी) से तीन बार धोवे उपरान्त फिर गर्म पानी से ७ बार धोवे और फिर पहले के अनुसार यंत्र में धरकर धीरे धीरे से अर्क निकाल लेवे।।६८-६९।।

घन मांस का अर्क

घनमांसस्य खंडानि कुर्यादतिलघूनि च ।।
आलोड्य शंखद्रावेण क्षालयेत्पयसा पुनः ।।७०।।
सप्तवाराणि लवणं क्षालयेद्वासयेत्पुनः ।।
तद्दत्वा यंत्रमध्ये तु हरेत्पूर्ववदर्ककम् ।।७१।।

गाढ़े मांस के छोटे छोटे टुकड़े कर उपरान्त फिर उसमें शंखद्राव डालकर हिलावे और फिर पानी से धोवे और फिर सात बार नोन छोड़े फिर पानी से धोवे उपरान्त उसको यंत्र के बीच रखकर पूर्व कहे क्रम से अर्क खींच लेवे।।७०।।७१।।

शंखद्रावकरणविधि

स्वर्जिक्षारं यवक्षारं श्वेतक्षारं च टंकणम् ।।
सौभाग्यक्षारकं सौरं क्षारं शंखभवं तथा ।।७२।।
अर्कसेहुंडपालाशक्षारश्च तुवरी तथा ।।
अपामार्गभवं क्षारं तथाऽष्टौ लवणानि च ।।७३।।

अब शंखद्राव किस प्रकार बनता है सो कहते हैं। सज्जी, जवाखार, सफेद खार, सुहागा इसको सौभाग्यलक्ष्मी कहते हैं और सोरा, शंखक्षार और आक (थूहर) ढांक की खार और तुवरीखार, ओंगा (चिरचिरा) की खार, इसी तरह आठों प्रकार के नोन।।७२।।७३।।

लवणाष्टक

लवणाष्टकमेतच्च सैन्धवं च सुवर्चलम् ।।
विटं समुद्रसञ्जातमुद्भिदं रोमकं गडम् ।।७४।।
कृत्वा सर्वाणि चैकत्र निम्बुनीरेण भावयेत् ।।
एकविंशतिवाराणि काचकूप्यां निवेशयेत् ।।७५।।

आठों नोन के नाम बताते हैं कि सेंधानोन १, सोवर्चल (सोचरनोन) २, विड़लवण ३, सामुद्रलवण ४, उद्भिदनोन ५, रोम की खान का नोन ६, गड ७ और खारी नोन ८ इतने हैं। इन सबको इकट्ठा करके फिर नींबू के अर्क में इक्कीस बार भावना देवे (बेर बेर भिगोवे) फिर कांच की कुप्पी या बोतल में भर देवे।।७४।।७५।।

नखांशनिम्बुकरसैः सर्वमार्द्रीकृतं तु तत् ।।
अधः सच्छिद्रपिठरीमध्ये कूपीं निवेशयेत् ।।७६।।
मृत्कर्पटसमायुक्तं सहेदग्निं यथावधि ।।
तस्याग्रे कूपिका योज्या दीर्घकंठा मनोहरा ।।७७।।

अनुमान बीस हिस्से नींबू के रस में भिगोके सब गीला होने पर नीचे छेदवाली पिठरी और अंगीठी में बोतल धर देवे। उपरान्त फिर थोड़ी सी हलकी कपड़मिट्टी करे जिससे फूटने न पावे और अग्नि भी सह सके उपरान्त फिर कुएं का अर्क लेने के वास्ते छोटे मुख का और लंबे मोडे का सुन्दर सा पात्र लेवे।।७६।।७७।।

सा कूपिका जले स्थाप्या मेलयेच्च द्वयोर्मुखम् ।।
जलमुष्णं यथा न स्याद्यथा वोपरि कूपिका ।।७८।।
अग्नयः क्रमतो देयास्तथा यामं च पञ्चमम् ।।

अनेनैव प्रकारेण क्षारार्काणां समुद्भवः ।।७९।।

उपरान्त फिर उसको पानी में धरकर दोनों को मिला देना और फिर बोतल की गर्मी से ऊपर की कुप्पी का पानी उष्ण न होने पावे वैसे ही फिर क्रम से पांच प्रहर अग्नि की आंच देवे इसी तरह खारों के अर्कों की उत्पत्ति जानो अर्थात् इसी प्रकार सारार्क निकलता है।।७८-७९।।

सिद्ध हुए शंखद्राव की परीक्षा

दद्यादस्थीनि मांसानि शंखशुक्त्यादिकान्यपि ।।
सर्वाण्यपि विलीयन्ते शंखद्रावे न संशयः ।।८०।।

शंखद्राव अर्क में अस्थि (हाड़) मांस, शंख, सीपी इत्यादि कुछ भी गिर पड़े तो निःसन्देह सब गलकर पानी के समान हो जावेंगे।।८०।।

कोमल मांस के जीव

पारावताश्च चटकाः शशसूकरटिट्टिभाः ।।
क्षुद्रमत्स्यादिकाः सर्वे मांसेषु मृदुलाःस्मृताः ।।८१।।

सर्व मांसों में जो कि ज्यादा कोमल हैं उन जीवों के नाम कहते हैं, जैसे कबूतर, बटेर, गर्गैया, शश, खर्गोश, शूकर, टिट्टिभ (टिटहरी) और छोटी छोटी मछरी इत्यादि इन सबके कोमल मांस होते हैं।।८१।।

कठिन मांस के जीव

मृगरोहितकाद्याश्च मत्स्याः शल्लकिशम्बराः ।।
एते कठिनमांसाः स्युर्जीवास्तु जलचारिणः ।।८२।।

अब इसके उपरान्त कठिन मांस वाले कहते हैं, जैसे मृग, हिरण, रोहीतक इत्यादि जो कहे हैं सो और शल्लकि, शंबर आदि तथा मछली और जलचारी जीव जो हैं सो कठिन मांस वाले हैं।।८२।।

गाढ़ मांस के जीव

गजकुंभीरघण्टाद्याः सगन्धाः कर्करादयः ।।
गोधागोश्वलुलायाद्या घनमांसाः प्रकीर्तिताः ।।८३।।

अब गाढ़े मांस वाले जीव कहते हैं, जैसे हाथी, कुंभीर (नाका),

घड़ियाल आदि और गन्धियुक्त कर्कर पक्षिविशेष इत्यादि बढ़े बढ़े गोधा (गोह), गाय, कुत्ता, भैंस आदि ये घन मांस वाले जीव कहे हैं।।८३।।

अन्नादिकों का अर्क (मद्य)

अन्नादिसम्भवो योऽर्कस्तन्मद्यं परिकीर्तितम् ।।
तस्य भेदान्प्रवक्ष्यामि सटितात्तत्समुद्धरेत् ।।८४।।

अब मद्य (मदिरा) का भेद कहते हैं, अन्नादि से विधि पूर्वक खींचा हुआ जो अर्क उसको ही मद्य कहते हैं। उसका अर्क पतले हुए होयँ उनमें से निकाल लेवे।।८४।।

मद्य के दुर्गन्ध का दूरीकरण

तद्वासनानिवृत्यर्थमष्टगन्धं प्रयोजयेत् ।।
पूर्वोक्तैर्धूपयेद्धूपैर्जायते गन्धवर्जितम् ।।८५।।

उसकी वासना दूर करने के लिये उसमें अष्टगन्ध डाल देवे, पूर्वोक्त धूपों की धूनी देने से दुर्गन्ध जाती रहती है।।८५।।

तुषोदक मद्य

अर्द्धं तत्र जलं देयं सिद्धे देयोऽष्टगन्धकः ।।
तुषोदकं यवैरामैः सतुषैः शकलीकृतैः ।।८६।।

फिर उसमें आधा पानी देवे तैयार हो जाने पर अष्टगन्ध डाले तो श्रेष्ठ हो जावेगी। कच्चे जौ को भूसी समेत लेकर कूटकर फिर यंत्र में धरकर अर्क खींचने से तुषोदक नाम मद्य कहाता है।।८६।।

सौवीरमद्य

सौवीरं तु यवैश्चैवं निस्तुषैः शकलीकृतैः ।।
गोधूमैरपि सौवीरं जायते स्वल्पमादकम् ।।८७।।

जवों के छिलके दूर करके यंत्र में धरे फिर अर्क खींचे, इसको सौवीर नाम मद्य कहते हैं और गेहुंओं से भी निकाला मद्य सौवीर कहा जाता है परन्तु किञ्चित् नशे वाला होता है।।८७।।

आरनाल और धान्याम्ल मद्य

आरनालं तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः ॥
धान्याम्लं शालिचूर्णादि कोद्रवादिकृतं भवेत् ॥८८॥

कच्चे गेहुंओं के छिलके उतारकर फिर यंत्र में धरकर खींचने से आरनाल नाम मद्य कहाता है और चावल आदि का चूर्ण और कोदौं आदि से खींचा हुआ मद्य धान्याम्ल कहा जाता है॥८८॥

शण्डाकी मद्य

शण्डाकी राजिकायुक्तैः स्यान्मूलकदलद्रवैः ॥
सर्षपस्वरसैर्वापि शालिपिष्टिकसंयुतैः ॥८९॥

राई मूली के पत्तों समेत या सरसों के रस का भी चांवल की पिट्ठी के संग अर्क खींचने से शंडा की मद्य हो जाती है॥८९॥

सूक्तनाम मद्य

कंदमूलफलादींश्च सस्नेहलवणानि च ॥
एकीकृतस्तु योऽर्कः स्यात्स सूक्तमभिधीयते ॥९०॥

मूल फल आदि स्नेह चिकनाई और लवण समेत एक में मिलाय फिर जो अर्क निकाला जावेगा सो सूक्त नाम मद्य कहा जावेगा॥९०॥

अरिष्ट मद्य

पक्वौषधाम्बुसंसिद्धो योऽर्कः स स्यादरिष्टकम् ॥
अरिष्टं लघुपाकेन सर्वतो हि गुणाधिकम् ॥९१॥

पक्की हुई औषध और पानी से सिद्ध किया हुआ जो अर्क है उसको अरिष्ट कहते हैं। अरिष्ट नाम मद्य हलके पाक करके खींची जाती है, इसका गुण सबसे ज्यादा होता है॥९१॥

सुरा और वारुणीनामवाला मद्य

शालिपेठकपिष्टचादिकृतो योऽर्कः सुरा तु सा ॥
पुनर्नवाशिवापिष्टैर्विहिता वारुणी स्मृता ॥९२॥

शालि अर्थात् चावल और पेठा आदि की पिट्ठी से जो सिद्ध करा हुआ

अर्क सुरा नाम मद्य जानना और पुनर्नवा व सांठी और शिवा (हड़) की पिट्ठी से जो सिद्ध करा हो सो वारुणी जानना।।९२।।

सीधु और शीतरसनाम मद्य

इक्षोः पक्वै रसैः सिद्धः सीधुः पक्वरसश्च सः ।।
आमैस्तैरेव यः सिद्धः स च शीतरसः स्मृतः ।।९३।।

ईख के पक्के रस से जो सिद्ध करा सो सीधु तथा पक्का रसवाला कहाता है और जो कच्चे रस से खींचा होवे सो शीतरस कहलाता है।।९३।।

राजस तामस और सात्त्विक मद्य

पर्यायाद्यो भवेन्मद्यस्तामसो राक्षसप्रियः ।।
मण्डादी राजसो ज्ञेयस्ततो वै सात्विको भवेत् ।।९४।।

जो कई बेर मद्य खींची जाय तो वह तामस मद्य कहाता है वह राक्षस आदि को प्रिय होती और जो मंड आदि है सो राजसी है और जो उनसे भी कम होवे जिससे मनुष्य आकार को नहीं भूले यानी ज्यादा नशा नही आवे और सर्व प्रकार के बल बुद्धि उसे आवे सो सात्विक जानना चाहिये।।९४।।

सात्विकादि मद्य पीने का समय

सात्विकं गीतहास्यादौ राजसं साहसादिके ।।
तामसे निन्द्यकर्माणि निद्रां च बहुधा चरेत् ।।९५।।

सात्विक को गाने और हास्यादि कर्म में लेना चाहिये और राजस साहस और पराक्रम के कर्मों में लेना चाहिये, और तामस आदि मद्य को निन्दित निद्रादिकर्म कराने में लेना योग्य है।।९५।।

वारुणीमद्य के भेद

पुनर्नवाशिलापिष्टैर्विहिता वारुणी च सा ।।
संहितैस्ताल खर्जूररसैर्या सा च वारुणी ।।९६।।

पुनर्नवा को किसी पत्थर पर पीसने से ही मद्य बनता है उसी को वारुणी कहते हैं और ताड़ और खजूर के रस से जो मद्य बनती है उसको भी

वारुणी कहते हैं।।९६।।

वारुणीमद्य के गुण

सुरावद्वारुणी लघ्वी पीनसाध्मानशूलनुत् ।।
ग्राहिणी शोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रजित् ।।९७।।

वारुणी मद्य के गुण सुरा के समान होते हैं, परन्तु विशेष गुण ये हैं कि, वह हलकी होती है और पीनसरोग, पेट फूलना, शूल, सूजन, गुल्म, बवासीर, संग्रहणी और मूत्र का अवरोध इन सब रोगों को नष्ट कर देती है।।९७।।

नशावाले द्रव्यों का अर्क

भंगादिमत्तद्रव्याणां यवानीपादयोगतः ।।
अर्कं निष्काशयेद्धीमान् बोधकः स्यान्मदस्य सः ।।९८।।

भांग आदि मत्त (मतवाले) करने वाले द्रव्यों में चौथा हिस्सा अजवायन का योग देके फिर उन औषध में से अर्क निकाले इनसे नाश ज्यादा हो जाता है।।९८।।

धतूर आदि के मादक बीजों का अर्क

धत्तूरादिकबीजानि क्षिप्त्वा पयसि धापयेत् ।।
कण्ठशोषविबंधादिरहितोऽर्को भवेत्स हि ।।९९।।

इति श्रीरावणकृतार्कप्रकाशे द्वितीयं शतकं समाप्तम् ।।२।।

धतूरा आदि के बीजों को जल में डालकर खूब धोवे फिर अर्क निकाले तो वह अर्क कण्ठ को न सुखाने वाला अर्थात् कण्ठशोष के विबंध से रहित होता है।।९९।।

इति पण्डितमुकुन्दरामकृतार्कसंग्रह हिन्दीटीकायां द्वितीयं शतकं समाप्तम् ।।२।।

******
****

तृतीयं शतकम्

रावण उवाच

अथातः संप्रवक्ष्यामि केवलार्कगुणान् प्रिये ।।

रावण बोले कि हे प्रिये! अव तुझसे केवल अर्क ही के गुण कहते हैं सो चित्त लगाकर सुन।।

हर्डके अर्क के गुण

हरीतक्याः शूलकृच्छ्रकामलानाहनाशनः ।।१।।

तहां प्रथम हर्ड के अर्क के गुण कहते हैं। हरीत की (हर्ड) का अर्क शूल (दर्द), कृच्छ्र और कठिन पीड़ा व कामला रोग और पांडुरोग का भी नाश करने वाला है।।१।।

बहेड़ा और आंवले के अर्क के गुण

बिभीतकस्य तृट्छर्दिकफकासविनाशनः ।।
आमलस्य त्रिदोषास्रपित्तमेहान्त्रिनाशयेत् ।।२।।

बहेड़े का अर्क तृषा को और छर्दि (वमन), कफ को और खांसी को दूर करता है। आंवले का अर्क तीनो प्रकार के दोषों को रक्तविकार को, पित्त को व प्रमेह और धातुक्षीणता इत्यादि रोगों को नष्ट करता है।।२।।

सोंठ और अदरखके अर्क के गुण

शुण्ठ्या विबन्धाऽऽमवातशूलश्वासबलासहृत् ।।
आर्द्रकस्य ज्वरं दाहं हरेद्रुच्योऽग्निदीप्तिकृत् ।।३।।

सोंठ का अर्क रुकावट को और आमवात को, शूल को, दर्द को, श्वास को और कफ को भी नष्ट करता है। अदरख का अर्क ज्वर और दाह को

नष्ट करता है और विशेष करके जठराग्नि को दीप्त (तेज) करता है॥३॥

पीपल और मिर्च के अर्क के गुण

पिप्पल्याः श्वासकासामवातार्शोज्वरशूलहृत् ॥
मरीचस्य श्वासकृमीन् हरेत्सर्वान् गदानपि ॥४॥

पीपल का अर्क श्वास और खांसी, आमवात, बवासीर, ज्वर, शूल इत्यादि सबको दूर करता है। स्याह मिर्च का अर्क श्वास को और कीड़ों को तथा सर्व रोगों को नष्ट करता है॥४॥

पीपलामूल और चव्य के अर्क के गुण

ग्रन्थिकस्य प्लीहगुल्मकफवातोदरापहः ॥
चव्यार्कोत्थं तु रुचिकृत् विशेषाद्गुदजापहः ॥५॥

ग्रन्थिक नाम पीपलामूल का अर्क वाई पसुरी में गांठ होय उसको प्लीहा कहते हैं उसको, गुल्म नाम गांठ मात्र को और कफ को वायु को और वायु के उदररोग को दूर करता है। चविका का अर्क रुचि करता है और बहुधा करके गुदा के सर्व रोग को और मस्सों को खो देता है॥५॥

बड़ी पीपल और चित्रक के अर्क के गुण

अर्कस्तु गजपिप्पल्या वातश्लेष्माग्निमांद्यहृत् ॥
चित्रकस्याग्निकृत्कासग्रहणीकृमिनाशनः ॥६॥

चव्य का फल तो गजपीपल है उसका अर्क, वात को, कफ को और मन्दाग्नि को हरता है। चित्रक का अर्क अग्नि को तेज करता है और विशेषकर खांसी और संग्रहणी और कृमिरोग को दूर करता है॥६॥

अजवायन और अजमोदाके अर्क के गुण

यवान्याः पाचनो रुच्यो दीपनस्त्रिकशूलहृत् ॥
अजमोदोद्भवो वातकफहा बस्तिशोधनः ॥७॥

अजवायन का अर्क पाचन है और रुचि करता है। अग्नि को दीप्त करता है और कमर आदि का दर्द दूर करता है। अजमोदा का अर्क वात और

कफ को दूर करता है और बस्ति स्थान को शुद्ध करता है।।७।।

खुरासानी अजवायन और जीरेके अर्क के गुण

पारसकियवान्यास्तु ग्राही पाचनमादनः ।।
जीरकस्य तु संग्राही गर्भाशयविशुद्धिकृत् ।।८।।

खुरासानी अजवायन का अर्क ग्राही और भोजन को ठहराता है और पाचन (पचाने वाला) है तथा मादन यानी नशा करने वाला होता है। जीरे का अर्क खाने को एकत्र रखता है और गर्भाशय (कोष्ठ) को शुद्ध करता है।।८।।

काला जीरा और कलौंजी के अर्कके गुण

कृष्णजीरस्य चक्षुष्यो गुल्मछर्द्यतिसारजित् ।।
कारव्या बलकृद्दोष्यो ज्वरघ्नः पाचनो रसः ।।९।।

काली जीरी का अर्क आंखों को फायदा करता है और गुल्म (गांठ), छर्दि (वमन), अतिसार (दस्तों के रोग) को दूर करता है। कारव्या (कलौंजी) का अर्क अधिक बल करता है और जिस कदर शरीर में दोष हैं उनको प्रकाश करता है और ज्वर को दूर करता है, पाचन है और रस बढ़ाता है।।९।।

धनियां और सौंफ के अर्कके गुण

धान्यार्कस्य तृषादाहवमिश्वासत्रिदोषहृत् ।।
मिश्या ज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् ।।१०।।

धनिया का अर्क तृषा, दाह, वमि (उबकाई), सांस, त्रिदोष (वातपित्तकफ) को शांत करता है। मिसि (सोंफ) का अर्क ज्वर, वात, कफ, फोड़ा, शूल और नेत्ररोग को दूर करता है।।१०।।

सोये और लाल मिरचके अर्क के गुण

मिश्रेयाया वह्निमान्द्ययोनिशूलकृमीन् हरेत् ।।
ज्वालाकस्य ह्यपस्मारभूतप्रेतत्रिदोषहृत् ।।११।।

मिश्रेया नाम की सौंफ का अर्क मंदाग्नि और योनिरोग और कृमिरोगों

को दूर करता है। ज्वालाक (मिर्च समान) का अर्क अपस्मार (मृगी) और भूत, प्रेत, त्रिदोष और ज्वर को दूर करे है।।११।।

मेथी और वनमेथी के अर्क के गुण

मेथिकायाः श्लेष्मवातज्वरामकफनाशनः ।।
वनमेथ्याः सर्वरोगान् हरेत्कुञ्जरवाजिनाम् ।।१२।।

मेथी का अर्क कफ और वातज्वर को और आम से जो कफ है उसको नाश करता है। वनमेथी का अर्क हाथी व घोड़ों के सर्व रोगों को दूर करता है।।१२।।

हाल्यूं और हींगके अर्क के गुण

चन्द्रसूरस्य हिक्कासृग्वातहृत् पुष्टिवर्द्धनः ।।
हिंगुनः पाचनो रुच्यः कृमिशूलोदरापहः ।।१३।।

चन्द्रसूर नाम हाल्यूंका अर्क हुचकी, रक्तविकार और वात को हरता है और पुष्टि को करता है। हींग का अर्क पाचन है, रुचि को करता है, कृमिरोग को और पेट के दर्द को हरता है।।१३।।

वचके और खुरासानी वचके अर्क के गुण

वचाया वह्निवमिकृद्विबन्धाध्मानशूलहृत् ।।
पारसीकवचायास्तु भूतोन्मादबलं हरेत् ।।१४।।

वचका अर्क अग्नि को बढ़ाता है, वमन कराता है, बन्धेज करे है, अफरा और शूल को दूर करे है। पारसी खुरासानी वचका अर्क भूतोन्माद के बल को नाश करे है।।१४।।

कुलिञ्जनके और स्थूलग्रन्थिके अर्क के गुण

कुलिञ्जनस्य स्वरकृद्धृत्कण्ठमुखशोधनः ।।
स्थूलग्रंथिभवश्चार्को विशेषात्कफकासनुत् ।।१५।।

कुलिञ्जनका अर्क स्वर को करता है और हृदय, कंठ और मुख को शोधन करता है। स्थूलग्रन्थि कहिये प्रसिद्ध वचभेद है, उसका अर्क विशेष करके कफ और खांसी को दूर करता है।।१५।।

द्वीपान्तर वचके और हाऊबेरके अर्क के गुण

द्वीपान्तरवचायास्तु हरेच्छूलं फिरङ्गिकम् ॥
हबुषाया हरेत्प्लीहं विषं मेहं च दारुणम् ॥१६॥

दूसरे द्वीप की वचका अर्क शूल को और फिरंगरोग को नष्ट करता है। हवुषा नाम हाऊबेर का अर्क प्लीह (वाई पसली की गांठ) को, विषको और दारुण (महाकठिन) प्रमेह को दूर करता है॥१६॥

बड़े हाऊबेर और वायविडङ्गके अर्क के गुण

हबुषायाः समीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृत् ॥
वैडङ्गाश्चोदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत् ॥१७॥

हवुषा (बड़े हाऊँबेर) का अर्क समीरार्श (वादी ववासीर), संग्रहणी, पेट की गांठ और शूल कहिये दर्द को नष्ट करता है। वायविडंगका अर्क उदररोग और कफरोग, कृमि, (कीड़ा), वादी, अफरावंध इन सबको नष्ट करे है॥१७॥

तुम्बर और वंशलोचनके अर्क के गुण

तुंबरो गुरुताश्वासप्लीहोदरकृमीन् हरेत् ॥
वंशलोचनजस्तृष्णाक्षयकासज्वरान्हरेत् ॥१८॥

तुम्बर का अर्क भारीपन, सांस, गांठ और पेट के कीड़ों को नष्ट करता है। वंशलोचन का अर्क प्यास, क्षय, खांसी और ज्वर इन सर्व रोगों को दूर करता है॥१८॥

समुद्रफेन और विजयसारके अर्क के गुण

समुद्रफेनजः शीतो लेखनः कफहृत्सरः ॥
जीवकोत्थः शुक्रकफबलकृच्छीतलः समः ॥१९॥

समुद्रफेन का अर्क शीतल है और लेखन नाम मल को उखाड़ता है और कफ को दूर करता है और दस्तावर है। जीवक (विजयसार) का अर्क शुक्र नाम वीर्य और कफ व बल को बढ़ाता है तथा शीतल और समान है॥१९॥

काकराशृंगी और मेदाके अर्क के गुण

ऋषभः पित्तदाहासृक्कासवातक्षयापहः ॥
महामेदोद्भवार्कस्तु वृष्यस्तन्यकफापहः ॥२०॥

काकराशृङ्गी का अर्क पित्त, दाह, रक्तविकार, खांसी, वादी और क्षय इन सब रोगों को दूर करता है। मेदा का अर्क वृष्य कहिये बल और दूध को अधिक करता है और कफ को दूर करता है॥२०॥

महामेदा और काकोलीके अर्क के गुण

महामेदोद्भवः शीतो रक्तवातज्वरप्रणुत् ॥
काकोल्याः प्रायशः शीतः पित्तशोथज्वरापहः ॥२१॥

महामेदा सोंठ के समान गांठ जिसकी उसका अर्क शीतल है, रक्तविकार और वात और ज्वर को दूर करता है। काकोली का अर्क शीतल है, पित्त, शोथ (सूजन) को और ज्वर को नाश करता है॥२१॥

क्षीरकाकोली और ऋद्धिके अर्क के गुण

क्षीरकाकोलिकाजातो बृंहणो दाहवातहा ॥
ऋद्ध्या बल्यस्त्रिदोषघ्नो रक्तपित्तविनाशनः ॥२२॥

क्षीरकाकोली का अर्क वर्द्धक है और दाह (जलन) और वातविकार को नष्ट करता है। ऋद्धिका अर्क बल को देता है और तीनों दोषों को नाश करता है और रक्तपित्त को दूर करता है॥२२॥

वृद्धि और मुलहठीके अर्क के गुण

वृद्ध्या गर्भप्रदः शीतः क्षतकासक्षयापहः ॥
मधुपर्ण्याः केशकरः स्वर्यः पित्तानिलास्रजित् ॥२३॥

वृद्धि का अर्क गर्भ को देने वाला है और ठंढा है और घाव व खांसी को और क्षय को नष्ट करता है। मधुपर्णी (मुलहठी) का अर्क केशको और स्वर को ज्यादा करता है और पित्त व वातविकार और रक्तविकार को दूर करता है॥२३॥

जलैठी और कबीलेके अर्क का गुण

जलयष्टचा विषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः ।।
कम्पिलस्य विरेकी स्यात्प्रमेहस्य विकारनुत् ।।२४।।

जलयष्टी यानी जलैठी का अर्क विष, वांति, तृषा, ग्लानि व क्षय को दूर करता है। कंपिल (कबील) का अर्क दस्तावर होता है और लिङ्ग के विकारों को दूर करता है।।२४।।

अमिलतासके अर्क के गुण

आरग्वधस्य पित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत् ।।
कण्डूमेहश्वासकासकृमिकुष्ठज्वरापहः ।।२५।।

आरग्वध यानी अमिलतासका अर्क पित्त, रक्तविकार, बादी उदावर्त (उफान) और शूल को नाश करता है तथा कंडू (खुजली), प्रमेह श्वास, खांसी, कृमिरोग, कुष्ठ और ज्वर को नाश करता है।।२५।।

चिरायता और खंभारीके अर्क के गुण

भूनिम्बस्य तृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ।।
भद्रायार्कस्तु पित्तासृक्कृमिवीसर्पिकुष्ठनुत् ।।२६।।

भूनींब (चिरायता) का अर्क तृषा (प्यास) कुष्ठ, ज्वर, फोड़ा, कृमि यानी कीड़ा इन रोगों को दूर करता है। भद्रा (खंभारी) का अर्क पित्त रक्तविकार, कृमिरोग और फैलने वाले कुष्ठ को नाश करता है।।२६।।

मैनफल और रास्नेके अर्क के गुण

मदनोत्थः छर्दिनेत्रचातुर्थिकज्वरादिहृत् ।।
रास्नोद्भवः समीराद्यवातशूलोदरापहः ।।२७।।

मदन (मैनफल) का अर्क वमन, नेत्ररोग और चातुर्थिक ज्वर आदि को नाश करता है। राई का अर्क वायु को नाश करता है और वादी को और उदर रोग को दूर करता है।।२७।।

नागदमन और माईके अर्क के गुण

नागभिन्नोद्भवो भोगिलूताद्याखुविकारनुत् ॥
माचिकाजस्तु पित्तास्रपक्वातीसारहा लघुः ॥२८॥

नागभिन्न (नागदमन) का अर्क सर्प, मकरी, मूषक आदि के विष को नाश करता है। माचिका यानी माईका का अर्क पित्त रक्तविकार, पका हुआ अतीसार और रुधिर मिले दस्तों को दूर करता है और हलका होता है॥२८॥

तेजबल और मालकांगनी के अर्क के गुण

तेजस्विन्याः श्वासकासकफहृद्वह्निदीपनः ॥
ज्योतिष्मत्या वान्तिकरो वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदः ॥२९॥

तेजबल का अर्क खांसी और कफ को दूर करता है और जठराग्नि को तेज करता है। ज्योतिष्मती (मालकांगनी) का अर्क वांति करता है और अग्नि को बढ़ाता है और बुद्धि को व स्मृति को देता है॥२९॥

कूठ और पुहकरमूल के अर्क के गुण

कुष्ठस्य हन्ति वातास्रकासकुष्ठमरुत्कफान् ॥
पौष्करस्यारुचिश्वासान् विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ॥३०॥

कूठ का अर्क वादी, रक्तविकार, खांसी, कुष्ठ वात और कफ इन सर्व रोगों को नाश करता है। पुहकरमूल का अर्क अरुचि श्वास और विशेष करके कोख की पीड़ा को दूर करता है॥३०॥

चौक और काकड़ासींगी के अर्क के गुण

हेमाह्वाया एष वान्तिकरकण्डूविनाशनः ॥
शृंग्या हरेदूर्ध्ववातहिक्कातृष्णास्वरक्षयान् ॥३१॥

हेमाह्वा (चोक) का अर्क वमन को कराता है और करकंडू (खुजली) को दूर करता है। काकड़ासींगी का अर्क उर्ध्ववायु, हिचकी, प्यास और स्वरभंग इन रोगों को दूर करता है॥३१॥

कायफल और भारंगी के अर्क के गुण

कट्फलोत्थः श्वासकासप्रमेहार्शोरुचीर्हरेत् ॥
भार्ङ्ग्या हरेत्कफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ॥३२॥

कट्फल (कायफल) का अर्क श्वास, खांसी, प्रमेह, बवासीर और अरुचि को हरता है। भारंगी का अर्क कफ, श्वास, पीनस, रोग, ज्वर, और वायु इन सर्व रोगों को नष्ट करता. है॥३२॥

पाषाणभेद और कुसुंभ के अर्क के गुण

पाषाणभेदजो योनिरोगकृच्छ्राश्मगुल्महा ॥
कौसुंभजो वर्णकरो रक्तपित्तकफापहः ॥३३॥

पाषाण भेद का अर्क योनिरोग, पेशाव रुकना और कठोर गुल्म कहिये गांठ को दूर करता है। कुसुभ का अर्क वर्णकारी है तथा रक्तपित्त व कफ का नाश करता है॥३३॥

धाई और मजीठ के अर्क के गुण

धातकीजस्तृषाशीतविषकृमिविसर्पजित् ॥
माञ्जिष्ठजो विषश्लेष्मरक्तातीसारकुष्ठहा ॥३४॥

धातकी (धाई वा आंवला) का अर्क प्यास, शीत, विष, कृमिरोग और विसर्परोग को नाश करे है। मजीठ का अर्क विष, कफ, रक्त, अतिसार और कुष्ठ को दूर करे है॥३४॥

लाख और हलदी के अर्क के गुण

लाक्षाजः कृमिवीसर्पव्रणोरः क्षतकुष्ठहा ॥
हरिद्राया मेहशोथत्वग्दोषव्रणपाण्डुनुत् ॥३५॥

लाख का अर्क कृमिरोग, विसर्परोग, व्रण, (फोड़ा) उरःक्षत (हृदय का घाव) और कुष्ठ इन सर्व रोगों को नाश करता है। हलदी का अर्क प्रमेह, शोथ (सूजन), त्वचा के दोष व्रण (घाव) और पांडु (पीलिया) का नाश करता है॥३५॥

वन हलदी का और कपूर हलदी के अर्क के गुण

आरण्यकहरिद्रायाः कुष्ठवातास्रनाशनः ॥
कर्पूरकहरिद्रायाः सर्वकण्डूविनाशनः ॥३६॥

वन हलदी का अर्क कुष्ठ, वात व रक्तविकार का नाश करता है कपूर हलदी का अर्क सर्व प्रकार की खुजली का नाश करता है॥३६॥

दारु हलदी और रसौत के अर्क के गुण

दार्व्या विशेषतो लेपान्नेत्रकर्णस्य रोगनुत् ॥
रसाञ्जनोद्भवो नेत्रविकारव्रणदोषहृत् ॥३७॥

दारु हलदी का अर्क लेप से विशेष करके नेत्र और कर्ण के रोग को हरे है। रसांजन (रसोत) का अर्क नेत्र विकार और व्रणरोग को दूर करता है॥३७॥

बाकुची और पँवार के अर्क के गुण

बाकुच्याः कृमिविष्टम्भपाण्डुशोथकफापहः ॥
प्रपुन्नाटस्य हन्त्येव कण्डूदद्रुविषानिलान् ॥३८॥

बाकुची का अर्क कीड़े, रुक जाना, पांडु (पीलिया), सूजन और कफ इन सर्व रोगों को दूर करता है। प्रपुन्नाट (पंवार) का अर्क खाज, दाद, विष व वायु को दूर करता है॥३८॥

अतीस और लोध के अर्क के गुण

विषाजोदीप्तिकृच्चार्को कफपित्तातिसारहा ॥
लोध्रजः शीतलो ग्राही चक्षुष्यः कफपित्तनुत् ॥३९॥

अतीस का अर्क जठराग्नि को दीप्त करे है और कफ, पित्त और अतीसार को दूर करता है। लोध का अर्क शीतल है, मल को रोकता है और नेत्रों को गुणदायक है और कफपित्त को नाश करता है॥३९॥

चिरपोटा और भिलावे के अर्क के गुण

बृहत्पत्रोद्भवो नेत्रोदरातीसारशोथहृत् ॥
भल्लातकोद्भवो हन्याज्ज्वरोदरकृमिव्रणान् ॥४०॥

बृहत्पत्रा (चिरपोटा) का अर्क नेत्र के रोग, उदररोग, अतिसार, सूजन इन सर्व रोगों को दूर करता है। भिलावे का अर्क ज्वर, पेट के कीड़े और व्रण (घाव) को नष्ट करता है।।४०।।

गिलोय और बेल के अर्क के गुण

गुडूच्या दीपनो ग्राही कासपाण्डुज्वरापहः ।।
बैल्वः श्लेष्महरो बल्यो लघू रुक्षश्च पाचनः ।।४१।।

गुडूची (गिलोय) का अर्क जठराग्नि को दीप्त करता है, ग्राही कहिये मल को ठहरावे है, खांसी, पीलिया और ज्वर को दूर करता है। बेल का अर्क कफ को नाश करे है, बलकारक है, हलका है, रूखा और पाचक है।।४१।।

कुम्भेर और नागवेल के अर्क के गुण

कुम्भारीजो भ्रमतृष्णाशूलार्शोविषदाहनुत् ।।
ताम्बूल्या मुखदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहः ।।४२।।

कुंभेर का अर्क भ्रम, प्यास, शूल, बवासीर, विष और जलन को हरे है। तांबूली (नागरवेली) का अर्क मुख की दुर्गंधि, मलदोष, वमन व श्रम (खेद) को दूर करता है।।४२।।

पाढल और अरणी के अर्क के गुण

पाटल्याश्छर्दिशोथास्रत्रिदोषारुचिदाहहा ।।
अग्निमन्थोद्भवः शोथकृमिपाण्डुबलासनुत् ।।४३।।

पाढ़ल का अर्क छर्दिरोग, सूजन, रक्तविकार, त्रिदोष (वात्तपित्त कफकृत रोग) अरुचि और दाह (जलन) को दूर करे है। अग्निमंथ (अरणी) का अर्क सूजन, कीड़ा, पीलिया, बलास (कफ) इन रोगों को दूर करता है।।४३।।

अरलू और शालिपर्णी के अर्क के गुण

स्योनाकजस्तु गुल्मार्शकृमिहृद्रुचिदीनिकृत् ।।
शालिपर्ण्याः क्षतकृमिज्वरछर्द्यतिसारहा ।।४४।।

स्योनाक (अरलू) का अर्क गांठ और बवासीर रोग में गुदा के मस्सों के कीड़ों को हरता है और रुचि और अग्नि दीप्त करता है। शालिपर्णी के अर्क घाव, कीड़ा, ज्वर, छर्दि और दस्त इन सर्व रोगों को दूर करता है।।४४।।

पृश्निपर्णी और छोटी कटैली के अर्क के गुण

प्रश्निपर्ण्या ज्वरश्वासरक्तातीसारदाहजित् ।।
वार्ताक्यर्को ज्वरालस्यमलारोचकशूलहा ।।४५।।

पृश्निपर्णी का अर्क ज्वर, श्वास, रक्तातिसार और दाह इन सर्व रोगों को दूर करता है। वार्ता की (छोटी कटैली) का अर्क ज्वर, आलस्य, मल, अरुचि और शूल को नाश करता है।।४५।।

कटेरी और गोखरू के अर्क के गुण

कण्टकार्य्या गर्भकरः पाचनः कफकासहा ।।
गौक्षुरस्याश्मरीमेहकृच्छ्रहृद्रोगवातहा ।।४६।।

कटेरी का अर्क गर्भ कारक और पाचन है तथा कफ और खांसी को दूर करता है। गोखरू का अर्क अश्मरी (लिंग में वीर्य की गांठ), प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग और वातविकार का नाश करता है।।४६।।

जीवंती और मुद्‌गपर्णी के अर्क के गुण

जीवन्त्याः श्वासहृन्नेत्रदोषत्रितयनाशनः ।।
मुद्‌गपर्ण्याः शोथदाहग्रहण्यर्शातिसारजित् ।।४७।।

जीवन्ती का अर्क श्वासरोग, हृदयरोग और त्रिदोषरोग को दूर करता है। मुद्‌गपर्णी का अर्क सूजन, जलन, संग्रहणी, बवासीर व अतीसार आदि को नाश करता है।।४७।।

माषपर्णी और अरण्ड के अर्क के गुण

माषपर्ण्याः शुक्रकरो वातपित्तज्वरास्रजित् ।।
पञ्चांगुलोद्भवः शूलशिरः पीडोदरापहः ।।४८।।

माषपर्णी का अर्क वीर्यवर्धक होता है और वात, पित्त, ज्वर और

रक्तविकार को दूर करता है। पंचांगुल कहिये अरंड का अर्क शूल को और शिर के दर्द को और उदररोग को दूर करता है॥४८॥

अरण्डभेद और मंदार के अर्क के गुण

हबुषोत्थो वृद्धकासश्वासकुष्ठाममारुतान् ॥
मन्दारजो वातकुष्ठकण्डूव्रणविषापहः ॥४९॥

हबुषा (हांऊ) का अर्क बहुत काल की खांसी, श्वास, कुष्ठ और आमवात इस सर्व रोगों को दूर करता है। मंदार का अर्क वादी, कुष्ठ, खाज, घाव और विष को दूर करता है॥४९॥

आक और वज्री के अर्क के गुण

अर्कार्कः प्लीहगुल्मार्शश्लेष्मोदरकृमीन् हरेत् ॥
वज्रीजो लेपतो हन्याद्व्रणशोथोदरज्वरान् ॥५०॥

आक का अर्क प्लीह (वाई कोख की गांठ), गुल्म, बवासीर, कफ और उदररोग को और जंतुरोग को नाश करे है। वज्री का अर्क लेप करने से घाव, सूजन, उदररोग और ज्वर इन सर्व रोगों को दूर करे है॥५०॥

सातला और कलिहारी के अर्क के गुण

सातलोत्थः कफानाहपित्तोदावर्तशोथहा ॥
लांगल्या लेपतो हन्याच्छोफार्शोव्रणरोगजान् ॥५१॥

सातला (थूहर के भेद) का अर्क कफ, पित्त, उफान और सूजन को दूर करता है। लांगली (कलिहारी) का अर्क लेप करने से शोफ (सूजन) अर्श (बवासीर) और व्रण (फोड़ा) इन रोगों के विकारों को नाश करे है॥५१॥

कनेर और चचेड़े के अर्क के गुण

करवीरोद्भवो नेत्रकोपकुष्ठव्रणापहः ॥
चाण्डालोत्थस्तु विषवद्भक्षणे लेपने महत् ॥५२॥

करवीर (कनेर) का अर्क आंखों को आराम देने वाला है और कुष्ठरोग

और फोड़ा इन सर्व रोगों को दूर करता है। चचेड़े का अर्क भक्षण करने में विष के समान है, परन्तु लेपन करने में उत्तम है और अनेक रोगों को नाश करता है।।५२।।

धतूरा और वासा के अर्क के गुण

धत्तूरजो हरेल्लेख्यायूकाकृमिविषादिकम् ।।
वासोद्भवो ज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः ।।५३।।

धतूरे का अर्क लीख, जुवां कीड़ों के विषादि को दूर करने वाला है, वासा का अर्क ज्वर, छर्दि, प्रमेह, कुष्ठ और क्षय का नाश करता है।।५३।।

पित्तपापड़े और नीम के अर्क के गुण

पर्पटो हन्ति पित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान् ।।
निम्बजः श्रमतृट्कासज्वरारुचिकृमिप्रणुत् ।।५४।।

पर्पट (चित्तपापड़ा) का अर्क रक्तपित्त, भ्रम, प्यास, कफ और ज्वर इन सर्व रोगों को नाश करता है। नीम का अर्क खेद, तृष्णा, खांसी, ज्वर अरुचि और कृमिरोग इन सर्व रोगों को नष्ट करता है।।५४।।

बकायन और पारिभद्र के अर्क के गुण

महानिम्बोद्भवो गुल्मसूषिकाविषनाशनः ।।
पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोथमेदकृमिप्रणुत् ।।५५।।

महानींब का अर्क गांठ और मूषक के जहर को नाश करता है पारिभद्र नामक नीम का अर्क वात, कफ, सूजन, भेद और कीड़ों को दूर करे है।।५५।।

कचनार और कोविदार के अर्क के गुण

कञ्चनारो गण्डमालागुदभ्रंशव्रणापहः ।।
कोविदारस्तु पित्तास्रप्रदरक्षयकासहा ।।५६।।

कचनार का अर्क गंडमाला, गुदभ्रंश और फोड़ा को दूर करे है। कोविदार (मिर्च) का अर्क पित्त और रक्तविकार को उत्तम है और

प्रदर (योनिरोग), क्षय और खांसी इन रोगों को दूर करता है।।५६।।

सहिंजने और मीठे सहिंजने के अर्क के गुण

सौभाञ्जनार्को रुचिकृच्छुक्रलो ग्राहिदीपनः ।।
मधुशिग्रूद्भवो हन्याद्विद्रधिश्वयथुकृमीन् ।।५७।।

सौभाञ्जन(सहिजना) का अर्क रुचि और वीर्य को अधिक करता है; मल को रोकता है और जठराग्नि को दीप्त करता है। मधुशिग्रूद्भवा कहिये मीठे सहिंजने का अर्क विद्रधि (दाद), श्वयथु, आलस्य और क्रमि (कीड़ा) इन सर्व को दूर करता है।।५७।।

सफेद सहिजने और गिरिकन्या के अर्क के गुण

शिग्रुजो विषहृन्नेत्र्यो नस्येनाक्षिशिरोर्तिहा ।।
गिरिकन्या कुष्ठशूलशोथव्रणविषापहः ।।५८।।

शत्रु नाम सहिजने का अर्क विष को नाश करता है, नेत्रों को सुख देता है और सूखने से शिर और नेत्र के रोग को नाश करता है। गिरिकन्या नाम ग्वारपट्टा का अर्क कुष्ठरोग, शूल, सूजन, घाव और अनेक विषों को नाश करता है।।५८।।

सिन्दुवार (सिंदुरियां) और सिंभालु के अर्क के गुण

सिन्दुवारोद्भवो हन्ति शूलशोथाममारुतान् ।।
निर्गुण्ड्यर्को हरेज्जन्तुव्रणकुष्ठारुचिं लघुः ।।५९।।

सिंदुवारोद्भव (सिंदुरिया) का अर्क शूल, सूजन और आमवातादि रोगों को दूर करता है। निर्गुंडी (सिंभालु) का अर्क जंतुओं के व्रण (घाव) और अरुचि को हरता है और हलका भी है।।५९।।

कुड़ा और करंजवे के अर्क के गुण

कोटजो दीपनः शीतः कफतृष्णामकुष्ठजित् ।।
करञ्जः कफगुल्मार्शोव्रणकृमिव्रणापहः ।।६०।।

कुजटका अर्क अग्नि को दीपन करता है, शीतल है और कफ प्यास और

कच्चे कुष्ठ को जीतता है। करंजवे का अर्क कफ, गांठ, बवासीर, फोड़ा, घाव और कीड़ा इन सर्व रोगों को नाश करता है।।६०।।

घीकरञ्जवे और करंजी के अर्क के गुण

घृतकारञ्जको भेदी वातार्शःक्रमिकुष्ठजित् ।।
करंज्यो वमिवातार्शक्रमिकुष्ठप्रमेहजित् ।।६१।।

घृत करंजवे का अर्क वादी बवासीर को हरता है और कीड़े और कुष्ठ को भी दूर करता है। सामान्य करंजी का अर्क उबकाई, बादी. बवासीर, क्रमिरोग. कुष्ठ और प्रमेह को दूर करता है।।६१।।

सफेद घुंघुची और लाल घुघुची के अक के गुण

उच्चटार्कः केशकरो वातपित्तज्वरापहः ।।
गुञ्जायाश्च हरेच्छ्वासमुखशोषभ्रमिज्वरान् ।।६२।।

उच्चटा नाम घुंघुची का अर्क केशों को खूब बढ़ाता है और वात, पित्त और ज्वर को दूर करता है। लाल घुंघुची नाम चिरमिटी का अर्क श्वास मुखसूखन, भ्रम और ज्वर को नाश करता है।।६२।।

कौंच और मांसरोहिणी अर्क के गुण

कपिकच्छूद्भवो वृष्यो बृंहणो वाजिकर्मकृत् ।।
मांसरोहिण्युद्भवस्तु वृष्यो दोषत्रयापहः ।।६३।।

कपिकच्छु (कौंच) का अर्क शरीर को बढ़ाने वाला है और जवानी को देता है। मांस रोहिणी का अर्क पुष्टिकारी है और तीनों दोषों को दूर करता है।।६३।।

चीढा और कांटेदार कटैली के अर्क के गुण

चिह्लजः कुरुते पुष्टिं तत्फलं मारयेज्जनान् ।।
कंटकार्या दीपनश्च श्लेष्मशोथहरोऽरुचिः ।।६४।।

चिह्ल कहिये चीढ़ा का अर्क पुष्टिकारक है और उसका फल विष समान है, मनुष्यों को मारता है कांटेदार कटैली का अर्क दीपन करता है और कफ व सूजन को दूर करता है तथा अरुचि करता है।।६४।।

वेत तथा जलवेत के अर्क के गुण

वेतसो हरते दाहं शोथार्शोयोनिरुग्व्रणान् ॥
जलवेतसजो ग्राही शीतो वातप्रकोपनः ॥६५॥

वेत का अर्क दाह, सूजन, मस्सा, योनिरोग और फोड़ा आदि का नाश करता है। जलवेत का अर्क मल को बांधे है, शीतल है और वायु के दोष को दूर करता है॥६५॥

समुद्रफल और अंकोट के अर्क के गुण

हिज्जलार्कस्तु हरते चराचरविषं स्फुटम् ॥
अंकोटकस्तु शूलामशोथग्रहविषापहः ॥६६॥

हिज्जल (समुद्रफल) का अर्क चर और अचर यानी दोनों विषों को हरता है। अंकोट (चिलगोजा) का अर्क शूल, आम, सूजन और विष को दूर करता है॥६६॥

खरैंटी और वरियारे के अर्क के गुण

बलार्को ग्राहिवातास्रपित्तास्रक्षतनाशनः ॥
अतिपूर्वबलार्कस्तु मूत्रातीसारनाशनः ॥६७॥

बला (खरैंटी) का अर्क मल को बांधता है, वातरक्त, पित्तरक्त और घाव को दूर करता है। अतिबला (वरियारा) का अर्क मूत्रातिसार और वात मूत्र का नाश करता है॥६७॥

सहदेई और गंगरेण के अर्क के गुण

महाबलार्को हरते कृच्छ्रघातानुलोमनः ॥
नागपूर्वबलार्कश्च मूर्च्छामोहहरः परः ॥६८॥

महाबला (सहदेई) का अर्क मूत्रकृच्छ्र और घातरोग (भारी चोट) को नाश करने वाला है। नागबला (गंगेरण) का अर्क मूर्च्छा और मोह को दूर करने वाला होता है॥६८॥

पतिजिया और स्वर्णवल्ली के अर्क के गुण

लक्ष्मणार्कस्य सेवेद्वै बन्ध्याऽपि लभते सुतम् ॥

स्वर्णवल्याः शिरःपीडां त्रिदोषान् हन्ति दुग्धदः ।।६९।।

लक्ष्मणा (पतिजिया) का अर्क यदि खाया जावे तो वन्ध्या भी अवश्य पुत्र पावेगी। स्वर्णवल्ली (काकवल्लरी) का अर्क शिर के दर्द को और त्रिदोष को दूर करता है और दुग्ध को भी बढ़ाता है।।६९।।

कपास तथा बांस के अर्क के गुण

कार्पासार्कः शिरः शंखकर्णरोगान्विनाशयेत् ।।
वंशजः कफपित्तघ्नः कुष्ठास्त्रव्रणशोथजित् ।।७०।।

कपास का अर्क शिर के रोग, कनपटी के रोग और कर्ण रोग इन सब रोगों को दूर करता है। बांस का अर्क कफपित्त रोग का नाश करता है और कुष्ठ, रक्त, फोड़ा और सूजन को दूर करता है।।७०।।

नाल और मुलहठी के अर्क के गुण

नालार्को बस्तियोन्यार्तिं दाहपित्तविसर्पहृत् ।।
यष्टया जयेज्ज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ।।७१।।

नाल (कमल की डाडी) का अर्क बस्ति (पेडू अर्थात् नाभि और मूत्रस्थान का मध्यभाग) और योनि की पीड़ा को और दाह (जलन), पित्त और विसर्परोग (जो देह में फैलकर फुंसी कर देता है) इनको दूर करता है। यष्टी (मुलहठी) का अर्क ज्वर छर्दि (वाति) कुष्ट व अतिसार इत्यादि रोगों को नाश करता है।।७१।।

सफेद निशोथ और शरफोंका के अर्क के गुण

श्वेतत्रिवृद्भवोऽप्यर्को पित्तशोथोदरापहः ।।
शरपुंखोद्भवः प्लीहान् गुल्मव्रणविषापहः ।।७२।।

सफेद निशोथ का अर्क पित्त, सूजन और उदररोग को दूर करता है। शरफोंका का अर्क प्लीह संबंधी रोग, गांठ, फोड़े और विष को दूर करता है।।७२।।

जवास और गोरखमुंडी के अर्क के गुण

जवासजो मदभ्रान्तिपित्तासृक्कुष्ठकासजित् ।।

मुण्डजोऽत्यन्तबलकृत्प्लीहमेहानिलार्तिजित् ॥७३॥

जवास का अर्क मद (नशा), भ्रांति (मोह), पित्त, रक्तविकार, कुष्ठ व्र खांसी इनको जीतता है। गोरखमुंडी का अर्क बहुत बलकारी है और प्लीह (पेट की गांठ), प्रमेह विकार और वात की पीड़ा को नाश करता है॥७३॥

अपामार्ग और लाल अपामार्ग के अर्क के गुण

अपामार्गोद्भवश्छर्दिकफमेदोनिलापहः ॥
आरक्तापामार्गभवो धातुस्तम्भनकारकः ॥७४॥

अपामार्ग (ओंगा) का अर्क वांति, कफ, मेदा का विकार और वात को दूर करता है। लालओंगे का अर्क धातुस्तम्भन (रुकावट) करता है॥७४॥

तालमखाने के और अस्थिसंहारक के अर्क के गुण

कोकिलाक्षिभवः शीघ्रं सेकाच्छोथान्निवारयेत् ॥
अस्थिसंहारकायास्तु भग्नसन्धानकृच्छिवे ॥७५॥

कोकिलाक्षि (तालमखाना) का अर्क बहुत ही जल्दी से फोड़ा फुंसी और सूतन को दूर करता है। हे शिवे (कल्याणरूप से) मंदोदरी! अस्थिसंहार का अर्क घाव को पूरता है। हे शिवे कल्याणरूप से यहां पर रवण ने मंदोदरी से कहा है॥७५॥

पुनर्नवा और राजबला के अर्क के गुण

पुनर्नवाया रक्ताया ग्राही पित्तास्रनाशनः ॥
प्रसारिण्या वातहरो वृष्यः सन्धानकृत्सरः ॥७६॥

नर्नवा (सांठी) का अर्क रक्तविकार को दूर करता है और मल को ोकता है और पित्तरक्त को दूर करता है। प्रसारणी (राजबला) का र्क वात को हरता है और पोषक है, घाव को पूर्ण कर देता है और ाचक भी है॥७६॥

ग्वारपाठा और सफेद पुनर्नवा के अर्क के गुण

कुमारिकाया ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटकाञ्जयेत् ॥
पुनर्नवायाः श्वेतायाः सर्वनेत्रामयापहः ॥७७॥

कुमारिका (ग्वारपाठा) अर्क गांठ, अग्नि से दग्ध और शीतला के रोग में फुँसियों को दूर करता है। सफेद सांठी का अर्क सम्पूर्ण नेत्ररोगों को दूर करता है॥७७॥

सारिका और भँगरे के अर्क के गुण

सारिवाया वह्निमान्द्यकासामविषनाशनः ॥
भृङ्गिराजस्य जातोऽर्कःकेश्यो रुच्यःशिरोऽर्तिहृत्।७८॥

सारिवा (सफेद सांवा) का अर्क मन्दाग्नि, खांसी, आव और विष को दूर करता है। भंगरे का अर्क बाल को अधिक बढ़ाता है, त्वचा (खाल) को निर्मल करता है और शिर के दर्द को दूर करता है॥७८॥

शणपुष्पी और चिरायते के अर्क के गुण

शणपुष्पीलतायास्तु अर्कः पित्तकफापहः ॥
त्रायन्त्यर्कः शूलविषविलेपी ज्वरनाशनः ॥७९॥

शणपुष्पी की लता (वेली) का अर्क पित्त और कफ का नाश करताहै। त्रायंती नाम चिरायते के फल का अर्क शूल और कफ का नाश करता है। विष को दूर करता है और मल को लेपन करता है और ज्वर को नाश करता है॥७९॥

मुरह और मकोय के अर्क के गुण

मूर्वाया मेहरोगघ्नः कण्डूकुष्ठज्वरापहः ॥
काकमाच्या नेत्रहितः छर्दिहृद्रोगनाशनः ॥८०॥

मूर्वा (मुरह) का अर्क प्रमेह को दूर करता है और खाज, कुष्ठ व ज्व का नाश करता है। काकमाची (मकोय) का अर्क नेत्रों को नफा दे वाला है और छर्दि (वांति) और हृदय के रोगों का नाश करत है॥८०॥

काकनासा और काकजंघा के अर्क के गुण

काकनासाभवो वामी शोथार्शः श्वित्रकुष्ठनुत् ॥
काकजंघोद्भवो हन्याज्ज्वरकंडूविषकृमीन् ॥८१॥

काकनासा का अर्क वमनकारी होता है और सूजन, बवासीर और चित्ती कुष्ठ का नाश करता है। काकजंघा का अर्क ज्वर, खुजली, विष और कृमि रोग आदि को दूर करता है॥८१॥

नागपुष्पी और मेंढ़ासींगी के अर्क के गुण

नागिन्यस्तु हरेच्छूलयोनिदोषवमिकृमीन् ॥
मेषशृङ्ग्याः श्वासकासव्रणश्लेष्माक्षिशूलहा ॥८२॥

नागिनी (नागपुष्पी) का अर्क शूल, योनिरोग, वांति और कीड़ों को दूर करता है। मेढ़ासींगी का अर्क श्वास, खांसी, फोड़ा, कफ और नेत्रपीड़ा को हरता है॥८२॥

हंसपदी और सोमवल्ली के अर्क के गुण

हंसपद्या हन्ति लूतां भूतरक्तविषव्रणान् ॥
सोमवल्ल्यास्त्रिदोषघ्नः क्षीरकृच्च रसायनः ॥८३॥

हंसपदीका अर्क मकड़ी, भूतप्रेतबाधा, रक्तविकार, विष, फोड़ा इत्यादि रोगों को दूर करता है। सोमवल्ली का अर्क तीनों प्रकार के दोषों को दूर करता है और दुग्ध को बढ़ाता है, रसायन है और अमृत के समान है॥८३॥

आकाशवेली और पातालगरुडी के अर्क के गुण

आकाशवल्ल्याः शीतोऽर्कः पित्तश्लेष्मामनाशनः ॥
पातालगरुडीजार्को वृष्यः पवननाशनः ॥८४॥

आकाशवेल का अर्क शीतल है, पित्त, कफ और आव के विकार का नाश करता है। पातालगरुडी (छरहिरा) का अर्क बल करता है और वायु के अनेक विकारों को दूर करता है॥८४॥

तुलसी और मोढ़पत्र के अर्क के गुण

वृन्दावृक्षोद्भवोऽर्कस्तु विषरक्षोव्रणापहः ॥
वटपत्रीभवश्चोष्णो योनिमूत्रगदापहः ॥८५॥

वृंदावृक्ष नाम तुलसी का पत्ते का अर्क विष, राक्षस बाधा वगैरा और फोड़ा को दूर करता है। वटपत्री (मूढ़पत्र) का अर्क गर्म होता है और योनिरोग को और मूत्ररोग को दूर करता है।।८५।।

हिंगुपत्री और वंशपत्री के अर्क के गुण

हिङ्गुपत्र्या विबंधार्शः श्लेष्मगुल्मानिलापहः ॥
वंशपत्र्याः पाचनोष्णो हृद्बस्तिगदसंघहृत् ॥८६॥

हिंगुपत्री का अर्क बंध, बवासीर, कफ की गांठ और वायु को नाश करता है। वंशपत्री का अर्क पाचन है, गर्म और हृदय और वस्ति के संपूर्ण रोगों को दूर करता है ।।८६।।

मछेछी और सरहटी के अर्क के गुण

मत्स्याक्ष्यर्को ग्राहिशीतकुष्ठपित्तकफास्रजित् ॥
सर्पाक्ष्या रोपणः सर्पवृश्चिकोद्भवदंशहृत् ॥८७॥

मत्स्याक्षी (मछेछी) का अर्क मल को रोकता है और शीतल है कुष्ठ, पित्त, कफ और रक्त को नाश करता है। सरहटी का अर्क अन्न को पक्का करता है और सांप बिच्छू के विष को नाश करता है।।८७।।

शंखपुष्पी (शंखाहुली) और अर्कपुष्पी के अर्क के गुण

शंखपुष्प्या विषहरः स्मृतिकान्तिबलाग्निदः ॥
अर्कपुष्प्याः कृमिश्लेष्ममेहपित्तविकारनुत् ॥८८॥

शंखपुष्पी नाम शंखाहुली का अर्क विषों को दूर करता है और स्मरण, बल और जठराग्नि को बढ़ाता है। अर्कपुष्पी का अर्क कीड़ा, कफ, प्रमेह और पित्तविकार को नाश करता है।।८८।।

लाजावन्ती और तुम्बी के अर्क के गुण

लज्जालुकाया भगरुग्रक्तपित्तातिसारहृत् ॥

अलम्बुषासम्भवाऽकः कृमिपित्तकफापहः ॥८९॥

लज्जालु नाम लाजावंती का अर्क योनिरोग, पित्तरक्त और अतिसार को दूर करता है। अलंबुषा नाम तुंबी का अर्क कृमिरोग पित्त और कफ को दूर करता है॥८९॥

दुद्धी और भुईआमले के अर्क के गुण

दुग्धिकायाः कफकरो वृष्यस्तम्भी कृमिप्रणुत् ॥
भूमिवल्ल्याः कासतृष्णाकफपाण्डुहृत्तापहः ॥९०॥

दुद्धी का अर्क कफकारी होता है, बलकारी होता है और रुकावट करे है और कृमिरोग को दूर करता है। भूमिवल्ली (आंवली) का अर्क खांसी, प्यास, कफ, पीलिया और हृदय के ताप को दूर करता है॥९०॥

ब्राह्मी और ब्रह्ममण्डुकी के अर्क के गुण

ब्राह्म्या बुद्धिप्रदश्चार्कः षण्मासाभ्यासतः कविः ॥
ब्रह्ममण्डुकिजः पाण्डुविषशोषज्वरान्हरेत् ॥९१॥

ब्राह्मी का अर्क बुद्धि को बढ़ाता है और यदि छः मास इसका अर्क सेवन करे तो महाकवि होता है। ब्रह्ममंडूकपर्णी का अर्क पीलिया, विष, सूजन, ज्वर इन सर्व रोगों का नाश करता है॥९१॥

गोमा और सूर्यमुखी के अर्क के गुण

द्रोणपुष्प्या ज्वरश्वासकामलाशोथजंतुजित् ॥
सूर्यमुख्या हरेत्स्फोटयोनिरुधकृमिपाण्डुताम् ॥९२॥

द्रोणपुष्पी (गोमा) अर्क ज्वर, श्वास, कामला, सूजन इन रोगों को हरता है। सूर्यमुखी का अर्क फोड़ा फुनसी, योनिरोग, कृमि और पीलिया इन सर्व रोगों को दूर करता है॥९२॥

बाझककोड़ी और मार्कण्डिका के अर्क के गुण

वन्ध्याकर्कोटकीजातः सर्पदर्पव्रणापहः ॥
मार्कण्डिकाया दुर्गंधिविषगुल्मोदरापहः ॥९३॥

वांझककोड़ी का अर्क सांप काटे के व्रण का नाश करे है। मार्कंडिका का

अर्क दुर्गंधि, विष, गांठ और उदररोगों को दूर करता है।।९३।।

दारुहलदी और काले धतूरे के अर्क के गुण

देवदाल्याः शूलगुल्मश्लेष्मार्शोवातजित्परम् ।।
धत्तूरजो ग्राहिकौजोवह्निकृद्व्रणदाहहृत् ।।९४।।

देवदाली नाम दारुहलदी का अर्क शूल, गांठ, कफ, बवासीर और वातरोगों का विशेष करके नाश करता है। धतूरे का अर्क कब्ज करता है, बलकारी है, जठराग्नि को अधिक करता है और फोड़ा, दाह और जलन का नाश करता है।।९४।।

गोभी और नागपत्र के अर्क के गुण

गोजिह्वाया मेहकासव्रणसारज्वरापहः ।।
नागपुष्प्या सर्वविषसर्वग्रहविनाशनः ।।९५।।

गोभी का अर्क प्रमेह, खांसी, व्रण, शोथ और ज्वर को नाश करता है। नागपुष्पी (नागपत्र) का अर्क सर्व प्रकार के विष का और सम्पूर्ण ग्रह की बाधा को दूर करता है।।९५।।

वरवेलके और नकछिंकनी के गुण

वेल्लन्तरोर्मूत्राघाताश्मरीयोन्यनिलार्तिजित् ।।
छिक्कन्या वह्निरुचिकृदर्शः कुष्ठकृमिप्रणुत् ।।९६।।

वरवेल का अर्क मूत्राघात, अश्मरी (पथरी), योनिरोग तथा वातपीड़ा को दूर करता है। नकछिंकनी का अर्क अग्नि अधिक करता है और रुचि बढ़ाता है और बवासीर कुष्ठ को औार कृमिरोग को दूर करता है।।९६।।

कुहुंदरा और सुदर्शन के अर्क के गुण

कौहुन्दरो ज्वरं रक्तमुखशोषकफं हरेत् ।।
सुदर्शनार्कश्चात्युष्णः कफास्त्रं वातरोगजित् ।।९७।।

इति श्रीरावणकृतार्कप्रकाशे तृतीयं शतकं समाप्तम् ।।३।।

कुहुंदरे का अर्क ज्वर, रक्तविकार, मुखसूजन और कफ को नाश करता है। सुदर्शन का अर्क अधिक गर्म है और कफ, रक्तविकार और वात रोग को हरता है।।९७।।

इति पण्डितमुकुन्दरामकृतार्कसंग्रह हिन्दीटीकायां तृतीयं शतकं समाप्तम् ।।३।।

******
****

चतुर्थं शतकम्

रावण उवाच

षड्रस और उनका बलाबल

सिताचिंचोषणपटुबिभीतककटीलका: ।।
एतत्षड्रसमित्युक्तं विपरीतबलाधिकम् ।।१।।

रावण कहता है कि, सिता (मिश्री), चिंच (इमली), उष्ण (मिर्च), पटु (परवल), बिभीतक (बहेड़ा), करीलक (करेला) यह षड्रस कहे हैं, इनमें से सब एक से एक विपरीत क्रम से बली हैं जैसे करेला से बिभीतक, बिभीतक से परवल, परवल से मिर्च, मिर्च से इमली और इमली से मिश्री अधिक बली होती है।।१।।

षड्रस के गुण

एषामर्क: प्रत्यहं च पिबेत्पलयुगं प्रिये ।।
अरुचिं चैव मन्दाग्निं स्वप्नेऽपि स न पश्यति ।।२।।

रावण बोला कि, हे मंदोदरी। इनको नित्य ही चार पल कोई पीवे तो उस मनुष्य को अरुचि और मंदाग्नि कभी स्वप्न में भी नहीं होगी।।२।।

उन्मत्तपञ्चक और उसके अर्क के गुण

उन्मत्तो सोमविजया जातीपत्री च खाखसम् ।।
उन्मत्तपञ्जकं चैतद्यवानी पञ्चभिः समा ।।३।।
दुग्धनिर्वापितादस्मादर्को लेह्यो यथोक्तितः ।।
खादेत्पिशाचवन्मत्तो रमेच्च रमणीशत्तम् ।।४।।

उन्मत्त (धतूरा), सोम (सोमलता), विजया (भांग) जातीपत्री (जावित्री) और खसखस यह सब उन्मत्त पञ्चक है इस पञ्चक को दुग्ध में संयुक्त करे और पूर्व कह चुके हैं उसी विधि से अर्क खींचे और प्रमाण सहित भक्षण करे तो वह मनुष्य पिशाच के तुल्य. उन्मत्त होकर सौ स्त्रियों से रमण करे।।३-४।।

त्रिसुगंध और उसके अर्क के गुण

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगंधमिति स्मृतम् ।।
तदर्को मुखदौर्गंधिच्छेदनो मलभेदनः ।।५।।

तज, इलायची, पत्रज यह सब बराबर लेवे, इसको त्रिसुगंध कहते हैं। इसका अर्क मुख की दुर्गंध को दूर करता है और मल का भेदन करता है।।५।।

चातुर्जात और उसके अर्क के गुण

नागकेशरमेला च पत्रकं दारुचीर्णकम् ।।
चातुर्जातमिदं ज्ञेयं वह्निकृच्च विषापहम् ।।६।।

नागकेशर, तज, इलायची, पत्रज, दालचीनी इसको चातुर्जात जानना चाहिये, इसका अर्क जठराग्नि को बढाता है और विष को दूर करता है।।६।।

त्रिफला और उसके अर्क के गुण

पथ्या बिभीतको धात्री त्रिफलैषा प्रकीर्तिता ।।
एतदर्को मेहकुष्ठविषमज्वरपित्तनुत् ।।७।।

हरड, बहेड़ा, आंवला यह त्रिफला कहाता है, त्रिफला का अर्क प्रमेह,

कुष्ठ, विषमज्वर और पित्त को दूर करता है।।७।।

त्रिकुटा और उसके अर्क के गुण

विश्वोपकुल्या मरिचं त्रयं त्रिकटुरुच्यते ।।
हरेद्गुल्मकफस्थौल्यमेदश्लीपदपीनसान् ।।८।।

विश्व (सोंठ), पीपल, मिर्च यह तीनों त्रिकुटा कहाते हैं, इनका अर्क गांठ, कफ, स्थूलता (मुटाई), मेदरोग, श्लीपदरोग और पीनस को दूर करता है।।८।।

चतुरूषण और उसके अर्क के गुण

पिप्पली पिप्पलीमूलं मरिचं विश्वभेषजम् ।।
चतुरूषणमित्युक्तमेतदर्कोऽग्नितत्परः ।।९।।

पीपल, पीपलामूल, स्याह मिर्च, सोंठ यह चारों औषध चतुरूषण कहाती है, इनका अर्क जठराग्नि को प्रदीप्त करता है।।९।।

पञ्चकोल और उसके अर्क के गुण

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यचित्रकनागरैः ।।
पञ्चकोलमिदं गुल्मप्लीहानाहोदरापहम् ।।१०।।

पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, यह सब पंचकोल कहाते हैं, इनका अर्क गुल्म (गांठ), प्लीह, वाईं कोख की शूल और उदररोग को नाश करता है।।१०।।

षडूषण और उसके अर्क के गुण

कणामूलोषणकणा चव्यचित्रकनागरैः ।।
एतत्षडूषणं चोष्णं दीप्तिकारि विषापहम् ।।११।।

पीपलामूल, पीपल, मिर्च, चव्य, चित्रक, सोंठ यह षडूषण है, इसका अर्क गर्म है, जठराग्नि को दीप्त करता हैं और विष को दूर करता है।।११।।

चतुर्बीज और उसके अर्क के गुण

मेथिका चंद्रसूरश्च कालाजाजी यवानिका ।।

चतुर्बीजमिदं प्रोक्तं शूलाध्मानसमीरजित् ॥१२॥

मेथी, चन्द्रसूर (हालम), काला जीरी और अजवायन, ये चतुर्बीज कहे जाते हैं, इनका अर्क शूल, अफरा और वादी वगैरे का नाश करता है॥१२॥

अष्टवर्ग और उसके अर्क के गुण

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ ऋद्धिवृद्धिके ॥
अष्टवर्गोऽयमर्कस्तु भग्नसंधानकृत्परः ॥१३॥

जीवक (विजयसार), ऋषभ (काकरासिंगी), मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि और वृद्धि इनका अष्टवर्ग है, इनका अर्क कटे हुए घाव को भरने वाला और जोड़ने वाला है॥१३॥

बृहत्पञ्चमूल और उसके अर्क के गुण

बिल्वोऽग्निमंथः स्योनाकः पाटला गणकारिका ॥
पञ्चमूलं बृहत्प्रोक्तं तदर्कोऽत्यग्निदीपनः ॥१४॥

बेल, अरणी, सोनापाठा, पाठा, गंगरेण यह बृहत्वञ्चमूल कहा गया है, इसका अर्क जठराग्नि को दीप्त करता है॥१४॥

साधारण पंचमूल और उसके अर्क के गुण

शालिपर्णी पृश्निपर्णी वार्ताकी कण्टकारिका ॥
गोक्षुरः पञ्चमूलं स्यात्तदर्कश्चाश्मरीप्रणुत् ॥१५॥

शालिपर्णी, पिठवन, वार्ताकी, कटहरी और गोखरू यह साधारण पंचमूल कहाता है, इसका अर्क अश्मीरी का नाश करता है॥१५॥

दशमूल और उसके अर्क के गुण

उभाभ्यांपञ्चमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ॥
तदर्कः सूतिकारोगत्रिदोषज्वरशोथहा ॥१६॥

इन दोनों पञ्चमूलों को दशमूल कहते हैं, इसका अर्क सूतिकारोग को त्रिदोष को, ज्वर को तथा सूजन को नाश करता है॥१६॥

जीवनीयगण और उसके अर्क के गुण

जीवंती मधुकं मुद्गा शालिपर्ण्यष्टवर्गकः ॥
जीवनीयगणस्यार्कः सर्वरोगविनाशनः ॥१७॥

जीवनीया, महुआ, मूंगफली, माषपर्णी, शालिपर्णी और पूर्वोक्त अष्टवर्ग इनको जीवनीयगण कहते हैं, इसका अर्क सम्पूर्ण रोगों को दूर करता है॥१७॥

सुगन्धगण

कर्पूरोमृगनाभिश्च कस्तूरी लतिका तथा ॥
गन्धमार्जारचौर्यं च श्रीखंडं पीतचन्दनम् ॥१८॥
कालीयकं च रक्ताङ्गं पतङ्गमगुरुद्वयम् ॥
वेददारुश्च सरलस्तगरं पद्मकं पुरः ॥१९॥
सरनिर्यासकी रालः कुन्दरश्च शिलारसः ॥
सिह्लकश्च लवङ्गं च जातीपत्रीफलं तथा ॥२०॥
एलाद्वयं दारुचीनी त्वक्पत्रं नागकेसरम् ॥
बालकं वीरणं मांसी कुंकुमं रोचना नखः ॥२१॥
सुगन्धवीरणं वाला जटामांसी मुरा घनः ॥
सटीकर्चूर एकाङ्गी सुगन्धोऽयं गणोत्तमः ॥२२॥

कपूर, कस्तूरी, सृक्का, कस्तूरी, वेली, सुगंधवाला, मार्जारचौर्य्य (कस्तूरी का भेद), श्वेत चन्दन, पीतचन्दन, कालीपक (कृष्णागरु), रक्तांग (रक्तचन्दन), पतङ्ग, दोनों देवदारु, सरल, तगर, पद्मक, गूगल, सरनिर्यास, राल, पालक, लोहबान, यावन, लौंग, जावित्री, जायफल, दोनों इलायची, दालचीनी, तज, पत्रज, नागकेशर, नेत्रवाला, मांसरोहिणी, गांड़र, दूब, कांस, मांसी, केशर, गोरोचन, नखनखी, सुगंधित खस, नेत्रवाला, जटामांसी मुरहटी और कचूर ये सर्व औषधियां इकट्ठी करने से इसका नाम सर्वोत्तम सुगंधगण है॥१८-२२॥

सुगन्धगण के अर्क के गुण

विधिनिष्कासितो योऽर्को रुच्यः पाचनदीपनः ।।
मुखदौर्गन्ध्यहृन्नेत्र्यो लेपान्मेदश्रमापहः ।।२३।।

इनका अर्क रोचक होता है, पाचन होता है, जठराग्नि को प्रदीप्त करता है, मुख की दुर्गन्धि को नाश करता है, नेत्रों को भी फायदा करता है लेपन करने से मेद के रोग और श्रम को दूर करता है।।२३।।

वीरण

कुशः काशश्च दर्भश्च कत्तृणं भूतृणं तथा ।।
श्वेतदूर्वा नीलदूर्वा गंडदूर्वेति वीरणम् ।।२४।।

कुश, काश, डाभ, तृण, भूतृण, घास, श्वेत, दूब, नील दूब, गंड दूब और गांड़र यह सब वीरण संज्ञक है।।२४।।

वीरणार्क के गुण

वीरणार्को हरेच्छूलं सन्धुक्षयति चानलम् ।।
क्षतसन्धायकृद्वृष्यो बलं कुर्यादनेकधा ।।२५।।

वीरण का अर्क शूल को दूर करता है, अग्नि को दीप्त करता है, कटे हुए घावों को भर देता है और अनेक प्रकार के बल को देने वाला होता है।।२५।।

दुग्धकन्दगण

अश्वगन्धा च मुसली विदारी च शतावरी ।।
क्षीरवाराहिका चेति दुग्धकन्दगणस्त्वयम् ।।२६।।

असगन्ध, मुसली, विदारीकन्द, शतावरी और क्षीरवाराहिका यह सब दुग्धकन्दगण कहाता है।।२६।।

दुग्धकन्दगणार्क के गुण

बालको लभते वीर्यं रिरंसुर्बालया सह ।।
अस्यार्कस्य च पानेन कुर्यात्षोडशवार्षिकम् ।।२७।।

इसका अर्क बालकों के वास्ते पुष्टि को देने वाला है, वीर्य को अधिक

करने वाला है, सुन्दर बलवाली तरुण स्त्री के संग संभोग करने की इच्छा देने वाला है और इसका अर्क पीने से वृद्ध पुरुष सोलह वर्ष का तरुण सा हो जाता है और वृद्ध स्त्री भी सोलह वर्ष की कन्या सी हो जाती है।।२७।।

लघुदन्त्यादिगण और उसके अर्क के गुण

लघुदन्ती बृहद्दन्ती इन्द्रवारुणिनीलिके ।।
वासयेच्च सुगन्धेन राजयोग्यं विरेचनम् ।।२८।।

लघुदन्ती, वृहद्दंती, इन्द्रवारुणी और नील इनके अर्क को सुगन्ध से सुगन्धित कर लेवे तो यह अर्क राजयोग्य (महाप्रतापी) रेचक हो जाता है।।२८।।

बड़ के फलों का अर्क और उसके गुण

दुग्धमिश्रैर्वटफलैः कमलाच्छादनोद्भवः ।।
वरोऽर्कः शीतलो ग्राही वर्ण्यो भगसुगन्धकृत् ।।२९।।

दुग्ध से संयुक्त करे बड़ के फलों को कमल का पिधान देके अर्क खींचे तो यह अर्क शीतल होता है। मल को रोकता है और वर्ण (रंग) को उत्तम करे है और योनि को सुगंधित करे है।।२९।।

पीपल के फलों का अर्क और उसके गुण

मूलनालदलोत्फुल्लफलैर्युक्ता हि पद्मिनी ।।
तत्पिधानं विप्पलस्य फलानां योनिदोषनुत् ।।३०।।

पद्मिनी (कमलिनी की) जड़, नाल, पत्र और फल, फूल युक्त लेके और इनका पिधान देके पीपल के फलों का अर्क निकाले, यह अर्क योनि दोषों को दूर करता है।।३०।।

कमलबीजों का अर्क और उसके गुण

नूतनकं मृदुबीजं स्थलपद्मिनिपत्रकं महद्वीर्यम् ।।
उद्धृत्य सम्यगर्कं मण्डलमेकं समाश्नीयात् ।।३१।।
ऋतुदिनतो या ललना पिबति कुचस्तम्भनं कुर्यात् ।।

गर्भर्तुभीतिरहिता रमयति पुनः कलप्रसूनाऽपि ।।३२।।

स्थलपद्मिनी के नवीन और कोमल बीजों को लेकर उत्तम प्रकार अर्क निकाले और उपरान्त एक मंडल (१५ दिन) तक विधिपूर्वक पान करे और ऋतुदिन कहिये कि जिस दिन रजस्वला होवे उस दिन से लेकर स्त्री पीवे तो अवश्यकर कुच स्तम्भन नाम कड़े हो जावेंगे और ऋतु और गर्भ के भय से दूर होवेगी और रमण करे तो भी गर्भ और ऋतु से रहित होवेगी।।३१-३२।।

सुखपूर्वक प्रसव करनेवाला अर्क

बल्यश्चक्षोभवे तिंदोः पिहितः कुमुदैः स च ।।
उपोदकी तदर्कस्य पानात्सूते विवेदनम् ।।३३।।

तिन्दुकी वृक्ष बल बढ़ाने वाला और नेत्रों की ज्योति बढ़ाने वाला होता है, उसका कमलों के सहित पिधान देके अर्क निकाले, इस अर्क के पीने से अवश्य करके प्रथम प्रसूता भी स्त्री पीड़ा रहित होके सन्तान जनेगी।।३३।।

दुग्धवाले वृक्षों का अर्क

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारिशप्लक्षपादपाः ।।
पञ्चैते क्षीरिणो वृक्षास्तेषामर्को व्रणप्रणुत् ।।३४।।
मन्दोष्णः स्नानतो लेपाद्विसर्गामयनाशनः ।।
शोथघ्नस्तस्य सेकेन भग्नसन्धानको भवेत् ।।३५।।

न्यग्रोध (बड़), उदुम्बर (गूलर), अश्वत्थ (पीपर), पारिश (कदम्ब) और प्लक्ष (पाकर) ये पांच वृक्ष दुग्धवाले हैं, इनका अर्क फोड़ों को दूर करता है। इस अर्क से स्नान से मन्दाग्नि प्रबल हो जाता है और लेपन करने से फोड़ा फुंसी और विषैले रोग दूर होते हैं और इसके सेक से सूजन दूर होती है और कटे घाव को अवश्य करके जोड़ देने वाला होता है।।३४-३५।।

सेवंती आदि पुष्पों का अर्क

सेवंतीं शतपत्रं च वासन्तीं गुलदावदीम् ॥
चंबेलीं यथिकां चम्पां बकुलं च कदम्बकम् ॥३६॥
छादयेत्केतकीपत्रग्र्ग्राह्योऽर्को गुरुमार्गतः ॥
पुष्पार्क इति बिख्यातो मरिचैः सहितं पिबेत् ॥३७॥

सेवंती, कमलिनी, माधवी, गुलदाउदी, चंबेली, जुही, चम्पा, अशोक, कदंब इन पूर्वोक्त द्रव्यों के पुष्प लेवे और केतकी के पत्तों से ढांककर और गुरु के कथनानुसार वताये हुए मार्ग से अर्क खींच ले तो यह पुष्पार्क कहा जाता है और इसको काली मिर्च के साथ पीवे॥३६-३७॥

उपर्युक्त अर्क के गुण

मण्डलेऽर्कप्रयोगेन क्लीबोऽपि पुरुषायते ॥
वर्षाधिकं तु यक्ष्माणं हन्याच्छ्रेष्ठो मृगांकतः ॥३८॥

एक मण्डल (पक्ष) भर इस अर्क के पीने से क्लीव नाम नपुंसक भी पुरुष हो जाता है। यह अर्क एक साल तक पीवे तो यक्ष्मा (क्षय) रोग को भी दूर करता है, यह मृगांक रस से भी श्रेष्ठ गुण करता है॥३८॥

विषों के अर्कों के गुण

वत्सनाभश्च हारिद्रः सौतिकश्च प्रदीपनः ॥
सौराष्ट्रिकः शंखकश्च कालकूटहलाहलाः ॥३९॥
ब्रह्मपुत्रस्त्वमी ख्याता विषभेदास्तदकतः ॥
लेपेनगण्डमालाद्या वातरोगाः प्रयान्ति हि ॥४०॥

अब विष के भेद कहते हैं। वत्सनाभ, हारिद्र, सौतिक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शंखक, कालकूट, हालाहल और ब्रह्मपुत्र ये विषों के नौ भेद प्रसिद्ध हैं, इन सबका अर्क लेपन करने से गंड़माला आदि रोग और वातरोगों को नाश करता है॥३९-४०॥

चावलों के भेद

रक्तशालिः सकलमःपाण्डुकः शकुनाहतः ॥

सुगन्धकः कर्दमको महाशालिरदूषकः ॥४१॥
पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथा माहिषमस्तकः ॥
दीर्घशूकः काञ्चनको हायनो लोध्रपुष्पकः ॥
इत्याद्याः शालयः सन्तिबहवो बहुदेशजाः ॥४२॥

अब चावलों के भेद कहता हूं, रक्तशालि १, सकलम् २, पांडुक ३, शकुनाहत ४, सुगन्धक ५, कर्दमक ६, महाशालि ७, अदूषक ८, पुष्पांडक ९, पुण्डरीक १०, माहीषमस्तक ११, दीर्घशूक १२, कांचनक १३, हायन १४, लोध्रपुष्पक १५ इत्यादि अनेक प्रकार के चावल अनेक देशों में उत्पन्न होते हैं॥४१-४२॥

चावलों के अर्क अर्थात् मद्य

तासां पिष्टं यथालाभं क्षिपेदष्टगुणे जले ॥
यावज्जीवमुत्पत्तिं जीवानां विलयस्तथा ॥४३॥
ततो दत्त्वार्कऽयंत्रे तन्मद्यं निष्कासयेत्सुधीः ॥४४॥

तिनकी पीठी जितनी प्रकार की मिले उससे आठ गुणे जल में डाल देवे और जब उसमें जीव पैदा होने लगें और फिर मरने भी लगे तो उसको अर्कयंत्र में धरकर बुद्धिमान् उसका मद्य निकाल लेवे॥४३-४४॥

उक्त मद्य (मदिरा) के गुण

स्वाद्वी मृद्वी ग्राहिणी च बलदा स्वरहारिणी ॥
नानादुःखहरा स्निग्धा चात्युन्मादत्रिदोषजित् ॥४५॥

यह मदिरा स्वादिष्ठ, मीठी और अन्न को रोकने वाली है और बलकारक है, ज्वर को नाश करने वाली है और अनेक प्रकार की बाधा को दूर करने वाली है, चिकनी है, अति उन्माद को देने वाली है और त्रिदोष को दूर करने वाली है॥४५॥

सतुष धान्यों के अर्क (मद्य)

मुद्‌गो माषो राजमाषो निष्पावश्च मकुष्टकः ॥
चणकाढकिमांगल्यातृणकण्डः कलायकः ॥४६॥

द्विदलीकृत्य विदुषा ततश्चूर्णीकृतः पुनः ॥
पूर्ववत्साधयेन्मद्यं तुषधान्यसमुद्भवम् ॥४७॥

मूंग, उरद, काला उरद, निष्पाव (मटर), मकुष्टक (मौठ) चना, अरहर, मांगल्या (मसूर), तृणकंड (खेसारी), कलायक (केराव) इन सबकी बुद्धिमान् जन दाल बनावे और फिर चूर्ण कर लेवे उपरान्त पूर्वोक्त क्रम से मद्य निकाल लेवे यह मद्य तुष (छिलका) सहित धान्य से निकाले॥४६-४७॥

पूर्वोक्त मद्य के गुण

मासार्द्धात्कुरुते दोषं नियमात्सगुणं च तत् ॥
भूमिस्थमयनादूर्ध्वं तनुते गुणसन्ततिम् ॥४८॥
विण्मूत्ररोधमाध्मानं त्रिदोषोन्मत्ततां रुजम् ॥
शिरोजठरजंघासु व्रणानपि विनाशयेत् ॥४९॥
ईषन्मदकरं स्निग्धं हरेत्पूर्वोदितान् गदान् ॥
संवासयेत्पञ्चबाणमुद्दीपयति चानलम् ॥५०॥

यह मद्य मासार्ध (पक्ष) पर्यंत अधिक दोष करता है और पक्ष के उपरान्त नियमपूर्वक सेवन करने से गुणवाला भी हो जाता है और अयन (छः मास) पर्यन्त पृथिवी में स्थित रहे तो अनेक गुण करता है और मलमूत्र के रोध को, अफरे को, त्रिदोष से उत्पन्न हुए उन्मादादिक रोगों को तथा शिर, पेट और जांघ में फोड़ा, फुंसियों को भी दूर करता है और यह नशा भी करता है और चिकना है, पूर्वोक्त रोगों को नाश करता है और पंचबाण कहिये कामदेव को भी चैतन्य करता है और जठराग्नि को दीप्त करता है॥४८-५०॥

तेल के धान्यों के अर्क

तिलातसी च तोरी च त्रिविधश्चापि सर्षपः ॥
द्विधा राजी खसं चैव बीजं कौसुंभसंभवम् ॥५१॥
एतानि तैलधान्यानि शटितानि च पूर्ववत् ॥

ततो निष्कासयेदर्कं गन्धपाषाणवासितम् ।।५२।।

तिल, अलसी, तिड़सा और तीनों प्रकार की सरसों, दोनों तरह की राई, खसखस और कुसुम का बीज यह सब तेल के धान्य हैं पूर्ववत् इनको सानकर और गंधपाषाण की वासना देकर विधिपूर्वक यंत्र से अर्क खींचे।।५१-५२।।

तैल धान्यों के अर्क के गुण

मुहुर्विलेपतो रोगान्नरकुञ्जरवाजिनाम् ।।
हरत्येव न सन्देहः स्वर्जिक्षारसमन्वितम् ।।५३।।
सर्वेषु कर्णरोगेषु बाधिर्ये कर्णपूरणम् ।।
अनेन वर्षयेच्छंखनयनाञ्जनमाचरेत् ।।५४।।
कण्डूपुष्पं जलस्रावं पक्ष्मरोगं व्यपोहति ।।
अभ्यङ्गाद्दद्रुनाशः स्याद्बल्यं त्वच्यं च केशकृत् ।।५५।।

इस अर्क का लेपन करे तो मनुष्य, हाथी, घोड़ा, इत्यादि के रोग को खो सकता है, इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं और इसमें सज्जिखार मिलाने पर जितने कानों के रोग हैं जैसे बहिरापन, कुछ कान में गिर जावे इत्यादि सर्वदोष जाते रहेंगे और इसी को यदि शंख के संग घिसकर नेत्रों को अंजन देवे तो कंडू (खाज), पुष्प (फुल्ली), जलस्राव (जल का झरना) और पलक और भौह के सर्व रोगों को दूर करता है, इसके उवटन करने से दाद भी अवश्य नष्ट होता है और क्रांति करता है और बलकारक है तथा त्वचा और केश को बढ़ाता है।।५३-५५।।

शहद के भेद

माक्षिकं भ्रामरं क्षौद्रं पौतिकं छात्रमित्यपि ।।
दाढर्चमौद्दालकं दालमित्यष्टौ मधुजातयः ।।५६।।

अब शहत की जाति लिखते हैं कि, १ माक्षिक, २ भ्रामर, ३ क्षौद्र, ४ पौतीक, ५ क्षात्र, ६, दाढ़र्च, ७, औद्दालक और ८ दाल, ये ८ शहत की जाति है।।५६।।

ईख की जाति

पौंड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोरकः ॥
कान्तारस्तापसेक्षुश्च कांडेक्षुः सूचिपत्रकः ॥५७॥
नेपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोऽथ कोशकृत् ॥
एता द्वादशसंख्याता इक्षूणां जातयः स्मृताः ॥५८॥

अब ईख की जाति कहते हैं। पौंड्रक, २ भीरुक, ३ वंशक, ४ शतपोरक, ५ कांतार, ६ तापसेक्षु, ७ काण्डेक्षु, ८ सूचिपत्रक, ९ नैपाल, १० दीर्घपत्र, ११ नीलपोर और १२ कोशकृत् इस प्रकार ईखों की १२ तरह की जाति हैं॥५७-५८॥

ईख से उत्पन्न होनेवाले मद्य गुड़ आदि के भेद

फाणितं चैव मत्स्यण्डी गुडखण्डक मेव च ॥
सिता सितोपला च ते षड्भेदा इक्षुजा मताः ॥५९॥

फाणित, मत्स्यंड़ी, गुडीखांड़, सिता, बूरा, सितोपला (मिश्री) ये इक्षु से उत्पन्न होने वाले गुड़ आदि छः भेद हैं॥५९॥

अम्लवर्ग

आम्र आम्रातको धात्री लकुचं च कपित्थकम् ॥
नारङ्गं द्विविधा जम्बू करमर्द पियारकम् ॥६०॥
बीजपूरं च जम्बीरं निम्ब्वम्लीकाम्लवेतसम् ॥
दाडिमं पर्वतद्राक्षा द्विधा बदरतूदकम् ॥
वृक्षाम्लं हरमंथं च चांगेरी त्वम्लवर्गकः ॥६१॥

अब खटाई का वर्ग कहते हैं कि, आम, अमड़ा, आंवला, बड़हर, कैथ, नारंगी, दोनों जामुन, करौंदा, चिरोंजी, बिजौरा, नीबू, जंबीरी नीबू, इमिली, अम्लवेतस, अनार, पर्वतदाख (मुनक्का), दोनों बेर, झरबेरी के बेर, देशीबेर, शैतूत, वृक्षाम्ल (चूक), हरमंथ और चांगेरी यह खटाई का वर्ग है॥६०-६१॥

अम्लवर्ग से राजवारुणी मदिरा बनाना

शुण्ठी कणा कणामूलं यवानी मरिचानि च ॥
तुल्यान्येतानि सर्वाणि एभ्यो द्विघ्नोऽम्लजो रसः।६२॥
प्रोक्तान्तर्गतदिक्कान्नं स्वादुसंख्या नखोन्मिता ॥६३॥
सर्वेभ्यो द्विगुणं स्वादं स्थापयेन्मासमात्रकम् ॥
कुर्यादष्टप्रहरकं प्रत्यहं च ततः पुनः ॥६४॥
ततो निष्कासयेदक सुरेयं राजवारुणी ॥
मासं भूमौ निखातव्या तत ऊर्ध्वं च भक्षयेत् ॥६५॥

सोंठ, पीपरि, पीपलामूल, अजवायन और स्याह मिर्च यह औषध सब तोल से बराबर लेकर और इनसे दुगुना अम्लवर्ग का रस मिलावे फिर उसमें उत्तम शहत और १२ प्रकार के इक्षुरस और सबसे दूने स्वादु पदार्थ इन सबको एक मासतक रखे ख्याल करके दिन राति रखा रहने देवे उपरान्त उनको निकाल लेवे और यंत्र में रखकर अर्क को खींच लेना चाहिये, इस अर्क का नाम राजवारुणी सुरा कहते हैं और इसको बराबर एक मास तक जमीन में गाड़ देवे और बाद उखेड़कर सेवन करे॥६२-६५॥

राजवारुणी मदिरा की प्रशंसा

मया महेश्वरमुखाच्छ्रुत्वा तस्यै समर्पिताम् ॥
तेन दत्ता भैरवेभ्यो लोलजिह्वाः पिबन्ति ते ॥६६॥

यह सुरा महादेवजी ने श्रीपार्वती महारानीजी को सौंपी हुई है, मैंने उनसे प्राप्त करी है और फिर उन्होंने भैरवजी को दी है, जो चंचल जिह्वा हुई और प्रीति के साथ पान करते हैं॥६६॥

राजवारुणी के गुण

इयं शीता लघुः स्वाद्वी स्निग्धा ग्राही विलेखनी ॥
चक्षुष्या दीपनी स्वर्या व्रणशोधनरोपणी ॥६७॥
सौकुमार्यकरा सूक्ष्मा परं स्रोतोविशोधनी ॥

कषाया च रसाह्लादा प्रसादजनका परा ।।६८।।
वर्ण्या मेधाकरी वृष्या तथाऽरोचकतां हरेत् ।।
कुष्ठार्शःकासपित्तास्रकफमेहक्लमक्रमीन् ।।६९।।
मेदतृष्णावमिश्वासहिक्कातीसारविड्ग्रहान् ।।
दाहक्षतक्षयायैवं योगवाह्याऽम्लवातला ।।७०।।

यह शीतल, हलकी, स्वादु, चिकनी, मन बांधने वाली है, विलेखनी (मल उखाड़ने वाली) है, आंखों को बांधने वाली है, तेजी करने वाली है और फोड़ा वगैरा को आराम करने वाली और भरने वाली है और युवावस्था को करने वाली है और बहुत वारीकीदार नाड़ियों को अत्यन्त शोधने वाली है और जरा कसीली है, रस को आनन्द देने वाली है, प्रसन्नता करने वाली है, सुन्दर शरीर का रंग और बुद्धि देने वाली है, शरीर का पोषण करने वाली है। रुचि को देने वाली है और कोढ़, बवासीर, खांसी, पित्त, लोहू, कफ, धातुक्षीणता (क्षयी), कृमिरोग, मेदरोग, प्यास, वमन, श्वास, हिचकी, अतिसार, अजीर्णरोग, दाह और घाव इन सम्पूर्ण रोगों का नाश करती है तथा योगवाही (नशा रूपी), खट्टी वातकारी सुन्दर यह सुरा राजवारुणी कहाती है।।६७-७०।।

क्षुद्रवारुणी मदिरा

कगुंश्चीणा कोद्रवश्च श्यामाको वनकोद्रवः ।।
शणबीजं वंशबीज गवेधुश्च प्रसाधिकाः ।।७१।।
यावन्त्येतानि चोक्तानि तुषधान्यानि वेधशः ।।
सर्वे संकुटच यत्नेन वितुषीकृत्य यत्नतः ।।७२।।
तक्रे वा क्वचिदम्ले वा आकोटं तद्विनिःक्षिपेत् ।।
ततो निष्कासयेन्मद्यं भवेत्सा क्षुद्रवारुणी ।।७३।।

कांगुनी, चीना, कोदों, शामा, वनकोदों, सनके बीज बांसों के बीज, गडहेडुआ, अन्न और तीनी यह जितने कहे हैं सो तुषधान्य हैं इन सबों को बड़े यत्न से कूट करके विगैर भूसी के करे फिर भट्ठे में वा खटाई में

छोड़ देवे कि जब तक उसमें कीड़ा पड़ें फिर निकाल लेवे और मद्य निकाले, यह क्षुद्रवारुणी कहलाती है।।७१-७३।।

क्षुद्रवारुणी के गुण

मण्डलार्धं तु भोक्तव्या बहुक्लेशकरैर्नरैः ।।
क्षुधा तृषा च चिन्ता च पर्वतारोहणादिकम् ।।७४।।
एतत्संसेवितो नास्ति महाभारवहोऽपि वा ।।
सूता समुपवेष्टा चेज्जयेत् प्रसववेदनाम् ।।७५।।

जो मनुष्य अधिक क्लेश करते हैं तो भूख, प्यास चिन्ता से संयुक्त हो जाते हैं तथा जो पर्वतादि पर चढ़ना चाहते हैं उनको आधे मंडल याने आठ दिन तक इसका सेवन करना चाहिये तो वे इतनी वस्तुओं को कुछ न समझें, चाहे फिर बहुत बोझा भी उठाना पड़े और जो सूता (जच्चा) पर यह अमल बैठ जावे तो उसके पुत्र होने के समय सर्व प्रकार की पीड़ा दूर होवेगी।।७४-७५।।

जाङ्गलमांस का अर्क (मदिरा) और उसके गुण

हरिणैणकुरंगाश्च पृषतत्यः कुशंबरः ।।
राजीवोऽपि च मुंडी चेत्याद्या जांगलसंज्ञिकाः ।।७६।।
एषां मांसं तु कणशः कृत्वा पूर्वद्रवे क्षिपेत् ।।
संस्थाप्य मंडलं पश्चादर्कं निष्कासयेत्ततः ।।७७।।
एवं सर्वत्र मांसस्य वारुणीकरणक्रिया ।।
पित्तश्लेष्महरी कश्चिद्वातला बलवर्द्धिनी ।।७८।।

हिरण, तामड़ा, काला हिरण, कुछ काला चांद विंदेवाला, बारहसींगा, लाल रंगवाला; कमल समान वर्णवाला और विना सींग का इनको जांगल संज्ञक कहते हैं इन सबों के मांस को लेकर खूब महीन पीसकर पूर्व कहे द्रव यानी मट्ठा या किसी खटाई में छोड़ देवे और उसी में एक मंडल यानी आठ रोज तक रखकर उपरान्त फिर अर्क निकाल लेवे इसी प्रकार सम्पूर्ण मांस की वारुणी करने की क्रिया है, यह अर्क पित्त और

कफ को नाश करता है तथा वात और बल को बढ़ाने वाला है।।७६-७८।।

बिल में रहने वाले प्राणी और उनके अर्क के गुण

गोधाशशभुजङ्गाश्च वृश्चिकाद्या बिलेशयाः ।।
एतत्सुरा वातहरा बृंहणा बद्धमूत्रविट् ।।७९।।

गोह, शश (खरगोश, चौगड़ा), सांप विच्छू यह सब बिल में रहने वाले हैं। बिलेशय मांस की मदिरा वादी को दूर करती है, बलादि को वढ़ाती और मल मूत्र को रोकती है।।७९।।

गुफा में रहने वाले प्राणी और उनके अर्क के गुण

सिंहव्याघ्रवृका ऋक्षतरक्षुद्वीपिनस्तथा ।।
बभ्रुजम्बूकमार्जारा इत्याद्याः स्युर्गुहाशयाः ।।
स्निग्धो बल्यो हितो नित्यं नेत्रगुह्यविकारिणाम् ।।८०।।

सिंह (नाहर) व्याघ्र (बघेला), भेड़िया ऋक्ष, तरक्षु (चीता), उल्लू, नेउला, सियार और बिलाई आदि जो जानवर हैं। सो गुफा के अन्दर शयन करनेवाले हैं। इनका मांस चिकना बलकारी और हमेशा ही हित कारक है और नेत्र, गुह्यस्थान में विकार जिनके हैं उनको हितकारक है; अर्थात् गुण करता है।।८०।।

पर्णमृग पशुओं के अर्क के गुण

वानरा वृक्षमार्जारा वृक्षमर्कटकादयः ।।८१।।
एते वर्णमृगाश्चार्को वृष्यो नेत्र्यश्च शोषिणाम् ।।
श्वासार्शःकासशमनोत्सृष्टमत्रपुरीषकः ।।८२।।

वानर, वृक्षबिलाव, वृक्षमाकड़ आदि जो पर्णमृग हैं इनके मांस का अर्क पोषक है, नेत्रों को फायदा करता है, अंगशोष रोगियों को हितकारी है, श्वास, बवासीर, खांसी आदि अनेक रोगों को अच्छा करता है तथा मल मूत्र को छुड़ाता है।।८१-८२।।

विष्किरपक्षियों के अर्क के गुण

वर्तिका लावगिरिका कपिञ्जलकतित्तिराः ।।
कुलिङ्गकुलटाद्याश्च विष्किराः समुदाहृताः ।।
बल्यो वृष्यो त्रिदोषघ्न एतदर्कस्तु पथ्यलः ।।८३।।

बटेर, बतक, तीतर, सफेद और पीला तीतर, गरगैआ और कबूतर ये सर्व विष्किर कहिये बखेर खाने वाले हैं। इन सबका अर्क बलकारी है, पोषक है, त्रिदोष को दूर करने वाला है और पथ्य है।।८३।।

प्रतुद पक्षियों के अर्क के गुण

हारीतो धवलः पांडुश्चित्रपुच्छो बृहच्छुकः ।।८४।।
पारावतः खञ्जरीटः पिकाद्याः प्रतुदाः स्मृताः ।।
कफपित्तहरो ग्राही बद्धविट्मूत्रको भवेत् ।।८५।।

हरितवर्ण, धौला, पीला व चित्रपंखी इतने प्रकार का तोता, बड़ा तोता, पहाड़ी तोता, कबूतर, खंजन, कोयल आदि ये प्रतुद कहिये दुःख देने वाले हैं इनके मांस का अर्क कफ, पित्त को दूर करता है, मल को बांधता है और मूत्र को रोकता है।।८४-८५।।

प्रसर पक्षियों के अर्कों के गुण

काकोगृद्ध्र उलूकश्च चित्तलः शशघातकाः ।।
चाषो भाषश्च कुकुर इत्याद्याः प्रसराः स्मृताः ।।
एतत्सुरा भस्मकरी तस्मान्मेदस्विनो हिता ।।८६।।

कौआ, गिद्ध, उल्लू, चील, बाज, बड़ा गीध, कुकुर यह प्रसर कहिये फाड़ के खाने वाले पक्षी हैं। इन सबकी सुरा भोजन को बहुत शीघ्र भस्म करती है इससे मेदा के रोग वालों को अधिक नफा करती है।।८६।।

ग्राम्यपशुओं के अर्कों के गुण

कालीयच्छागगोमेषा हयाद्या ग्राम्यसंज्ञकाः ।।
दीपनो वातहृत्पैत्तो बृंहणो बलवर्द्धनः ।।८७।।

कालीय, बकरा, बैल, मेढ़ा, घोड़ा इत्यादि गांववर्ती होते हैं। इनका अर्क

अग्नि को प्रदीप्त करता है और वादी को हटाता है पित्त को ज्यादा करता है और बल को बढ़ाता है॥८७॥

कूलेचर पशुओं के अर्कों के गुण

लुलायगंडवाराहचमरीवारणादयः ॥
कूलेचरा एतदर्को वृश्यः श्लेमविवर्धनः ॥८८॥

भैंसा, सूअर, गाय, हाथी आदि जल के करीब रहने वाले हैं। इनके मांस का अर्क बलकारक है और कफ को ज्यादा करने वाला है॥८८॥

प्लवंगम पक्षियों के अर्कों के गुण

हंससारसकाचाक्षचक्रक्रौञ्चशरारिकाः ॥८९॥
नन्दीमुखसकादंबा बलाकाद्याः प्लवाः स्मृताः ॥
एतन्मद्यं शुक्रकरं बल्यं स्निग्धं त्रिदोषनुत् ॥९०॥

हंस, सारस, काचाक्षि, चकवा, क्रौंच (ढेंक), शरारिक (वन तीतर), नंदीमुख, बतक और बगुला आदि प्लवंग कहिये उछलके उड़ने वाले कहाते हैं। इनका मद्य वीर्य को बढ़ाता है, बलकारी है, चिकना है और तीनों दोषों को जीतता है॥८९-९०॥

कोशस्थित शंख सीपी आदिकों के अर्कों के गुण

शंखशंखनखश्चापि शुक्तिशम्बूककर्कटाः ॥
एते कोशस्थिताश्चार्को बृंहणो बलवर्द्धनः ॥९१॥

शंख, छोटा शंख, शिंपी, घोंघा और गेंगटा ये सब कोथले में रहने वाले हैं। इनका अर्क जठराग्नि को और बल को बढ़ाता है॥९१॥

पादियों के अर्कों के गुण

कुम्भीरकूर्मनक्राश्च गोधामकरशंकवः ॥
कटिकः शिशुमारश्च इत्याद्याः पादिनः स्मृताः ॥
एभ्यो जाता सुरा वातहंत्री स्निग्धा विशेषतः ॥९२॥

नाका, कछुआ, घड़ियाल, गोह, मगरमच्छ, सांकुच और सूस इत्यादि ये सब गुणों में पूर्वोक्त कोशस्थों के समान होते हैं, इनकी सुरा विशेष

करके वात को दूर करती है और चिकनी है।।९२।।

मत्स्यों के अर्कों के गुण

मत्स्यो मीनो विसारश्च झषो वैसारिणोण्डजाः ।।९३।।
सकटी पृथुरोमा च रोहितश्च सुदर्शनः ।।
एते मत्स्या एतदर्को रोचको बलवर्द्धनः ।।

मच्छ, मीन, विसार, झष, वैसारण, अंडज, सकटी, पृथुरोमा, रोहित और सुदर्शन इतने तरह के मच्छ हैं। इनका अर्क रोचक है और बल को बढ़ाता है।।९३-९४।।

नृमत्स्यों के अर्क के गुण

नृमत्स्यार्कं तु निष्कास्य नानापुष्पैः सुवासितैः ।।
यः सेवयेन्मासषट्कं बली पलितवर्जितः ।।९५।।

नरमच्छका अर्क अनेक तरह के पुष्पों की सुगंधित वासना देकर निकाले और छः मास तक सेवन करे तो मनुष्य बुढ़ापे से रहित होगा और बली होगा और युवा के समान रहेगा।।९५।।

मनुष्यमांस के अर्क के गुण

मनुष्यमांसजार्कस्तु मासषट्कं तु सेवयेत् ।।
न क्रामते शरीरस्य सर्पादीनां विषं क्वचित् ।।९६।।

मनुष्य के मांस का अर्क छः मास सेवन करे तो शरीर को सर्प यदि काट खावे तो भी विष नहीं व्यापे।।९६।।

अंडों के अर्क के गुण

त्वगेला मरिचं चन्द्रो लवंगं जातिपत्रकम् ।।
दत्वाऽण्डानामुपरितो घृतं विंशतिभागिकम् ।।
अण्डार्कोऽयं स्वगुणकृद्वृष्यो वातघ्नशुक्रलः ।।९७।।

तज, इलायची, स्याह मिर्च, कपूर, लौंग, जावित्री इन सबको पीसकर अण्डों के ऊपर लेप कर उनसे बीसवां हिस्सा घी मिला अर्क को खींच लेवे। यह अण्डार्क शरीर को महापुष्ट नाम पोषण करता है, वादी को

नाश करता है और वीर्य को बढ़ाता है।।९७।।

ऋतु कें अनुसार अर्क सेवन

निम्ब्वाम्राकुरसम्भूतो वसंते ग्रीष्मके पुनः ।।
सेवंतीशतपत्रीजो वर्षायां त्रिफलाभवः ।।९८।।
पारिजातककाश्मीरीजातोऽर्कः शरदि स्मृतः ।।
यवानीगुलदावद्योर्हेमंते शिशिरे पुनः ।।
यवानीनम्बुजः सेवेत्तस्य रोगभयं कुतः ।।९९।।

इति श्रीरावणकृतार्कप्रकाशे चतुर्थं शतकं समाप्तम् ।।४।।

नींबू का अर्क आम के पत्तों के साथ खींचा हुआ वसंत में पीवे, सेवती पद्मिनी से खींचा हुआ अर्क ग्रीष्मर्तु (गरमी) में पीवे, त्रिफला का अर्क वर्षा में पीवे, मन्दार और कुम्हेरण का खींचा हुआ अर्क शरदृतु में पीवे, अजवायन और गुलदाऊदी का अर्क हेमन्त में पीवे और अजवायन व बिजौरे नींबू का अर्क शिशिर ऋतु में पीवे तो रोग का नाम नहीं रहेगा।।९८-९९।।

इति पंडितमुकुन्दरामकृतार्कसंग्रहहिन्दीटीकायां चतुर्थ-

शतकं समाप्तम् ।।४।।

******
****

पञ्चमं शतकम्

ज्वरस्तंभन अर्क

स्वरागमनकाले तु घृतार्कं मरिचैः सह ।।
एतद्द्वयं पिबेद्यस्तु ज्वरः संस्तंभितो भवेत् ।।१।।

ज्वर के आने के समय में घृतार्क को स्याह मिर्च के साथ साथ मिलाकर पीवे तो उसका ज्वर रुक जावेगा।।१।।

शीतज्वरहारी अर्क

एकविंशतिवाराणि कदल्यर्केण भावितम् ।।
चूर्णं तालं मुद्गमितं दिनाच्छीतं ज्वरं हरेत् ।।२।।

इक्कीस बेर केले के अर्क में हरताल के चूर्ण को भिगोय सुखावे उपरान्त फिर मूंगभर मात्रा देने से एक दिन में शीतज्वर का नाश होता है।।२।।

अन्यतिजारीज्वरनाशन तथा विषमज्वरहारी अर्क

मेथी वनाढ्या तुलसी कालामललवङ्गकैः ।।
भूनिम्बेनार्क उत्पन्नो निर्वापो मौक्तिकाक्षयोः ।।३।।
मारितस्य प्रवालस्य भस्मनो ज्वरनाशनः ।।
सुराजीर्णगुणाजाज्या निहन्ति विषमज्वरान् ।।४।।

मेथी, वनमेथी काली तुलसी और आंवले इन सबका अर्क चिरायते के साथ निकाले और उससे मोती और कौड़ी को भी बुझावे फिर उसमें शुद्ध मूंगा की भस्म को संयुक्त करके देने से शीतज्वर नष्ट होता है। पुराने गुड़ का जीरे के साथ निकाला हुआ अर्क विषम ज्वर का फौरन नाश करता है।।३-४।।

सन्निपातज्वरहारी अर्क

अर्कस्तु दशमूलानां लवंगमरिचान्वितः ।।
सन्निपातं हरेत्तूर्णमुपलाभः सुशायिनाम् ।।५।।

दशमूल (सरवन, पिठवन, दोनों कटेली, गोखरू, बेल की जड़, नरवेल अरलू, कंभारी और पाढ़) का अर्क लौंग, स्याह मिर्च को मिलाय लेवे तो शीघ्रता से ही सन्निपात ज्वर का नाश करता है और आनंदपूर्वक नींद भी आती है।।५।।

अतिसारनाशक अर्क

शृंगवेरं नागवेरं मग्नमैरण्डजेद्रवे ।।
पर्पटान्निर्गतार्कस्तु हरेदामातिसारकम् ।।६।।

सोंठ, नागवेर और दोनों एरंड इनके जल में पित्तपापड़ा को भिगोय के अर्क को निकाले। यह अर्क आँव के अतीसार का नाश करने वाला है।।६।।

पक्वातीसारनाशक अर्क

धातक्याम्रास्थिबिल्वानि लोध्रेन्द्रयवतोयदाः ।।
पर्यायं माहिषं तक्रे तदर्कः पक्वसारहा ।।७।।

धाई, आमड़ा, बेल, लोध, इन्द्रयव और नागरमोथा इन सबको कई बेर भैंस के छाछ और मट्ठा में भिगोयकर अर्क खींचे। यह अर्क पक्व अतीसार को दूर करता है।।७।।

रक्तातीसारनाशक अर्क

वत्सकं त्वग्दाडिमत्वक्साधितो मधुनान्वितः ।।
दधिभक्ताशिनोऽर्कोऽयं रक्तातीसारनाशनः ।।८।।

कुड़े की छाल और अनार की छाल का अर्क शहत के साथ देवे और दहीभात पथ्य देवे तो यह अर्क रक्त अतीसार को दूर करता है।।८।।

प्रवाहीनाशन अर्क

धातकीबदरीपत्रकपित्थरससाक्षिकम् ।।
लोध्रं दधिप्लुतं चार्कः प्रवाहीनाशनः परः ।।९।।

धाई, बेर के पत्ते, कैथ का रस, शहत और लोध इन सबका अर्क दही में मिलाय के खाने पर बहुत ही पतले दस्तों को आराम करता है।।९।।

संग्रहणीरोगनाशक अर्क

तक्रनिर्वापिता मुद्‌गास्तदका धान्यजीरकैः ।।
सैन्धवेन समायुक्तो हन्यात्संग्रहणीगदम् ।।१०।।

छाछ में बुझाये हुए मूंग का अर्क धनियां और जीरा के साथ सेंधानोन से मिलाय देवे तो यह संग्रहणी रोग का नाश करता है।।१०।।

बालरोगनाशक औषध

एकविंशतिवाराणि गरिकं चूर्णभावितम् ।।

छिक्कन्याकण तद्धूमाद्बालरोगक्षयो भवेत् ।।११।।

शुद्ध गेरू का चूर्ण नकछिकनी के अर्क में इक्कीस बेर भिगोय २ कर खूब सुखावे फिर उसको मन्त्र से धूनी देवे तो इस धूनी से बच्चों के सब रोग नष्ट हो जाते हैं।।११।।

वालग्रहशान्ति के लिये धूप

पूतीदशाङ्गसिद्धार्थवचाभल्लातदीपकैः ।।
सकुष्टेः सघृतैर्धूपो बालग्रहविनाशनः ।।१२।।
ग्रहतभूतपिशाचाद्याः पूतना मातृकादयः ।।
धूपेनानेन सर्वेऽपि न स्पृशन्तीह बालकम् ।।१३।।
कंकरः शोणकश्चैव सकोणकठिनस्तथा ।।
एतेषां वो भयं भूयाद्यदि धूपः प्रधूपितः ।।१४।।
वेणी वेण्या च संयुक्ता कुकुरा रक्तसारिका ।।
प्रभूता स्वरिता रात्रिर्न स्पृशन्ति इमाः शिशुम् ।।१५।।
जीवन्ति ते वर्षशतं धूपस्यास्य प्रभावतः ।।
इमां विद्यां न यच्छन्ति ते नरा ब्रह्मघातिनः ।।१६।।

पूतिकांत, सफेद सरसों, वच, भिलावा, अजमोदा, कूठ और घृत ये सब इकट्ठे करके धूप बनाना चाहिये, यह धूप बच्चों के ग्रहों को दूर कर देता है। ग्रह, भूत, पिशाच आदि और पूतना मातृकादि ये सब इस धूप से बालक को नहीं ग्रहण करते हैं और यह सर्व रोगों को दूर करता है। कंकर, शोणक, सकोण, कठिन ये बालकों के रोगों के भेद हैं इन रोगों का भय नहीं होवे और जो बालक को यह धूप देवे तो वेणी, येणी, कुकुरा, रक्तसारिका, प्रभूता, स्वरता और रजनी ये बालमातृ का उस बालक को न छूवे हैं अर्थात् प्रसन्नापूर्वक सहाय करें। इस धूप के प्रभाव से वे बच्चे सौ वर्ष पर्यन्त जीते हैं जो कोई इस विद्या को गुप्त रखे और प्रकट नहीं पढ़ावे हैं वे उनको ब्रह्मघाती जानना चाहिये।।१२-१६।।

मन्दाग्निनाशन अर्क

शुण्ठी पथ्या दाडिमत्वक् सगुडा वारुणी कृता ।।
शोषणी सा द्विपलिकाप्रोक्तामन्दाग्निनाशिनी ।।१७।।

सोंठ, हड़ और अनार की छाल इन सब में गुड़ मिलाय वारुणी अर्क खींच लेवे। यह वारुणी दो पल सेवन करने से शोषणी है और मन्दाग्नि को दूर करती है।।१७।।

हैजा को दूर करने वाला अर्क

पञ्चकोलं शिवाजाजी मरिचं चाम्लभावितम् ।।
तदर्को हरति क्षिप्रं दुर्निवारविषूचिकाम् ।।१८।।

पंचकोल, हड, काला जीरा और स्याह मिर्च खटाई से संयुक्त कर इन सबका अर्क खींच देने से न हटने वाला भी हैजा ईश्वर की कृपा से हट जावेगा।।१८।।

अजीर्णनाशन अर्क

यवान्यर्को मुस्तयुक्तः कट्वम्लाभ्यां विलोडितः ।।
गन्धपाषाणधूपेन वासितोऽजीर्णनाशनः ।।१९।।

अजवायन का अर्क मोथा संयुक्त कर और कड़वी खटाई के साथ गन्धपाषाण की धूप देकर उपरान्त पिलाने पर अवश्य करके अजीर्ण नष्ट होता है।।१९।।

विषमाग्निनाशन अर्क

शुण्ठी कुलिञ्जनं चाम्लभावितं तस्य चार्कतः ।।
पटुयुक्तं हरेच्छीघ्रं विषमाग्निं न संशयः ।।२०।।

सोंठ और कुलंजन को खटाई से भिगोय के अर्क निकाले अर्क में सेंधानोन संयुक्त करके देवे तो अवश्य करके शीघ्रता से यह विषमाग्नि को नाश करता है।।२०।।

जड़ान्न को भस्म करने वाला अर्क

दुग्धं दधि घृतं मूत्रं पललं महिषोद्भवम् ।।

भुङ्क्ते तदर्को भुञ्जीत गुर्वन्नभस्मकाग्निहृत् ।।२१।।

भैंस का दूध, दही, घृत, मूत्र और मांस इनका अर्क खींचकर पीवे तो अन्न से कोष्ठ भारी हुआ हो सो भस्म करे और अग्नि (दाहादि) इन सबको शांत करता है।।२१।।

उदरकृमियों को नष्ट करने वाला अर्क

खुरासानी यवानी च कुबेराक्षो विडङ्गकम् ।।
व्योषश्चैषां कृतो ह्यर्कोऽग्निमन्दस्य च जन्तुहृत् ।।२२।।

खुरासानी, अजवायन, पाढ़ल, वायविडंग, और व्योष (सोंठ, स्याह मिर्च, पीपर) इन सबका अर्क मन्दाग्नि के सर्व रोगों को दूर करता है।।२२।।

लीख और जुवों को नष्ट करने वाला अर्क

रसेन्द्रेण समायुक्तश्चार्को धत्तूरपत्रजः ।।
नागवल्लीभवो वाऽपि लिक्षायूकाविनाशनः ।।२३।।

शुद्ध पारे के साथ धत्तूरे के पत्तों का या शुद्ध पारे के साथ निकाला हुआ नागवेली का अर्क लीख और जुवों को नाश कर देता है।।२३।।

खटमल, मच्छड़, डांस सर्प आदि प्राणि नाशक अर्क

खट्वायां वा गृहे वापि हरितालार्कलेपनात् ।।
मत्कुणा मक्षिकाः सर्पामशका यांति तत्क्षणात् ।।२४।।

खाट और शय्या में वा गृह में हरताल का अर्क यदि लेपन करे तो खटमल, मच्छड़, मक्खी, सर्प और डास इत्यादि तुरन्त दूर होते हैं।।२४।।

कफ और कीड़ों का नाशक अर्क

तक्रे दत्त्वा पलाशस्य बीजान्यर्कं समादिशेत् ।।
तदर्कपानात् कफहृत् कृमीनां नाशनं भवेत् ।।२५।।

पलाश (ढाक) के बीजों को मट्ठे में भिगोयकर अर्क निकाले। इस अर्क को पीवे तो कफरोग का और पेट के कीड़ों का नाश होता

है।।२५।।

रुधिर कृमि नाशक अर्क

रुधिरस्थेषु कृमिषु गन्धकार्कं पिबेत्तु यः ।।
रात्रौ जागरणं कुर्याद्रक्तकृमिनिवर्तनम् ।।२६।।

रुधिर के सबब कीड़े हो जावें तो मनुष्य गन्धक का अर्क पीवे और रात्रि को जागरण भी करे तो उस रक्त में से कीड़े दूर होवेंगे।।२६।।

पाण्डुरोग नाशक अर्क

लोहचूर्णं वाऽपि लोहं किट्टचूर्णं पृथक् पृथक् ।।
फलत्रिकाथ व्योषार्कभावितं पाण्डुनाशनम् ।।२७।।

लोहचूर्ण, लोह और लोहकिट्टका चूरा इन सबको पृथक् २ लेकर इनके साथ त्रिफला और त्रिकुटा अर्क खींचे। इस अर्क के पीने से पाण्डुरोग अवश्य नष्ट होगा।।२७।।

कामलारोग के ऊपर अर्क

त्रिफलार्को गुडूच्यर्को समं देयं तु माक्षिकम् ।।
दद्यात्प्रातः कामलाहृद्द्रोणपुष्परसाञ्जनात् ।।२८।।

त्रिफला का अर्क और त्रिकुटा का अर्क इन दोनों में समान भाग सोनामाखी का अर्क मिलाय के देवे वा दडगल का अर्क रसांजन के साथ शयन से उठकर सुबे होते ही देवे तो कामलारोग को दूर करता है।।२८।।

मिट्टी भक्षण करने से होनेवाले पांडुरोग को हरनेवाला अर्क

हरीतकी गुडूची च पर्यायं तक्रभाविता ।।
तदर्को नाशयत्येव पाण्डुं मृद्भक्षणोद्भवम् ।।२९।।

हर्र और गिलोय को भाग समान लेकर छाछ में भिगोयकर अर्क खींच लेवे। यह अर्क मिट्टी आदि खाने से उत्पन्न हुए पाण्डुरोग को दूर करता है।।२९।।

कुम्भकामलारोग नाशक अर्क

गोमूत्रे भावयेद्धीमान्पर्यायं च शिलाजतुम् ॥
निष्कासितस्तदर्कस्तु कुम्भकामालिकापहः ॥३०॥

शिलाजीत को गोमूत्र में भिगोयकर अर्क निकाले यह अर्क कुंभ का मला अर्थात् आंखों के रोग और अधिक बिगड़े हुए पांडुरोग को दूर करता है॥३०॥

हलीमकरोग नाशक अर्क

लोहचूर्णं घनार्केण भावयेच्छतवारकम् ॥
पिबेत्तु खादिरार्केण हलीमकनिकृन्तनम् ॥३१॥

लोहचूर्ण को नागरमोथा के अर्क में शत वार यानी सौ बेर भिगोयकर सुखावे और खैर के अर्क के संग पीवे तो हलीमक रोग (पांडुरोग भेद) रोग को दूर करता है॥३१॥

रक्तपित्तनाशक अर्क

अट्टरूपकमृद्वीका पथ्यार्कश्च सशर्करः ॥
वृषार्कोऽयं समधुको रक्तपित्तनिवारणः ॥३२॥
लोध्रप्रियंगुमृद्वीकाचन्दनार्को रसान्वितः ॥
वासायाः क्षौद्रसंयुक्तो वन्ध्याया रक्तपित्तहृत् ॥३३॥

अडूसा, दाख और हर्र इनका अर्क शक्कर के संग और वासा का अर्क महुए के संग पीने से रक्तपित्त को दूर करता है। लोध, कांगनी, दाख और श्वेत चन्दन का अर्क शुद्ध पारे के साथ पीवे तो या वासे का अर्क शहत के संग पीवे तो ईश्वर चाहे तो वन्ध्या स्त्री का रक्त पित्तरोग दूर होता है और गर्भ उत्पन्न होता है॥३२-३३॥

नाक में से जो लोहू गिरता है उसके ऊपर अर्क

अर्को दाडिमपुष्पोत्थो मृद्वीकासंभवोऽपि वा ॥
पानान्नस्थाद्धरेन्नासरक्तमामास्थिजोऽपि वा ॥३४॥

अनार के पुष्प का अर्क, दाख का अर्क और आम की गुठली का अर्क पीने

से नाक के रक्तादि रोगों को दूर करता है।।३४।।

कंठ में दाह होने पर अर्क

द्राक्षाभयापिप्लीनामर्कश्च सितया युतः ।।
मधुना कण्ठदाहघ्नः पित्तश्लेष्महरः परः ।।३५।।

दाख, हर्र व पीपर का अर्क मिश्री संयुक्त शहत के साथ पीने से कण्ठ दाह का नाश करता है और कफपित्त को दूर करता है।।३५।।

आम्लपित्त होने पर अर्क

छिन्नोद्भवानिम्बपत्रपटोलदलसम्भवः ।।
अर्कः क्षौद्रान्वितो हन्यादम्लपित्तं सुदारुणम् ।।३६।।

गिलोय, नींब के पत्ते और परवल के पत्ते इन सबका अर्क शहत के साथ पीने से आम्लपित्त को दूर करता है।।३६।।

राजयक्ष्मरोग नाशक अर्क

ऊर्ध्वमूर्ध्वं द्विगुणिता त्वगेला पिप्पली मता ।।
सितोपलार्कः सक्षौद्रः सघृतो राजयक्ष्मनुत् ।।३७।।

तज, इलायची, पीपरी, यह एक से दूसरी दुगुणी, तीसरी तिगुणी लेकर फिर अर्क निकाले यह या सितोपला का अर्क शहत के संग पीवे तो राजरोग और महारोग को दूर करता है।।३७।।

शोष और क्षयरोग होने पर अर्क

अजस्य हृदयार्कस्तु तन्मातादुग्धसाधितः ।।
जीवनीयकषायं तु पिबेच्छोषक्षयप्रणुत् ।।३८।।

बकरे के कलेजे का अर्क उसी की माता बकरी के दूध में संयुक्त करके यदि पीवे तो और पूर्वोक्त जीवनीय गण का कषाय पीवे तो अवश्य करके शोष (शरीर सूखना) और क्षय रोग को दूर करता है।।३८।।

मार्गजनित शोषके ऊपर अर्क

चन्दनोशीरसेवन्तीशतपत्राब्दसम्भवः ।।
अर्को हरेदध्वशोषं दिवासुप्तस्य वेगतः ।।३९।।

चन्दन, खस, गुलाब और सेवती इनका अर्क मार्गशोष व दिन के सोये की हरारत को शीघ्रता से नष्ट करता है।।३९।।

व्रणशोथनाशक अर्क

दुग्धसंस्थापितकटुत्रयादर्कं समाहरेत् ।।
ससितं व्रणशोथघ्नं यूषमांसरसाशिनः ।।४०।।

दूध में भिगोय के त्रिकुटे का अर्क खींचे सो अर्क शक्कर के साथ पीवे तो व्रण और शोथरोग को नष्ट करता है, इसके सेवन में मांस रस के साथ खिचड़ी खावे।।४०।।

छाती के घाव पर अर्क

बलाऽश्वगन्धा कंभारी वटपत्री पुनर्नवा ।।
दुग्धनिर्वापितो वाऽर्क उरःक्षतनिवारणः ।।४१।।

खरेटी, असगन्ध, खंभारी, वटपत्री और सांठी इनको दुग्ध में भिगोय अर्क निकाले उपरान्त पीवे तो छाती के घाव की पीड़ा का नाश होता है।।४१।।

अत्यंत बढ़े हुए कफरोग के ऊपर अर्क

धूर्तबीजत्रिकटुकयवान्यर्कविभावितम् ।।
लवणं शतवारं च कफं हन्यात्सुदारुणम् ।।४२।।

धतूरे के बीज, त्रिकुटा, सोंठ, मिरच, पीपरी और अजवायन के अर्क से सौ वार भिगोया फिर सुखाया सेंधानोन सब कफरोग का नाश करता है।।४२।।

खाँसी से उत्पन्न हुए क्षयरोग पर अर्क

कण्टकारीजटार्कस्तु सकृष्णा सर्वकासहा ।।
ककुभस्य त्वचाचूर्णं वासार्केण विभावितम् ।।
सितोपलाघृतमधुसंयुक्तः क्षयकासहृत् ।।४३।।

कटेली की जड़ का अर्क पीपरी के साथ पीने से सब प्रकार की खांसी को नाश करता है। अर्जुनवृक्ष की छाल का चूर्ण अडूसे के अर्क में भिगोय

मिश्री घृत और शहत के साथ पीने से क्षय तथा खांसी के क्षय को दूर करे है।।४३।।

सूखी खाँसी को दूर करनेवाला अर्क

कण्टकारीयुगद्राक्षावासाकर्चूरनागरैः ।।४४।।
पिपलीखाखसैरर्कः शर्करामधुसंयुतः ।।
शुष्ककासहरश्चैषो महादेवेन भाषितः ।।४५।।

दोनों कटाई, दाख, वासा, कचूर, सोंठ, पींपरी, खस और खसदाना इनका अर्क शक्कर व शहत के साथ पीने से सूखी खांसी को दूर करे। यह नुस्खा शिवजी का कहा है।।४४-४५।।

श्वासरोग को दूर करनेवाला अर्क

कूष्माण्डकशिफार्कस्तु कोष्णः श्वासं क्षणाद्धरेत् ।।
आर्द्रकार्को माक्षिकेन युक्तः श्वासनिवारणः ।।४६।।

कुम्हड़े की जड़ का अर्क कुछ जरा २ गरम २ पीवे तो क्षणमात्र में सांस का रोग दूर होता है। अदरख का अर्क शहत के साथ सेवन करने से भी श्वासरोग दूर होता है।।४६।।

हिचकी को दूर करनेवाला अर्क

स्विन्ना दुग्धे तु या शुण्ठी तदर्कस्तत्क्षणाद्धरेत् ।।
गुडद्रवेण वा सिद्धो हन्याद्धिक्कां न संशयः ।।४७।।

दूध में भीगी हुई सोंठ का अर्क अथवा गुड़ के द्राव से बना हुआ अर्क उसी क्षणभर में हिचकी का नाश करता है इसमें कोई संदेह नहीं।।४७।।

स्वरभेद नाशक अर्क

अर्को वा पञ्चकोलानां शृङ्गवेररसान्वितः ।।
गोघृतक्षौद्रसंयुक्तः स्वरभेदविनाशनः ।।४८।।

पंचकोल का अर्क अदरख के साथ में या गौका घी शहत के साथ पीवे तो स्वरभेद अर्थात् बिगड़े हुए स्वर की आवाज को सुधारे और स्वरभेद को

नाश करे है।।४८।।

उत्तम स्वर करनेवाला अर्क

निम्बूरसेन मधुना मरिचैरवधूलितम् ।।
कुलिञ्जनार्कं पिबति राक्षसः किन्नरायते ।।४९।।

नींबू के अर्क से, शहत से, स्याह मिर्च से धोले हुए कुलंजनके अर्क को पी लेवे तो राक्षस का भी स्वर किन्नर के समान हो जावेगा।।४९।।

अरुचि को दूर करनेवाला अर्क

मूलपत्रं यवानी च तिन्तिडीरससंयुतः ।।
सटिनो हन्ति गण्डूषादर्कः सर्वमरोचकम् ।।५०।।

मूल व पत्तों समेत अजवायन इमली के रस में सना हुआ ऐसा जो जल जिससे मनुष्य कुल्ला करे तो सर्व प्रकार का अरुचि रोग दूर होता है।।५०।।

वमन को दूर करनेवाला अर्क

अश्वत्थत्वग्भवो वाऽपि कमलाक्षोद्भवस्तथा ।।
माक्षिकाविट्समुत्थो वा दूर्वाजो वा हरेद्वमीन् ।।५१।।

पीपल की छाल से उत्पन्न हुए वा कमलगट्टे से उत्पन्न हुए वा सोनामाखी से उत्पन्न हुए वा दूब से उत्पन्न हुए अर्क को मनुष्य पीवे तो वमन के सर्व प्रकार के रोग नष्ट होवेंगे।।५१।।

प्यास को दूर करनेवाला अर्क

मुस्तपर्पटकोदीच्यधान्यचन्दनवालकैः ।।
एतदर्को हरेदाशु सर्वतृष्णां न संशयः ।।५२।।

मोथा, पित्तपापरा, हाऊबेर, धनियां, चन्दन और नेत्रवाला इनका अर्क शीघ्रता से ही सर्व प्रकार के तृष्णारोगों को अवश्य दूर करता है।।५२।।

मुखशोष हरनेवाला अर्क

अमलं कमलं कुष्ठं लाजाश्वबटरोहकम् ।।

अर्कीकृतं मधुयुतं मुखशोषनिवारणम् ।।५३।।

आंवला, कमलगट्टा, कूट, धान और वड़ की जटा इनका बनाया हुआ अर्क शहत के साथ चाटने पर मुख का सूखना नष्ट होता है।।५३।।

क्षय के कोप को दूर करनेवाला अर्क तथा घाव की पीड़ा आँव और वमन से उत्पन्न हुई प्यास को हरनेवाला अर्क

मध्वर्को वाथ दुग्धार्को हिंसेत्कोपं क्षयोद्भवम् ।।
तृष्णां हरेच्च रक्तार्को हतक्षतसमुद्भवाम् ।।५४।।
षडूषणवचाबिल्वजातोऽर्कस्त्वामसंभवाम् ।।
मदनार्कः समाहन्यात्तृष्णां गुर्वन्नजां वमेः ।।५५।।

शहत का अर्क वा दूध का अर्क अवश्य करके क्षयरोग से उत्पन्न रोगों को दूर करता है और रक्तका अर्क तृष्णा को हरता है और मारे हुए घावों की पीड़ा को दूर करता है। षडूषण, वच व वेल इनका अर्क आंव से उत्पन्न तृष्णा (प्यास) को दूर करता है। मैनफल का अर्क भारी अन्न से उत्पन्न हुई तृषा व वमन को दूर करता है।।५४-५५।।

दुर्बल रोगी पुरुष की प्यास को हरनेवाला अर्क

दुग्धस्यार्कः सितायुक्तः शतपत्रीसुवासितः ।।
अतिरुग्णं दुर्बलं च देयं तृष्णानिवृत्तये ।।५६।।

मिश्री मिलाय कमलिनी से सुवासना दिया हुआ दूध का अर्क अतिरुग्ण व दुर्बल मनुष्यों की तृषा (प्यास) को दूर करता है।।५६।।

अतिमूर्च्छा को दूर करनेवाला अर्क

कोलमज्जोषणोशीरकेशरैः पुष्पवासितैः ।।
निष्कासितार्कः ससितो मूर्च्छां जयति दुस्तराम् ।।५७।।
मधूकसारसिन्धूत्थवचोषणकणैः समाः ।।
आसामर्कस्य नस्यं स्याच्छीघ्रं संज्ञाप्रबोधकृत् ।।५८।।

कोल (बेर) की मींगी, काली मिर्च, खस की जड़ व केसर इनका अर्क निकाल फूलों से वासना देकर पीवे तो यह अर्क बहुत कठिन मूर्च्छा को

जीते है। या महुवे का सार, सेंधानोन, वच, मिर्च और पीपरि इनको बराबर २ लेकर इनका अर्क खींचे और मनुष्य को देवे तो शीघ्र प्रबोध करता है अर्थात् मूर्च्छा को दूर करता है।।५७-५८।।

विषनाशक अर्क

निर्विष्यार्को मत्स्यपित्तायुक्तो विषभवं जयेत् ।।
मद्यजं यत्प्रिबेन्मद्यं सुगन्धद्रव्यवासितम् ।।५९।।

निर्विषी का अर्क केदारकुटकी से युक्त कर देवे तो विष को जीते है वा मदिरार्क को सुगंधित औषधियों में संयुक्त कर पीवे।।५९।।

तन्द्रा (आलस्य) को हरनेवाला अर्क

पिबेद्दुरालभाजार्कं सघृतं चाम्लशान्तये ।।
ऊषणार्कोऽगस्तिरसैः कृतो नश्येच्च तन्द्रिकाम् ।।६०।।

धमासे का अर्क घी के साथ आंवशांति के अर्थ पीवे, स्याह मिर्च का अर्क अगस्तिया का रस मिलाय पीवे तो तन्द्रा (आलस्य) रोग को दूर करता है।।६०।।

निद्रा को नष्ट करनेवाला अर्क

सैन्धवं श्वेतमरिचं सर्षपं कुष्ठमेव च ।।
वत्समूत्रेण जातार्कः स स्यान्निद्रानिवारकः ।।६१।।

सेंधानोन, श्वेत मिर्च, सरसों और कूट इनको बछड़े के पेसाब में मिलाय अर्क निकाले, इस अर्क को पीने से निद्रा दूर होती है।।६१।।

सब नशा को हरनेवाला अर्क

मद्यं खर्जूरिमृद्विकापरूषकरसैर्युतम् ।।
सदाडिमरसैः शीतं सर्वमांद्यात्ययं जयेत् ।।६२।।

मद्य नाम मदिरा को खजूर, दाख, फालसा और अनार इन सबके रस में मिलाय पीवे तो सम्पूर्ण मदात्यय यानी बहुत खाने पीने से उत्पन्न हुआ मद (नशा) दूर होता है।।६२।।

कोदों से उत्पन्न हुई नशा के तथा धतूरे के नशा को
दूर करनेवाला अर्क

कूष्माण्डार्को गुडयुतः कोद्रवोत्थमदात्यये ॥
दुग्धार्कः सितया युक्तो धूर्तजे तु मदात्यये ॥६३॥

कुम्हड़े का अर्क गुड़ के संग पीने से कोदों से उत्पन्न हुई नशा दूर होती है। दूध का अर्क मिश्री मिलाय के पीवे तो धतूरे की नशा उतर जाती है॥६३॥

अन्य अनेक प्रकार के नशों को हरनेवाला अर्क

जलार्कः शीतलो हन्ति छर्दिमूर्च्छातिसारजम् ॥
तम्बूलोत्थं च चूर्णार्कः शर्करार्कस्तु पूगजम् ॥६४॥
जातीफलोत्थं पथ्यार्कोऽम्लजो भंगासमुद्भवम् ॥
शीततोयावगाहोत्थं शर्करादधिचार्ककः ॥६५॥
अयमेव बिभीतोत्थं खाखसोत्थं तदुद्भवः ॥
निम्बार्कश्चाहिफेनोत्थं हरेत्पानात्ययं प्रिये ॥६६॥

जल (नेत्रवाला) का ठंडा अर्क वमन मूर्च्छा, बेहोशी और अतीसार को नष्ट करता है। चूने का अर्क पान के मद को और शक्कर का अर्क सुपारी के मद को नष्ट करता है। हड़का अर्क जायफल के मद को दूर करता है। खटाई का अर्क भांग के मद को दूर करता है। ठंड़े पानी में पैरने से उत्पन्न हुए मद को शक्कर दही का अर्क दूर करता है। और यही अर्क बहेड़े से उत्पन्न मद को दूर करता है। खसखस का अर्क पोस्त के मद को दूर करता है। रावण अपनी स्त्री से कहता है कि हे प्रिये! नींबू का अर्क अफीम के मद को दूर करता है॥६४-६६॥

दाहादि के ऊपर अर्क

कोलामलकसंयुक्तं धान्याम्लं सर्वदाहनुत् ॥
छादयेत्तस्य सर्वाङ्गं तदर्केणैव वाससा ॥६७॥

बेर और आंवले के साथ धनियां का अर्क सम्पूर्ण दाह को दूर करता है

और जिसके पवन का विकार हो उसके छोटी कटाई का अर्क सब अंग में लगावे।।६७।।

स्वेद (पसीना) नाशक अर्क

सर्वाङ्गार्धांगकः स्वेदो वृन्ताक्यर्कप्रलेपनात् ।।
हस्तपादभवः स्वेदो मर्दनाद्गच्छतो भृशम् ।।६८।।

छोटी कटाई का अर्क शरीर में लेपन करने से सब अंग तथा आधे अंग का स्वेद (पसीना) तथा हाथ पांव का पसीना दूर होता है।।६८।।

सब उन्मादों को हरनेवाला अर्क

शंखपुष्पीभवो वाऽपि कूष्माण्डफलसंभवः ।।
मधुकुष्ठान्वितश्चार्कः सर्वोन्मादविनाशकः ।।६९।।

शंखाहुली का या कुम्हड़े के फल का अर्क शहत और कूट के साथ पीवे तो यह सर्व उन्मादों को दूर करता है।।६९।।

भूतोन्मादको हरनेवाला अर्क

ज्वालामरिचजार्कस्य पानान्नस्याद्विलेपनात् ।।
अञ्जनात्प्रशमं यांति भूतोन्मादक्षयाः क्षणात् ।।७०।।

चीता और मिर्च के अर्क के पीने से, सूंघने से, लेपन करने से तथा अंजन करने से क्षणमात्र में भूतोन्माद रोग नष्ट होता है।।७०।।

मृगीरोग पर अर्क

केतकस्य फलार्कस्य नस्यात्कर्णप्रपूरणात् ।।
पानादञ्जनतो हन्यादपस्मारं न संशयः ।।७१।।

केतकी के फल के अर्क के सूघंने से, कानों में डालने से, पीने से तथा अंजन लगाने से अवश्य करके मृगीरोग नष्ट हो जाता है।।७१।।

बहिरापन नाशक अर्क

वचात्वक्पिपलीशुण्ठीहरिद्रायष्टिसैन्धवम् ।।
अजमोदाजाजिजोऽर्कः कुर्याच्छ्रुतिधरं नरम् ।।७२।।

वच, तज, पीपरि, सोंठ, हलदी, मुलहठी, सेंधानोन, अजमोद और काला

जीरा इन सबका अर्क बहिरापन को दूर करता है।।७२।।

बाहुशोष और अफरारोग के ऊपर अर्क

बाहुशोषे बलामूलकृतार्कः सैन्धवान्वितः ।।
आध्माने क्षौद्रखण्डाद्यस्त्रिवृतापिप्पलीभवः ।।७३।।

बाहुशोषरोग में खरैटी की जड़ का अर्क सेंधेनोन के साथ गुण करता है। निसोथ व पीपरिका अर्क शहत और शक्कर के साथ खाने से अफरारोग को दूर करता है।।७३।।

गृध्रसीरोग के ऊपर अर्क

अतिस्विन्नं तु गोमूत्रे बीजमेरण्डजं ततः ।।
कृतार्कः पलमात्रस्तु पेयो गृध्रसिनाशनः ।।७४।।

एरंडी के बीजों को गोमूत्र में खूब भिगोवे फिर उसका अर्क खींच लेवे। इस अर्क को एक पलमात्र रोज पीने से गृध्रसीरोग दूर होता है।।७४।।

वायुलोहूगांठ के ऊपर अर्क

गुडूचीत्रिफलाम्भोभिर्भावितं गुग्गुलं बहु ।।
क्षीरेणैरण्डतैलेन तदर्कः क्रोष्टुशीर्षहा ।।७५।।

गिलोय, त्रिफला व मोथा इनसे बहुत भिगोया हुआ गूमल, दूध और एरंड़ के तेल के साथ खींचा हुआ अर्क कोष्टुशीर्ष अर्थात् वायुलोहू गांठ के सूजन को नष्ट करता है।।७५।।

वादी को नष्ट करनेवाला अर्क

शेफाल्येरण्डसेहुण्डधत्तूरार्काश्विमारकैः ।।
वक्रीकृतशिवामांसविषैरर्कः समीरहा ।।७६।।

राननिर्गुंडी, एरंड, थूहर और धतूरा इनका अर्क कुटी हुई हर्र की मींगी और विषों के साथ देने से वादी को दूर करता है।।७६।।

वातरक्तहर अर्क

गुडूच्यर्कः शुण्ठियुक्तो वातरक्तहरः परः ।।

वत्सादन्युद्भवोऽर्को वा पीतो गुग्गुलुसंयुतः ॥७७॥

गुर्चका अर्क सोंठ के संग पीने से वातरक्त को नाश करता है। गिलोय भेद का अर्क गूगल के साथ पीने से वातरक्त को हरता है॥७७॥

ऊरुस्तंभहर अर्क

त्रिफलाग्रन्थिकव्योषभवमर्कं समाक्षिकम् ॥
ऊरुस्तम्भविनाशाय समूत्रं वा पुरार्ककम् ॥७८॥

त्रिफला, पिप्पलामूल और त्रिकुटा का अर्क शहत में मिलाय पीवे तो ऊरुस्तम्भरोग को दूर करता है और गाय के मूत्र के साथ गूगल का अर्क पीने से भी ऊरुस्तंभन दूर होता है॥७८॥

आमवात और रूखापन नाशक अर्क

शटी शुण्ठी शिवा सोग्रा देवाह्वाऽतिविषा स्मृता ॥
एषामर्कं पिबेदामवाते रुक्षे च भक्षयेत् ॥७९॥

कचूर, सोंठ, हड़, वच, देवदारु और अतीस इन सबका अर्क पीने से आमवात को दूर करता है। इसको रूक्ष (खुश्की) में भी देना योग्य है॥७९॥

पित्तजरोगों पर अर्क

अर्कस्तु शतपत्र्या वा सेवन्त्या द्राक्षजोऽपि वा ॥
चन्दनोशीरजो वापि हन्यात्पित्तभवान् गदान् ॥८०॥

कमलिनी, गुलाब, दाख, चन्दन और खस इनमें से किसी एक औषधि का अर्क पित्तरोग को दूर करता है॥८०॥

कफज रोगों पर अर्क

वचार्को वमनं हंति त्रिवृदर्को विरेचनम् ॥
तुम्बुरार्कः पाचनेन कफरोगान्न संशयः ॥८१॥

वच का अर्क वमन रोग का नाश करता है। निसोथ का अर्क दस्तों को दूर करता है। तुंबरू वृक्ष का अर्क पाचन से अवश्य कफ को दूर करता है॥८१॥

साध्य और असाध्य शूलरोगों के ऊपर अर्क

अश्वविष्ठाभवश्चार्को भृष्टहिंगुसमन्वितः ॥
तत्कालं तु हरेच्छूलं साध्यासाध्यं न संशयः ॥८२॥

घोड़े की लीद का अर्क भूनी हीग के साथ उसी क्षण में साध्य और असाध्य शूल को निसंदेह नाश करता है॥८२॥

पक्तिशूलहर अर्क

त्रिवृदेरण्डदंतीनामकणव विरेचनम् ॥
तिम्बार्कः कटुतुम्ब्यर्कः पक्तिशूलहरास्त्रयः ॥८३॥

निसोथ, अरंड और व्रजदंती के अर्क से दस्त हो जाते हैं। तथा नींबू का अर्क तथा कड़वी तुंबी का अर्क ये तीनों पक्तिशूल को दूर करते हैं॥८३॥

उदावर्तरोग नाशक अर्क

सव्योषं पिप्पलीमूलं त्रिवृद्दन्ती च चित्रकम् ॥
एतदर्क गुप्तगुडमुदावर्तविनाशनम् ॥८४॥

त्रिकुटा, पीपलामूल, निसोथ, वज्रदंती और चित्रक इन सबका अर्क गुड़ मिलाय के पीने से उदावर्त (दरद मात्र की पंक्ति) को अवश्य दूर करता है॥८४॥

अफरारोग को हरनेवाला अर्क

त्रिवृत्कृष्णाहरीतक्यो द्विचतुः पञ्चभागिकाः ॥
गुडयुक्तश्चैतदर्को हन्त्याध्मानं न संशयः ॥८५॥

निसोथ दो भाग, पीपरि चार भाग और हड़ पांच भाग इन सबका अर्क गुड़ के साथ पीने से निःसंदेह अफरारोग को दूर करता है॥८५॥

हृदयरोग नाशक अर्क

हरीतकीवचाशस्त्रापिप्पलीनागरोद्भवः ॥
शटीपुष्करमूलोत्थश्चार्को हृद्रोगनाशनः ॥८६॥

हड़, वच, पीपरि और सोंठ इन सबका अर्क और सांठी और पुहकरमूल

का अर्क हृदयरोग को दूर करता है।।८६।।

वायगोले के ऊपर अर्क

कुमारिकार्कः सरसः सर्वगुल्मविनाशनः ।।
दुग्धशुक्तिभवार्कं वा भक्षयेद्वा गुडान्वितम् ।।८७।।

घीग्वार के पाठे का अर्क पतला पीवे तो सर्व प्रकार के गुल्मरोगों को दूर करता है और दूध का अर्क गुड़ के साथ पीवे तो वायगोला दूर होता है।।८७।।

रक्तगुल्मनाशक अर्क

पलाशवज्रशिखरीचिञ्चार्कतिलनालजाः ।।
यवजः स्वर्जिका चेति क्षारार्को रक्तगुल्मनुत् ।।८८।।

ढाक, पारीख, थूहर, ओंगा, इमली, तिलनाली, जवाखार और सज्जी इन सबका खारा अर्क रक्तगुल्म (गोले के रोग) को नाश करता है।।८८।।

प्लीहरोग नाशक अर्क

समुद्रशुक्तिजार्को वा पिप्पल्यर्कः सदुग्धकः ।।
अर्कार्को वा सलवणः प्लीहरोगविनाशनः ।।८९।।

समुद्रसीपीं से खींचा हुआ अर्क और पीपरि का अर्क दूध के साथ और आक का अर्क लवण के साथ पीने से प्लीहा (तापतिल्ली) के रोग को नाश करता है।।८९।।

यकृद्रोग नाशक अर्क

कृष्णाविन्दसमुद्भूतो ह्यर्कः क्षारान्वितोऽपि वा ।।
पूतीकरञ्जजोऽर्को वा यकृच्छूलविनाशनः ।।९०।।
पुनर्नवा सातला च हरिद्रा च कुमारिका ।।
कृष्णाविन्दसमुद्भूतो ह्यर्कः क्षारान्वितोऽपि वा ।।९१।।

पीपरि और मोथा से उत्पन्न अर्क वा आक के खार के साथ पूती करंज के भेद का अर्क दक्षिण पार्श्व की शूल को दूर करता है। सांठी, सोवा,

हलदी और घीग्वार का पट्ठा इन सबका अर्क शूल को हरता है और पीपरि, मोथा से उत्पन्न अर्क आक के खार सहित पीवे तो शूल को दूर करता है।।९०-९१।।

मूत्रकृच्छ्ररोग के ऊपर अर्क

आरग्वधो दर्भकासपथ्याधात्रीत्रिकण्टकाः ।।
यवासगिरिभेदार्कः सक्षौद्रो मूत्रकृच्छ्रहा ।।९२।।

अमलतास, दाभ, कास, वड़, आंवला, गोखरू, जवासा और पाषाण भेद इन सब का अर्क शहत के संग पीने से मूत्रकृच्छ्र को दूर करता है।।९२।।

मूत्राघातरोग के ऊपर अर्क

कुशकाशबलामूलनलेक्ष्वर्कः सितायुतः ।।
धान्यागोक्षुरजोऽर्को वा ससितो मूत्रघातहा ।।९३।।

कुश, कास, खरेटी की जड़, सोंठ और ईख इन सबका अर्क मिश्री के साथ वा धनियां व गोखरू का अर्क मिश्री डालकर पीवे तो मूत्राघात रोग का नाश करता है।।९३।।

पथरी और शर्करारोग के ऊपर अर्क

कूष्माण्डार्को यवक्षारो हिंगुयुक् चाश्मरीप्रणुत् ।।
शरपुंखाक्षारमूत्रभवोऽर्कः शर्करां हरेत् ।।९४।।

कुम्हड़े का अर्क जवाखार और हींग मिलाय पीने से पथरी रोग दूर होता है और शरफोंका का खार गोमूत्र में शक्कर मिलाय पीने से गांठ वाला मूत्ररोग दूर होता है।।९४।।

प्रमेहरोग के ऊपर अर्क

गुडूच्यर्कः सितायुक्तो गोक्षुरार्कोऽथवा हरेत् ।।
स्तम्भिन्यर्कोऽथवा मेहं मण्डलाद्दुग्धसेविनः ।।९५।।

गुर्च का अर्क मिश्री मिलाय वा गोखरू का अर्क वा स्तंभिनी का अर्क प्रमेह को दूर करता है। इनके सेवन में पन्द्रह रोज दूध पीवे।।९५।।

महामेदरोग नाशक तथा शरीरदुर्गन्धि नाशक अर्क

पिप्पल्यर्का मधुयुतो महामेदविनाशनः ।।
बिल्वपत्रभवोऽर्कश्च देहदौर्गन्ध्यनाशनः ।।९६।।

पीपर का अर्क शहत युक्त कर पीने से महामेद को नाश करता है। बेलपत्र का अर्क देह की दुर्गन्धि को दूर करता है।।९६।।

शरीरपुष्टीकरण अर्क

हयगन्धा सगोक्षूरा सत्वचा वटकाण्डकैः ।।
निष्कासितो वा तन्मांसैरर्कः स्थौल्यकरः परः ।।९७।।

असगन्ध, गोखरू, तज और वड़ की जटा इन सबका निकाला हुआ अर्क और मांस का अर्क शरीर को बहुत ही अधिक मोटा कर देता है।।९७।।

कुष्ठनाशक अर्क

मञ्जिष्ठा त्रिफला तिक्ता वचा दारुनिशाऽमृता ।।
निंब आभिः कृतार्कस्तु पानात्कुष्ठं विनाशयेत् ।।९८।।

मंजीठ, त्रिफला, कुटकी, वच, देवदारु, हलदी, गिलोय, नींब इन सबका अर्क पीने से कुष्ठ का नाश होता है।।९८।।

सिध्मकुष्ठ नाशक अर्क

सर्षपा रजनी कुष्ठं मूलबीजं प्रियङ्गवः ।।
काश्मीरी चैतदर्कस्तु सिध्मकुष्ठं विनाशयेत् ।।९९।।

सरसों, दोनों हल्दी, कूट, मूली के बीज, कांगनी और कुम्हरेण इन सबका अर्क सिध्मनाम वाले कुष्ठ को दूर करता है।।९९।।

खुजली और दाद को नष्ट करनेवाला अर्क

मञ्जिष्ठात्रिफलालाक्षालाङ्गलीरात्रिगन्धकः ।।
समैस्तिलैश्च गोधूमैर्हरेत्पामां महद्रुजम् ।।१००।।

कुष्ठं क्रमिजदद्रुघ्ननिशासैन्धवसर्षपाः ॥
आम्रास्थिश्चैतदर्को वा लेपाद्दद्रुं विनाशयेत् ॥१०१॥

इति श्रीरावणकृतार्कप्रकाशे पंचमं शतकं समाप्तम् ॥५॥

मंजिठ, त्रिफला, लाख, करियारी, हलदी, गन्धक, वरांवरके गेहूं और तिल मिलाकर इन सवका अर्क पीने से महाभारी भी पामारोग को दूर करता है। कूट, लाख, पमार, हलदी, सेंधानोन सरसों और आम की गुठली इन सबके अर्क का लेप करने से दादरोग दूर होता है॥१००-१०१॥

इति पण्डितमुकुन्दरामकृतार्कसंग्रह हिन्दीटीकायां पञ्चमं
शतकं समाप्तम् ॥५॥

******
****

षष्ठं शतकम्

रावण उवाच

गलगण्डरोग को नष्ट करनेवाला अर्क

श्वेतापराजितामूलजातोऽर्कः सर्पिषा सह ॥
गलगण्डं हरेदेव मंडलात्पथ्यभोजने ॥१॥

रावण मंन्दोदरी से बोले कि हे प्रिये! सफेद अनंता की जड़ का अर्क घृत के साथ एक मंडल (पक्षभर) पीवे और खूब पथ्य से भोजन करे तो गले की गांठ को हरता है॥१॥

गण्डमाला को हरनेवाला अर्क

काञ्चनारत्वचार्कस्तु शुण्ठीचूर्णेन संयुतः ॥
माक्षिकाढ्यो गंडमालां बहुकालोद्भवामपि ॥२॥

कचनार की छाल का अर्क सोंठ के चूर्ण के साथ और सोनामाखी के

साथ पीवे तो अधिक दिनों का भी गण्डमाला रोग नष्ट होता है।।२।।

ग्रंथिरोग नाशक अर्क

स्वर्जिकामूलकक्षारजातः शंखस्य चूर्णयुक् ।।
कृतस्तेन प्रलेपश्चेद् ग्रन्थिं हन्ति न संशयः ।।३।।

सज्जी और मूली के खार का अर्क शंखचूर्ण को डालकर यदि किसी से लेप किया जावे तो उसकी गांठ का अवश्य करके नाश होता है।।३।।

मेदार्वुदरोग नाशक अर्क

हरिद्रालोध्रपतगगृहधूममनः शिलाः ।।
मधुप्रगाढश्चार्कस्तु मेदोर्बुदहरः परः ।।४।।
वटदुग्धप्रगाढे च सप्ताहं कुष्ठरोमके ।।
तदर्कस्य प्रलेपेन हरेदस्यार्बुदं क्षणात् ।।५।।

हलदी, लोध, पतंग, धमासा और मैनसिल इनको सहत के संग गाढ़ा (खूब) साने, उपरान्त अर्क निकाले यह अर्क मेद, अर्बुद और आमादिं को विशेष करके हरता है। वड़ के जड़ के दूध में साने हुए कूट रोमक (सांभर नोन) का अर्क का सात दिन तक लेप करे तो भी अर्बुदरोग शीघ्र दूर हो जाता है।।४-५।।

श्लीपदरोग नाशक अर्क

धत्तूरैरण्डनिर्गुण्डीवर्षाभूशिग्रुमूलजैः ।।
अर्कैः पिष्टाः सर्षपास्तु प्रलेपाच्छ्लीपदापहाः ।।६।।

धतूरा, एरण्ड, संभालू, श्वेत साठी और सहिजना इनकी जड़ से बने हुए अर्क में पीसी हुई सरसों का लेपन करे तो श्लीपद (पादरोग) दूर होता है।।६।।

विद्रधिरोग नाशक अर्क

यवगोधूममुद्गानां पिष्टं सम्यग्विलोडितम् ।।

विषमुष्टिभवार्केण विलेपाद्विद्रधिप्रणुत् ॥७॥
क्षौद्रजातेन मद्येन क्षालयेत्पक्वविद्रधिम् ॥
अहिफेनाक्षफेनाभ्यां पूरणाद्विद्रधिं हरेत् ॥८॥

यव, गेहूं, मूंग की दाल की पीठी, कुचले के अर्क के संग मिलाकर लेपन करने से विद्रधि और फोड़ों का विशेष करके नाश करता है। शहत से उत्पन्न मद्य के पके हुए विद्रधि नाम फोड़े को धोवे फिर अफीम और आखुफेन के भरने से विद्रधि का नाश होता है॥७-८॥

शोथ (सूजन) रोग को दूर करनेवाला अर्क

वातघ्नौषधिजातार्कस्तन्मांसार्कस्तथा घृतैः ॥
उष्णैः संसेचयेच्छोथं काञ्जिकार्केण वातजम् ॥९॥

बादी को दूर करनेवाली औषधि से बना हुआ अर्क और पूर्वोक्त मांसार्क ये दोनों कुछ गर्म करके सूजे हुए पर सेंके और कांजी के अर्क से वात से उत्पन्न सूजे हुए पर सेंक करे तो उत्तम हो॥९॥

पित्तरक्त और चोट से उत्पन्न हुई सूजन पर अर्क

पित्तरक्ताभिघातोत्थं शोथं सिंचेच्च शीतलैः ॥
क्षीराज्यमधुखण्डेक्षुजातार्को मालतीभवैः ॥१०॥

पित्त, रक्त और चोट से उत्पन्न सूजन को ठंड़े दूध घृत, शहत , शक्कर, ईख और चमेली इन सबके अर्कों से करे तो अवश्य सूजन रोग आराम होवेगा॥१०॥

कफ से उत्पन्न हुई सूजन पर अर्क

कफघ्नौषधसञ्जातैरर्कैरुष्णैश्च सेचयेत् ॥
तैलदुग्धांबुमूत्रैर्वा शोथं श्लेष्मसमुद्भवम् ॥११॥

कफके दूर करने वाली औषधियों के गरम गरम अर्क से वा तेल, दूध, जल और गाय का मूत्र इनसे भी कफविकारी सूजन को सींचे तो आराम करता है॥११॥,

घाव से उत्पन्न हुई सूजन पर अर्क

विषोपविषञ्जातैरर्कैः कोष्णैस्तु सेचयेत् ।।
वारुण्या वा खाखसार्कैर्व्रणशोथः क्षयं व्रजेत् ।।१२।।

विष और उपविषों के गरम गरम अर्क से वा वारुणी (मदिरा) और खसखस के अर्क से सेचन करे तो अवश्य फोड़ों की सूजन दूर होती है।।१२।।

सूजन पर अन्य उपाय

न प्रशाम्यति यः शोथः प्रलेपादिविधानतः ।।
द्रव्याणि पाचनीयानि दद्यात्तत्रोपनाहके ।।१३।।

जो सूजन पर लेप आदि करने से दूर नहीं होवे तो वहां पाचन औषधि का बंधन करे।।१३।।

व्रणपाचन अर्क

शणमूलकशिग्रूणां मूलानि तिलसर्षपाः ।।
अतसीसक्तवः किञ्जिदुष्णं देयं च पाचनम् ।।१४।।

सन, मूली, सहिजना इनकी जड़ और तिल, अलसी और सत्तू इनका अर्क कुछ गरम कर धोने से अवश्य सूजन जल्दी से पक जाती है।।१४।।

शस्त्र के विना व्रणभेद के उपाय

अन्तःपूयेषु वक्रेषु तथैवोत्संगवत्स्वति ।।
गतिमत्स्वपि रोगेषु भेदनं सम्प्रयुज्यते ।।१५।।
बद्धमूलातिपंकेन तुवरीछिद्रकानलैः ।।
व्रणसंयोगिनीशंखद्रावैः पूर्यात्तु यामकम् ।।१६।।
तुवरीसदृशच्छिद्रं यामेनैकेन जायते ।।
विना शस्त्रं शस्त्रकर्मकरमेतदपीडनम् ।।१७।।

जिनके भीतर की राध चुवने लगी है वा जो टेढ़े हो गये हों वा जो ऊंचाई लिये हों वा जो बालों में हों उनका भेदन करना अर्थात् चीरना

उत्तम है। और जिसकी जड़ में मिट्टी लिपटी हो, अरहरके समान छिद्र हो और फोड़ा बराबर संयुक्त भई ऐसा छिद्र हो तो उसको एक प्रहर भरतकशंखद्राव से भरी फोड़े पर रखना चाहिये ऐसे ही एक प्रहर तक रखने से अरहर समान छिद्र हो जाता है, यह बिना ही हथियार (औजार) के कारीगरी है। यह पीड़ा भी नहीं देने वाली है और हथियार का काम उत्तम तरह से देती है।।१५-१७।।

व्रणशुद्धि के लिये अर्क

अविशुद्धव्रणस्तु स्यादर्कः शुचिकरः परः ।।
पटोलनिम्बपत्रोत्थसर्वत्रैव प्रयुज्यते ।।१८।।

बिना शोधे फोड़ों का शोधन करने वाला परवल और नींब के पत्तों का अर्क सब प्रकार के फोड़ों पर चुवाया जाता है।।१८।।

घाव को भरने वाला अर्क

अश्वगन्धाजहालोध्रकट्फलं मधुयष्टिका ।।
समङ्गाधातकीपुष्पजातोऽर्को व्रणरोपणः ।।१९।।

असगन्ध, कौंच, लोध, कायफल, मुलहठी, माई और धाई के फूलों का अर्क फोड़ों के घाव को जल्दी भरता है।।१९।।

शस्त्र से हुए घाव को भरने वाला अर्क

खड्गादिच्छिन्नगात्रस्य मद्येनापूरितो व्रणः ।।
तथा नागबलार्केण तीव्रां वा वेदनां हरेत् ।।२०।।

खड्ग नाम तलवार आदि से कटा हुआ घाव मदिरा से खूब भर जाता है अथवा नागवेल का अर्क सम्पूर्ण पीड़ा को दूरकर देता है।।२०।।

सब तरह के घावों को भरने वाला अर्क

जातीपटोलनिम्बानां नक्तमालस्य पल्लवाः ।।
सिक्थं च मधुकं कुष्ठं द्वे निशे कटुरोहिणी ।।२१।।
मञ्जिष्ठा पद्मकं पथ्या लोध्रकं नीलमुत्पलम् ।।
नक्तमालफलं तुल्यमहिफेनं च सारिवा ।।२२।।

एतानि समभागानि कल्कीकृत्य प्रयत्नतः ॥
गोमूत्रेण तदर्कं तु दशांशादिकवासितम् ॥२३॥
विलेपनाद्भक्षणाच्च हरेत्सर्वव्रणामयम् ॥
विषव्रणं च विस्फोटं विसर्पं कीटदंशितम् ॥२४॥
दत्तशस्त्रप्रहारं च दग्धं विद्धं व्रणं तथा ॥
नखदन्तक्षतं हन्ति दुष्टमांसं च कर्षयेत् ॥२५॥
कटुवल्ल्या कुमार्या वा कोष्णेनार्केण सेचयेत् ॥
अग्निदग्धव्रणं तस्मात्सर्वचर्मप्ररोहणम् ॥२६॥

चमेली, परवल, नींब, कंजावृक्ष के पत्तों का अर्क वा शहत, कूट, दोनों हलदी, कड़वी रोहिणी, मंजीठ, पदमाख, हड़, लोध, नीला कमल, करंजीवृक्ष का फल, नीलाथोथा, अफीम और सारिवा इनको बराबर २ लेकर यत्न से इनकी खलीसी करके गोमूत्र से अर्क निकाल उसको दशांश आदि से धूप देवे फिर उसको लेपन करने से तथा खाने से सब प्रकार के व्रण (फोड़ा फुंसी) रोगों को दूर करता है और विषवाले फोड़ों को, विस्फोट को, विसर्प (फफोला) कीड़े से डसा हुआ जो घाव है उनको हरता है और लगे हुए हथियार की मार को, जले हुए वा विंधे व्रण को तथा नख और दांत के काटे घावों को नाश करता है और दुष्ट मांस को खैंचता है। गजपीपरि का और घीग्वार के पट्ठे का अर्क गरम करके अग्नि से जले हुए घाव पर सेचन करे तो सब खाल तुर्त भर जावेगी॥२१-२६॥

सन्धिभग्न के लिये अर्क

अस्थिसंहारकं लाक्षागोधूमार्जुनसाधितम् ॥
पिबेदर्कं सन्धिभग्ने सघृतं वा यथोचितम् ॥२७॥

हरसिंहार, लाख, गेरू और अर्जुनवृक्ष के पत्ते इनसे साधा हुआ अर्क घी मिलाय यथारुचि संधिभग्न (हड़फूटन) में पीवे॥२७॥

बिगड़े हुए रक्तपर अर्क (मद्य)

हरिद्राक्षौद्रतुवरीरक्तचन्दनदार्विका: ॥
गुडेन साधितं मद्यं मृतरक्तं व्यपोहति ॥२८॥

हलदी, शहत, अरहर, लाल चन्दन और दारु हलदी इन सबका गुड़ के साथ में साधा हुआ मद्य भरे खूनरोग को खोता है॥२८॥

कुष्ठहर अर्क

कुक्कुटं कृष्णवर्णं तु जलेऽष्टगुणिते पचेत् ॥
सरसन्तं विपक्षं च दद्यात्कोष्ठप्रशान्तये ॥२९॥

काले रंग का मुर्गा आठ गुणे जल में पकावे फिर उसका पंख अलग करके अर्क निकाल लेवे और कोठे की शुद्धि के अर्थ देवे॥२९॥

नाड़ीव्रण (नहसूर) के लिये अर्क

स्नुह्यर्कदुग्धदार्वीभिर्मद्यं क्षौद्रेण साधयेत् ॥
वारंवारं भावितं च वर्तिनाडीव्रणांतकृत् ॥३०॥

थूहर और आक का दूध और दारु हलदी करके शहद के साथ मद्य निकाल उसमें बार बार भिगोई बत्ती नाड़ीव्रण (नहसूर) का नाश करती है॥३०॥

भगंदर रोग को हरनेवाला अर्क

शुंठी च वटपत्राणि जातीपत्रामृते तथा ॥
सैंधवं तक्रनिक्षिप्तं तदर्कस्तु भगंदरे ॥३१॥

सोंठ, वड़ के पत्ते, जावित्री, गिलोय और सेंधानोन इनको मट्ठे में भिगोय इनका अर्क निकाले यह भगन्दर रोग को दूर करता है॥३१॥

उपदंश को दूर करनेवाला अर्क

लोध्रजम्बूवटशिवार्जुनरात्रिसमुद्भव: ॥
अर्क: पानादितो हन्यादुपदंशं नरस्त्रियो: ॥३२॥

लोध, जामुन, वड़ की जटा, हड़, अर्जुनवृक्ष और हलदी इन सबका अर्क पीने से और लगाने से पुरुष और स्त्री दोनों के उपदंश और गर्मी के

रोगों को नाश करता है॥३२॥

शूकरोगहारी अर्क

अश्वगन्धावरीकुष्ठमिसिसिंहीबलान्वितम् ॥
संशोध्य दुग्धेन तदा ह्यर्कः शूकगदापहः ॥३३॥

असगंध, वरियारी, कूट, सोंफ, करेली और खरेटी इनका दूध में शोधन करके अर्क निकाले, यह अर्क शुक्ररोग को दूर करता है॥३३॥

विसर्परोगहारी अर्क

यष्टीशिरीषतगरमांस्येलाश्चन्दनं शिला ॥
आज्यं च वा लकं कुष्ठमर्कः सेकाद्विसर्पजित् ॥३४॥

मुलहठी, सिरस, तगर, जटामांसी, इलायची, चन्दन, मैनसिल, घी, नेत्रवाला, कूट इन सबके अर्क से सेचन करने से विसर्प (फोड़ा फुंसी) वगैरह रोग दूर होता है॥३४॥

स्नायुरोगनाशक अर्क

निर्गुण्डयर्को गव्यहव्ययुक्तो वा सुषवीभवः ॥
शीतलार्को हरेच्छीघ्रं स्नायुरोगं न संशयः ॥३५॥

संभालू के अर्क में गाय का घृत और शहत मिलायकर पीवे यह वा निसोथ या थूहर का अर्क शीघ्र ही स्नायु के रोग को दूर करता है॥३५॥

शीतलारोग को दूर करनेवाला अर्क

सप्तवस्त्रं तंडुलाम्बुक्लिन्नार्देन्द्रयवाप्लुतः ॥
विस्फोटकान्निहन्त्येव तदर्को लेपसेवितः ॥३६॥

सात दिन तक चावलों के जल में भिगोये हुए इन्द्रयवों का निकाला हुआ अर्क विस्फोट (शीतला) रोग को दूर करता है॥३६॥

दाहयुक्तविस्फोटरोग शामक अर्क

उत्पलं चन्दनं लोध्रमुशीरं सारिवाद्वयम् ॥
एतदर्को धावनेन स्फोटदाहार्तिनाशनः ॥३७॥

कमल, चन्दन, लोध, खस और दोनों सारिवा इनके जो अर्क से धोवे तो विस्फोटक की दाह और पीड़ा का नाश होता है॥३७॥

फिरंग रोग को दूर करनेवाला अर्क

शंखद्रावार्कके क्षिप्तपारदो भस्मतां व्रजेत् ॥
वल्लं गुडयुतं खादेत्फिरङ्गविनिवृत्तये ॥३८॥
अपक्वं पारदं भुक्त्वा द्रोणपुष्पार्कसेवनात् ॥
लेपनात्स प्रयात्येव फिरङ्गो नात्र संशयः ॥३९॥
पलाशपत्रवृन्तानां सप्ताहं तस्य सेवनात् ॥
फिरङ्गो याति त्वरितं साध्यासाध्यो न संशयः ॥४०॥

शंखद्राव नामक अर्क में छोड़ा हुआ पारा भस्म हो जाता है, इसको अनुमान ३ रत्ती लेकर गुड़ के साथ फिरंगवायु के नाश करने के अर्थ खावे। बिना शोधा यानी कच्चा पारा खाय के गुम्मा के फूल का अर्क पीने से और लेपन करने से फिरंगवायु जाती रहती है इसमें कोई संदेह नहीं है। ढ़ाक के पत्तों के नाकुओं से निकले हुए अर्क को सात दिन तक पीने से फिरंग रोग असाध्य हो अवश्य करके बहुत ही शीघ्रता के साथ जाता रहता है॥३८-४०॥

मसूरिकारोग के ऊपर अर्क

स्नुहिमोहिलमोचीकार्कः समसूरिकः कौतुकेन संपीतः ॥
सकलं मसूरिकोपं गाढं जातं विनाशयेत्क्षिप्रम् ॥४१॥
निंबः पर्पटकः पाठा पटोलः कटुरोहिणी ॥
चन्दने द्वे ह्युशीरं च धात्री वासा दुरालभा ॥४२॥
एतदर्कः सितायुक्तो मसूरीमात्रनाशनः ॥
मुखे कंठे व्रणे जाते गंडूषार्थं प्रयुज्यते ॥४३॥

थूहर और हुलहुल का अर्क मसूरान्न सहित निकाल ठंढा करके पीवे तो मसूरिका रोगों का कोप भारी होने पर भी शीघ्रता से नाश करता है। नींब, पित्तपापड़ा, पाठा, परवल, कड़वी, रोहिणी, चन्दन दोनों, खस,

आंवला, वांसा और जवासा इन सबका अर्क मिश्रीयुक्त लेने से मसूरी अर्थात् सब देह में फुंसीरोग मात्र को दूर करता है और मुख और कंठ में फोड़ा होने पर भी कुल्लों के निमित्त यही दिया जाता है।।४१-४३।।

गौररोग नाशक अर्क

गोमयार्कस्य लेपेन पानेन विलयं व्रजेत् ।।
गोक्षुरं वाथ तत्पूर्वं ज्वरेऽद्याद्दधिसर्पिषा ।।४४।।

गोबर के अर्क के लेप से और पीने से भी गौर विलय (नाश) हो जाता है। गोखरू का अर्क ज्वर के प्रथम रोगी मनुष्य दही घृत के साथ पीवे।।४४।।

शिवजी और ब्रह्माजी का संवादकथन

रावण उवाच

आदौ कृतयुगे ब्रह्मा महेशं वाक्यमब्रवीत् ।।
तवाज्ञया मया देव सृष्टा नानाविधाः प्रजाः ।।४५।।
समस्ता भूस्तु तैर्व्याप्ता भवन्त्यन्येऽपि तद्विधाः ।।
कामेन यान्ति भार्यासु पुनः सृष्टिः प्रवर्तते ।।४६।।
गजैरश्वैर्मनुष्याद्यैर्व्याप्तेयं तु धराऽखिला ।।
शीघ्रं यास्यंति पाताले तत्र यत्नो विधीयताम् ।।४७।।

रावण कहते हैं कि हे प्रिये मन्दोदरी! सुनो प्रथम सत्ययुग में ब्रह्माजी ने महादेवजी से यह वाक्य कहा है कि हे देव! आपकी आज्ञा से हमने अनेक प्रकार की प्रजा रची है और सम्पूर्ण पृथ्वीमंडल उस प्रजा से खूब भर गया है फिर जन्मते हैं और बढ़ जाते हैं यानी जिनके होने का काम और विवाहादिक का कोई भी नियम नहीं इस कारण हे शिवजी! बड़ी हानि है और हाथी घोड़ा आदि और मनुष्यों से सम्पूर्ण पृथ्वी खूब भर गई है अब बोझा अधिक है इस कारण वह पाताल में चली जायगी इससे अब कोई यत्न करना उचित है।।४५-४७।।

महाभयंकर कालपुरुष की उत्पत्ति

एवं ब्रह्मवचः श्रुत्वा शूलमैक्षन्महेश्वरः ॥
ततो जज्ञे पुमानेको भीमो घोरपराक्रमः ॥४८॥
रक्तान्तलोचनः क्रोधी वडवाग्नियुतो नरः ॥
ऊर्ध्वकेशो ललज्जिह्वः कृताक्रोशोऽजितेन्द्रियः ॥४९॥

इस प्रकार ब्रह्मा का वचन सुनकर महादेवजी ने अपने त्रिशूल को देखा तो देखते ही उसमें से एक भयानक, घोर पराक्रम वाला पुरुष निकला सो कैसा है कि, यम के से रक्तनेत्रवाला, क्रोधी मानो अग्नि के समान, ऊंचे बालों वाला, जीभ निकाले, एकवारगी चिल्लाता हुआ और अजितेंद्रिय ऐसा उत्पन्न हुआ॥४८-४९॥

भवितव्यता की उत्पत्ति

तद्दृष्ट्वा तु महादेवः पार्वतीं वाक्यमब्रवीत् ॥
जात एव महाक्रूरः सर्वसंहारकारकः ॥५०॥
एतस्य मोहनार्थाय देहि भार्यां यथोचिताम् ॥
एवं शिववचः श्रुत्वा स्वकं पृष्ठं ददर्श ह ॥५१॥
ततो देवी समुत्पन्ना योच्यते भवितव्यता ॥
रूपलावण्यसंपन्ना पीनोन्नतपयोधरा ॥५२॥
मारणास्त्र मोहनास्त्रं कराभ्यां दधती शुभा ॥
श्वेतवस्त्रपरीधाना लज्जाप्रावृतलोचना ॥५३॥
सा प्रणम्य तदा देवीं शिवयोरग्रतः स्थिता ॥
शस्त्रभारभराक्रान्तकासचित्तविमोहिनी ॥५४॥

उसको देखकर शिवजी पार्वती से बोले कि हे पार्वती! इसका रूप पैदा होते ही महाक्रूर और सबका संहार करनेवाला है। अब इसके मोहन के लिये एक बड़ी सुन्दर नारी तुम भेजो, इस प्रकार सुनकर गौरी ने अपनी पीठ की ओर देखा तो उसमें से एक देवी उत्पन्न हुई जिसको भवितव्यता कहते हैं; वह रूप और चतुराई से संयुक्त है और उसके

स्तन भारी उठे हुए हैं और मारण अस्त्र, मोहन अस्त्र अपने हाथों में धारण किये और श्वेत वस्त्र ग्रहण किये और लज्जा से नीचे नेत्र किये है, फिर वही देवी शिवजी के आगे आकर प्रणाम कर खडी हुई वह शस्त्रों के वजन से आक्रांत और काल के चित्त को मोहने वाली है।।५०-५४।।

काल और भवितव्यताका विवाह

दृष्ट्वा तां पार्वती प्राह ममाज्ञां क्रियतामिति ।।
कालस्य भव पत्नी त्वं तस्य चित्तं विमोहय ।।५५।।
याचयस्व करं श्रेष्ठं कुरु कार्यं प्रजापतेः ।।
ततः प्रीता तु सा प्राह देव्यग्रे प्रणता स्थिता ।।५६।।

इस प्रकार उस स्त्री को देखकर श्रीपार्वती ने कहा कि हमारी आज्ञा करो; तू भले प्रकार काल की स्त्री होकर इसके चित्त को हरण करना, फिर वह प्रसन्न होवे तो तू वर मांगना कि मेरा पति हो, इस प्रकार विवाह करना, कारण कि, ब्रह्माजी का कार्य करना ठीक है। तब तो वह रूपवती देवी प्रसन्नमन से पार्वती के आगे नम्रतापूर्वक जाकर वहां स्थित हो गई और बोली कि।।५५-५६।।

ममाधीनमिदं सर्वं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ।।
कालश्चायं ममाधीनः कोऽपि मां न च वेत्स्यति ।।५७।।
आब्रह्मस्तम्बपर्यंतं विष्णौ देव्यां च शूलिनि ।।
दृष्टिर्मम समैवास्ति मत्स्वरूपाविदस्त्विमे ।।५८।।
एवमुक्त्वा भवानीं सा पाणिग्रहमचीकरत् ।।
कृतकृत्योऽभवत्काल उद्वाह्य भवितव्यताम् ।।५९।।

हे देवि! वह ब्रह्मा विष्णु शिवात्मक सब जगत् मेरे ही आधीन है और यह काल भी मेरे ही स्वाधीन है औरों की बात ही क्या है, मेरे को कोई भी नहीं जानता है और ब्रह्मा से लेकर स्तब तृण (घास) आदि, विष्णु, देवी, शिवजी को सबको समान निगाह से देखती हू और मेरे स्वरूप को

यह नहीं जानते हैं, पार्वती से यह कहकर और उस भवितव्यता को ब्याहकर काल भी धन्यवाद देता हुआ॥५७-५९॥

रोगों की उत्पत्ति

कृतोद्वाहं तु तं ज्ञात्वा विधाता वाक्यमब्रवीत् ॥
शीघ्रमागम्यतां स्वामिन् सृष्टिं संहार्यतामिति ॥६०॥
ततस्तु भृत्याः कालेन रचिताः स्वस्य तेजसा ॥
भवितव्यतया सार्द्धं ततः स्वस्वामितेजसा ॥६१॥
शोषो ज्वरः पांडुसारश्वासपानात्ययादिकाः ॥
अभ्यन्तरा गिरिचराः शतशस्तेन निर्मिताः ॥६२॥
सर्पा व्याघ्रवृकाः सिंहवृश्चिका रक्षसा गजाः ॥
भूतप्रेतपिशाचाश्च बाह्यस्थाः परिचारकाः ॥६३॥
तस्याभ्यन्तरशक्त्या च कामिनी मोहिनी तृषा ॥
लिप्साऽहंकृतिबुद्ध्यृद्धिनिद्राः सेर्ष्याभयादिकाः ॥६४॥
ग्रहणीकामलासूचीछर्दिमूर्च्छाऽश्मरीतृषाः ॥
डाकिनी शाकिनी घोराइत्येता बाह्यहेतुकाः ॥६५॥

फिर उसका विवाह हो गया जानकर ब्रह्माजी ने कहा कि हे स्वामिन् काल! आप शीघ्रता से अपनी सृष्टि का संहार करो, इस प्रकार सुनकर काल ने अपने ही तेज से ऐसे ऐसे बहुत से सेवक तुर्त रचे फिर अपनी स्त्री भवितव्यता को संग ले अपने स्वामी महादेवजी के तेज से शोष, ज्वर, पांडु, अतिसार, श्वास, पानात्वय आदि भीतर और बाहर विचरने वाले सैकड़ों रोग सेवक निर्माण करे। सांप, व्याघ्र, भेड़िया, सिंह और बीछू, राक्षस, हाथी, भूत, पिशाच, बाहर रहने वाले सेवक और उसके भीतर की शक्ति से कामिनी, मोहिनी, तृषा, अहंकृति, कामला, सूची (विषूचिका) छर्दि, मूर्च्छा, अश्मरी, तृषा और डाकिनी, शाकिनी, घोरा व हत्या यह सब बाहर की शक्ति से भई॥६०-६५॥

काल को गर्व होना

एवं परिवृतं दृष्ट्वा स्वसैन्यमविचारयत् ।।
मत्तः कस्त्वधिको लोके न जाने भवितव्यताम् ।।६६।।
ब्रह्मविष्णुमहेशाद्या हननीया मयाऽऽदितः ।।
एवं विचार्य मनसि महेशं हन्तुमुद्यतः ।।६७।।

इस भांति अपने दल को सजाय इकट्ठे देखकर विचार करने लगा कि संसार में मुझसे अधिक कौन है और मैं भवितव्यता को भी कुछ नहीं जानता हूं। अब प्रथम ब्रह्मा, विष्णु, महादेव आदि मारने उचित हैं इस प्रकार मन में विचार करके श्रीमहादेवजी को मारने को तैयार हुआ।।६६-६७।।

शीतला देवी की उत्पत्ति तथा काल के गर्व का खण्डन

तं दृष्ट्वा तु महेशेन शक्तिरेका प्रदर्शिता ।।
अतिघोराविरूपाक्षी संकीर्णजघनोदरा ।।६८।।
दन्दह्यमाना कोपेन ज्वलयन्ती दिशो दश ।।
तस्यास्तु दृष्टिपातेन कालः सर्वाङ्गपीडितः ।।६९।।
तामेव विविशुः सर्वे कः प्रभुः कश्च सेवकः ।।
बलिनः सर्वे एव स्युः सेवका निर्बलस्य न ।।७०।।

उसको देखकर शिवजी ने सोचकर एक महाघोर, भयंकर नेत्रवाली, जांघ, पेट फैला है जिसका इस प्रकार शक्ति दिखलाई वह बहुत ही जलती हुई और अपने कोप से दशों दिशाओं को जलाती हुई सी थी। उसकी दृष्टि पड़ते ही काल सब अंगों से दुःखित हुआ और उसमें उसके सब साथी रोग भी समा गये। वहां कौन स्वामी और कौन सेवक देखो कि बलवान् के सब सेवक होते हैं और कमजोर के कोई नहीं होते हैं।।६८-७०।।

नानास्फोटैः परिवृतो दह्यमानो रुषाग्निना ।।
तस्येदृशीमवस्थां तु दृष्ट्वा दाहादयो गदाः ।।७१।।

भग्नाहंकारकं दृष्ट्वा तं कालं भवितव्यता ॥
ईषद्विहस्य तं प्राह नते साधुरहंकृतिः ॥७२॥
मदधीनं जगत्सर्वं मदाज्ञा क्रियतां त्वया ॥
त्वया स्वतंत्रतारम्भः कृतस्तेनेदृशी गतिः ॥७३॥
एषा मदंशसम्भूता शीतला तां प्रसादय ॥
अवश्यं तव साहाय्यं करिष्यति त्वयादृता ॥७४॥

फिर वह काल क्रोध से जलकर अनेक फोड़ा फुंसियों से युक्त हुआ उसकी इस प्रकार अवस्था देख दाह आदि सब रोग उसी को लग गये, फिर भवितव्यता उस अहंकार के पात्र काल को भ्रष्टाभिमान देखकर कुछ हँसकर बोली कि, आपका अहंकार अच्छा नहीं है, हमारे स्वाधीन सब जगत् है,इसी सबबसे आपको हमारी आज्ञा मानना चाहिये, तुमने खुद अपने वश होकर यह क्रोध किया इसी कारण यह आपकी दशा हुई। यह जो शीतला देवी हमारे ही वंश से उत्पन्न हुई है, उसको आप प्रसन्न करो तो निश्चय करके वह तुम्हारे सर्व कार्य में सहायता करेगी।।७१-७४।।

शीतलादेवी की स्तुति

काल उवाच

वंदेऽहं शीतलां देवीं रासभस्था दिगम्बराम् ॥
मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालंकृतमस्तकाम् ॥७५॥
वंदेऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम् ॥
निवर्तते यामासाद्य विस्फोटकभयं महत् ॥७६॥
शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्दाहपीडितः ॥
विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥७७॥
शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धगतस्य च ॥
प्रणष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम् ॥७८॥

अब काल भवितव्यता करके बताई हुई शीतला माता को स्तुति से प्रसन्न

करता है काल बोला, कि श्रीशीतलादेवी को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूं कि, जो देवी गर्दभपर आरूढ़ है और दिशाओं के ही वस्त्र धारे, बुहारी और कलश लिये और सूप से सजा हुआ है मस्तक जिसका ऐसी शीतलादेवी को मैं प्रणाम करता हूं सब रोग और भय को दूर करने वाली उस शीतला देवी को मैं वन्दना करता हू। जिसको प्राप्त होकर महाभयदायक विस्फोटक रोग छूट जावे। जो दाह से पीड़ित हुआ शीतला शीतला यह नाम लेवे उस मनुष्य के घर में घोर विस्फोटक रोग का भय नहीं होता है। हे शीतले! ज्वर से दग्ध हुए दुर्गन्धि वाले और अंधे प्राणियों को जीवदान देने वाली औषध तुम्हीं को कहते हैं।।७४-७८।।

शीतले तनुजान् रोगान् नृणां हरसि दुस्तरान् ।।
विस्फोटकविशीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ।।७९।।
गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणानृणाम् ।।
त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यांति संक्षयम् ।।८०।।
न मंत्रं नौषधं तत्र पापरोगस्य विद्यते ।।
त्वमेका शीतले धात्रि नान्यां पश्यामि देवताम् ।।८१।।
मृणालतंतुसदृशीं नाभिहृन्मध्यसंस्थिताम् ।।
यस्त्वां सञ्चिन्तयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते ।।८२।।

हे शीतले! तुम मनुष्यों के शरीर में उत्पन्न कठिन रोगों को दूर करने वाली हो और विस्फोटक रोग से ग्रसित रोगियों के तुम्ही एक अमृत वर्षाने वाली हो। हे शीतले! जो मनुष्यों के गलगण्ड ग्रहादिक रोग हैं उनको भी तुम्ही स्मरण मात्र से दूर कर देती हो। इस पापरोग को और न कोई मंत्र है और न औषध है हे शीतले! तू ही एक पालन और पोषण करने वाली हो और इनसे अधिक किसी देवता को नहीं देखता हूं जो इस रोग को दूर करे। कमलनाली के सदृश नाभि और हृदय के बीच में विराजमान ऐसे तुझको जो कोई मनुष्य चिंतवन करे हे देवि! उसकी

मृत्यु नहीं होती है॥७९-८२॥

एवं स्तुता तदा देवी शीतला प्रीतमानसा ॥
उवाच वाक्यं कालाय वरं वरय सत्वरम् ॥८३॥

जब इस प्रकार स्तुति की गई तो शीतलादेवी प्रसन्न होकर काल से बोली कि जो चाहे सो शीघ्र वर मांग॥८३॥

काल उवाच

अहो चाद्भुतमाहात्यं तव दृष्टं मयाऽधुना ॥
पीडामपनय क्षिप्रं प्रहर्षं कुरु मे सदा ॥८४॥

उपरान्त काल बोला कि हे माता! इस समय मैंने तुम्हारा अद्भुत माहात्म्य देखा। मेरी दुःखरूपी पीड़ा को दूर करके मुझको हर्ष आनन्द करो यही प्रार्थना है॥८४॥

भवितव्यता की बड़ाई वर्णन

शीतलोवाच

एषा तव जगत्कर्त्री भार्येयं भवितव्यता ॥
अस्याज्ञां संप्रवर्तन्ते ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥८५॥
अहं त्वं च महेशाद्यास्ततो धन्यास्तु ते मताः ॥
बुद्ध्या धीर्जायते सा या यादृशी भवितव्यता ॥
साहाय्यं ते करिष्यामि हरिष्यामि इमाः प्रजाः ॥८६॥

देवी शीतला बोली कि, यह जगत्कर्त्री तुम्हारी भार्या भवितव्यता है और इसी की आज्ञा में ब्रह्मा, विष्णु और श्रीमहादेवजी हैं। मैं व तुम और महेशादिक भी इसकी स्मरण में मन दिये हैं इसी से धन्य कहलाते हैं। बुद्धि से जैसी मति होती है सो यह सब प्रताप भवितव्यता का है। मैं भली भांति तुम्हारी सहायता करूंगी और सब प्रजा को हरूंगी॥८५-८६॥

गर्भनाशनकथन

उपोदकी तु या खादेदादावुष्णं ततः परम् ॥

तं गर्भं भक्षयिष्यामि सापि चेद्दुष्टभुग्भवेत् ।।८७।।

कोई रजस्वला स्त्री प्रथम गरम भोजन खावे और दुष्ट हो तो मैं उसके गर्भ को भक्षण कर जाऊंगी।।८७।।

गर्भरक्षाकथन

सन्तुष्टा शीतलेनाहं सदा तत्सेवकस्य च ।।
प्रत्यहं या समश्नाति मालत्यर्कसुपोदकी ।।
तस्या गर्भं न स्पृशामि यावज्जीवं न संशयः ।।८८।।

मैं शीतल से बहुत ही प्रसन्न रहती हूं और शीतल वस्तु के सेवन करने वाली स्त्री से सर्वदा प्रसन्न रहती हू। जो गर्भिणी स्त्री मालती का अर्क सेवन करे उसके गर्भ को मैं नहीं छूती हूं जब तक कि वह जीवे इसमें संशय नहीं।।८८।।

दाहशांतिकथन

मम कोपेन सञ्जातदाहो यस्तु नरोत्तमः ।।
दधिभक्तं ब्राह्मणेभ्यो जलसेभ्यः प्रदाय च ।।८९।।
स्वयमश्नाति सप्ताहं तस्य पीडां हरास्यहम् ।।९०।।

मेरे कोप से उठी दाहवाला मनुष्य दही और ठंडा भात ब्राह्मण को खिलाकर फिर आप खाता है उसकी सब पीड़ा सात ही दिन में मैं हरती हूं।।८९-९०।।

शीतलाष्टकमाहात्म्यकथन

अष्टकं च ममैतद्धि यः पठेन्मानवः सदा ।।
विस्फोटकभयं घोरं कुले तस्य न जायते ।।९१।।

जो कोई पुरुष यह मेरा अष्टक नित्यप्रति पढ़ता है उस मनुष्य के कुलभर में विस्फोटक का कोई डर नहीं होता है।।९१।।

श्रोतव्यं पठितव्यं च नरैर्भक्तिसमन्वितैः ।।
उपसर्गभयं तस्य कदापि नहि जायते ।।९२।।

मनुष्य को भक्तियुक्त होकर इसको सुनना और पढ़ना चाहिये इससे

उपसर्ग का भय उसको कभी नहीं होता है॥९२॥

अष्टकं च ममैतद्धि पठितं भक्तितः सदा ॥
सर्वरोगविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥९३॥
शीतलाष्टकमेतद्धि न देयं यस्य कस्यचित् ॥
दातव्यं सर्वदा तस्मै भक्तिश्रद्धान्वितो हि यः ॥९४॥

हमेशा भक्तिपूर्वक हमारे इस अष्टक को पढ़ना। सब रोगों को दूर करने के अर्थ यह अष्टक महाकल्याण का स्थान है। यह शीतलाष्टक जिसको तिसको नहीं देना चाहिये. यह अष्टक उसी को देना चाहिये जो भक्ति और श्रद्धा से युक्त होवे॥९३-९४॥

रावण उवाच

एवमुक्त्वा ययुः सर्वे तथैव भवितव्यता ॥
तथा लोकान् जिघांसंती कालस्य वशमागता ॥९५॥

रावण बोले हे प्रिये! इस प्रकार कहकर सब चले गये, तैसे ही भवितव्यता भी चली गयी, तैसे ही ये पूर्वोक्त सब रोग काल के वश में होकर लोगों के मारने की इच्छा करते हैं॥९५॥

शीतलारिष्टनिवारणार्थ अर्क

अथ वक्ष्ये शीतलादिचिकित्सार्कं प्रभावतः ॥
जात्यर्कं वा कदल्यर्कं शतपत्रार्कमेवच ॥
यो भुञ्ज्याद्दधिभक्ताभ्यां शीतला तं न मारयेत् ॥९६॥

अब मैं शीतला की चिकित्सा के हेतु अर्क कहता हूं। चमेलीके और केले का और कमल का अर्क जो दही और भात के साथ खावे तो उसको शीतला नहीं मारती है॥९६॥

शीतलाज्वरनाशक अर्क

चन्दनं वासको मुस्तं गुडूची द्राक्षया सह ॥
एषामर्कः शीतलस्तु शीतलाज्वरनाशनः ॥९७॥

श्वेत, चन्दन, वासा, मोथा, गिलोय इनका अर्थ दाख के साथ खींचा हुआ

शीतल पीवे तों यह शीतल के ज्वर का नाश करता है।।९७।।

शीतलाव्रणनाशार्थ मंत्र व अर्क

तारो मायाशीतलेति चतुर्थन्तं हृदन्तकम् ।।
मन्त्रमुच्चार्य यो दद्याद्दधीनि शतसंख्यया ।।९८।।
सचन्दनेन शीतेन शतपत्रार्ककेण च ।।
अवश्यमेव सप्ताहप्रयोगाद्व्रणनाशनः ।।९९।।

इति श्रीरावणकृतार्कप्रकाशे षष्ठ शतकं समाप्तम् ।।६।।

मंत्रोद्धार यह है कि तारो माया शीतला यह अंत में चतुर्थीविभक्तिवाला मंत्र तारोमायाशीतलायै नमः पढ़कर सौ बेर चन्दन और ठण्डे कमल के अर्क के साथ दही देना चाहिये तो अवश्य सात दिन के करने से भली भांति शीतला के दाग दूर होवेंगे। यह शीतलरोगनाशनोपाय वर्णन किया है।।९८।।९९।।

इति पण्डितमुकुन्दरामकृतार्कप्रकाशहिन्दीटीकायां षष्ठं-
शतकं समाप्तम् ।।६।।

******
****

सप्तमं शतकम्

बाल काले करनेवाला अर्क

त्रिफली नीलिकापत्रं भृङ्गराज अयोमलः ।।
अधिमूत्रार्कमंपिष्टं लेपात्कृष्णीकरं परम् ।।१।।

रावण बोला कि हे प्रिये! भेड़ के मूत्र से पीसा त्रिफला, कृष्णपुष्पी के पत्ते, भंगरा और लोहकिट्ट इनके अर्क का लेप करने से अवश्य करके बाल काले होते हैं।।१।।

इन्द्रलुप्त रोग को दूर करनेवाला अर्क

मसी तु गजदन्तं च छागीक्षीरं रसाञ्जनम् ।।
वटप्ररोहकं पिष्टमिन्द्रलुप्तघ्नमौषधम् ।।२।।

मसी, हाथीदांत, छागवकरी का दुग्ध, रसौत और बड़ की जटा इन सबको पीसकर अर्क खींचे तो यह अर्क इन्द्रलुप्त नाम वालों का गिरना आदि रोगों के दूर करने में सर्वोत्तम है।।२।।

दारुणरोगनाशक अर्क

आम्रबीजं पथ्या च दुग्धनिर्वापितं त्र्यहम् ।।
तदर्को हंति लेपेन त्र्यहाद्दारुणदारुणम् ।।३।।

आम की गुठली और हड इन दोनों को तीन दिवस दूध में भिगोय रखे। इनका जो अर्क है सो तीन दिन लेपन करने से दारुण (गंज) रोग को नाश करता है।।३।।

रूखापन दूर करनेवाला अर्क

नीलोत्पलस्य किञ्जल्कमामलं मधुयष्टिका ।।
क्लिन्नं गोमूत्रके चैव तदर्कोऽरूंषि नाशयेत् ।।४।।

काले कमल और केसर, आंवले व मुलहठी इन सबको गोमूत्र में भिगोय अर्क खींचे। यह अर्क रूखापन का नाश करता है।।४।।

मुँहासे को हरनेवाला अर्क

केवलं पयसा लिह्यात्तीक्ष्णाः शाल्मलिकंटकाः ।।
तदर्कस्ये त्र्यहं लेपान्मुखदूषीर्विनश्यति ।।५।।

अकेले जल के साथ कठोर शाल्मली वृक्ष के कांटों के लेपन से तीन दिन में मुख पर के फुंसीवाले मुँहासे दूर होंगे।।५।।

मुखव्यंगरोगनाशक अर्क

वटांकुरं मसूराश्च मञ्जिष्ठा क्षौद्रमेव च ।।
जलक्लिन्नं तदर्कस्तु मुखव्यंगविनाशनम् ।।६।।

बड़ की जटा, मसूर, मजीठ, शहत इन सबको जल में भिगोय फिर अर्क

निकाले। यह अर्क शहद के साथ लगाने से मुख के व्यंग का नाश करता है।।६।।

अंगुलाष्टकरोगनाशक अर्क

काश्मर्यर्केण कोष्णेन सिंचेदंगुलवेष्टकम् ।।
कोमलैः सप्तभिस्तस्य पत्रैर्बद्धं हरेद्गदम् ।।७।।

कुम्हेरण के कुछ गरम अर्क से सींचे और उसी के कोमल कोमल सात पत्तों से लपेट तीन अंगुल का बंध देवे तो बंधरोग का नाश करता है।।७।।

लिंगोत्थानाशक अर्क

सर्वसैन्धवसिद्धार्थसिताकुष्ठार्कधावनात् ।।
कपिकच्छूः शमं गच्छेल्लिङ्गोत्थो नात्र संशयः ।।८।।

राल, सेंधानोंन, सरसों मिश्री, कूठ इन सबके अर्क से धोने से लिंगोत्थ कपिकच्छू अर्थात् बालावस्थावालों का लिंग खड़ा हो तो अवश्य करके बैठ जावे।।८।।

गुदा की खाज के ऊपर अर्क

शंखसौवीरयष्ट्यर्के प्रत्यहं क्षालयेद्गुदम् ।।
गुदकण्डूर्बालकस्य योगो हन्ति न संशयः ।।९।।

शंख, कांजी और मुलहटी के अर्क से गुदा को नित्य धोवे तो यह प्रयोग बालक की गुदा की खुजली को अवश्य नाश करे।।९।।

गुदनिःसारण रोग के ऊपर अर्क

पद्मिनीमृदुपत्राणामर्कं यः सितया सह ।।
गुदनिःसारणं तस्य नश्येन्मासान्न संशयः ।।१०।।

पद्मिनी के कोमल पत्तों का अर्क मिश्री के साथ पीने से महीने में अवश्य करके कांच निकालना बंद हो जावेगा।।१०।।

आधाशीशी को दूर करनेवाला अर्क

भृंगराजरसार्को यः क्षीरतुल्योऽर्कतापितः ।।

सूर्यावर्तं निहन्त्याशु नस्येनैव प्रयोगराट् ॥११॥

भांगरे का अर्क दुग्ध के साथ तपाय के सूंघे (नाक से पीवे) तो सूर्यावर्त (आधाशीशी) के दर्द को दूर करता है, यह प्रयोग सर्वोत्तम है॥११॥

अन्य आधाशीशी पर अर्क

विडङ्गतिलकृष्णानि समं पिष्ट्वा प्रलेपयेत् ॥
एतदर्कस्य नस्येन चार्द्धभेदं व्यपोहति ॥१२॥

वायविडंग, तिल अलसी इन सबको बराबर लेवे उपरांत पीसकर पीठी बनावे, इसके अर्क के सूंघने से आधाशीशी दूर होती है॥१२॥

शिर में दर्द होता है उसके ऊपर अर्क

पथ्याक्षधात्रीरजनीगुडभूनिम्बनिम्बकैः ॥
गुडूच्यर्को हरेत्पीडां सर्वामपि शिरोद्भवाम् ॥१३॥

हड, भिलावा, आमला, हल्दी, गुड़, चिरायता, नींब व गिलोय इनका अर्क सम्पूर्ण शिररोग की पीड़ा को नाश करता है॥१३॥

कनपटी के दर्द पर अर्क

दार्वी हरिद्रा मञ्जिष्ठा सनिम्बोशीरपद्मकम् ॥
मर्दनं चैतदर्कस्य शंखपीडाप्रशान्तिकृत् ॥१४॥

दारुहलदी, मंजीठ, नींब, खस और पद्माख इन सबके अर्क की मालिश शख पीडा (कनपटी का दर्द) को दूर करती है॥१४॥

पावों के खारुवे दूर करने वाला अर्क

आरनालार्केण पादौ लिप्त्वा लेपोऽलसे हितः ॥
पटोलकुनरीनिम्बरोचनामलकैस्तिलैः ॥१५॥
केवलं भृङ्गराजार्क उष्णो दार्वी सुपेषिता ॥
पादे बद्ध्वानयोः कल्कं दिनैकेन क्षयो भवेत् ॥१६॥

कांजी के अर्क से खूब पैरों को धोवे उपरांत परवल, मैनशिल, नींब, गोरोचन,आंवला और तिल इन सबका लेप करे, जिसके चरणों

में खारुवे हो जावें उसको यह बहुत हितकारक है। केवल भांगरे का अर्क गर्म पिसी हुई दारुहलदी के साथ चरण में बांधने से एक ही दिन में खारुवा रोग को दूर करता है।।१५-१६।।

चर्मकील आदि पर अर्क

चर्मकीलं जन्तुमणिर्मशकस्तिकालकः ।।
उत्कृत्य शंखद्रावेण दग्धो नोत्पद्यते पुनः ।।१७।।

चर्मकील, लहसन, मस्सा और तिल इनमें से जिसको नष्ट करना होय उसको उखाड़कर शंखद्राव से जला दिया जाय तो फिर वह नहीं उठे।।१७।।

नेत्रस्राव पर अर्क

अहिफेनार्कमध्ये हि त्रिफलाचूर्णपोटली ।।
प्रतिसायं हिता नेत्रे सर्वाभिष्यन्दशान्तये ।।१८।।

अफीम के अर्क में पीस त्रिफला की पोटली सायंकाल आंखों पर रखनी चाहिये। यह ओषध नेत्र से जल बहने मात्र रोग की शांति के अर्थ हित कारक है।।१८।।

नेत्ररोग नाशक अर्क

वातातपरजोहीनवेश्मन्युत्तानशायिनः ।।
आधारौ माषचूर्णेन क्लिन्नेन परिमण्डलौ ।।१९।।
समं दृढौ समं बद्धौ कर्तव्यौ नेत्रकोशयोः ।।
पूरयेन्नयने तेन तत उन्मीलयेच्छनैः ।।२०।।

अब नेत्ररोग नाशक प्रकार कहते हैं। पवन, धूप, गर्दरहित स्थान में चित्त लेटे और गीले उड़दों की दो टिकियां आंक के बराबर पुष्टता से रखकर बराबर बांध देवे, फिर नेत्र के पलकों पर लगाय धीरे आंखें खोल देवे।।१९-२०।।

नेत्रों की तर्पण विधि

भिषग्वरैः सुकथितः पुराणैस्तर्पणो विधिः ।।

यद्रूक्षं परिशुष्कं च नेत्रं कुटिलमाविलम् ।।२१।।
शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम् ।।
तिमिरार्जनशुक्लाद्यैरभिस्पन्दाधिमन्थकैः ।।२२।।
शुष्काक्षिपाकशोथाभ्यां युक्तं वातविपर्ययैः ।।
तन्नेत्रं तर्पणे योज्यं नेत्रकर्मविशारदैः ।।२३।।

अब प्राचीन उत्तम वैद्यों करके कही हुई तर्पण विधि (नेत्रों को आनन्द देनेवाली दवा) कहते हैं, कि जो नेत्र रूखे, चारों ओर से रूखे और मैले होवें और टूटी भौंहें, ऊपर को पलक रोगसंयुक्त होवें तकलीफ से खुलने वाले होंय, तिमिर, फुल्ली, माड़ा हो, फूटने तुल्य हों और वात सम्बंधी नेत्ररोग होय तो नेत्रतर्पण चिकित्सा करे ऐसा नेत्रक्रिया में चतुर वैद्यों ने कहा है।।२१-२३।।

नेत्र और पलकरोग में औषधधारण काल

धारयेद्वर्त्मरोगेषु वाङ्मात्राणां शतं बुधः ।।
स्वस्थे कफे संधिरोगे वाचां पञ्चशतानि च ।।२४।।
कफे षट्कशतं कृष्णरोगे सप्तशतं मतम् ।।
दृष्टिरोगे शतान्यष्टावधिमंथे सहस्रकम् ।।
सहस्रे वातरोगेषु धार्यमेवं हि तर्पणम् ।।२५।।

वर्त्मपलक रोग में सौ मात्रा बोली जावे तब तक नेत्रों में औषध भरी रखे, कफकृत नेत्ररोग में पांच सौ मात्रा तक धरी रखे, सेते के रोग में छः सौ मात्रा तक और काले डैये के रोग में सात सौ मात्रा तक धरी रखे और पुतली के रोग में आठ सौ मात्रा तक और वातरोग नामक नेत्ररोग में हजार मात्रा तक औषध धारण करनी चाहिये।।२४-२५।।

नेत्र और पलकरोग नष्ट करनेवाला अर्क

पुनर्नवा च तुवरी कुमारी त्रिफला निशा ।।२६।।
यष्टिगैरिकसिंधूत्थदार्व्यञ्जनयुगैः कृतः ।।
अर्कस्तत्पूरणेनाशु नेत्ररोगाः शमं ययुः ।।२७।।

सांठी, अरहर, ग्वार का पट्ठा, त्रिफला, हलदी, मुलहठी, गेरू, सेंधानोन, दारुहलदी, रसोंत दोनों इन सबका निकाला हुआ अर्क नेत्रों में पूर देने से बहुत ही जल्दी नेत्ररोग जाता रहेगा।।२६-२७।।

रतौंधे को दूर करनेवाला अर्क

रसाञ्जनं हरिद्रे द्वे मालतीनवपल्लवाः ।।
गोमलार्कस्तु रात्र्यन्धं पूरितो हन्त्यसंशयम् ।।२८।।

रसांजन, दोनों हलदी, चमेली के पत्ते कोमल २ लेवे और गोबर इन सबका अर्क नेत्रों में पूरित करने से अवश्य करके रतौंधी रोग दूर होगा।।२८।।

चोभ, फूली, अर्बुद, माड़ा, तिमिर, मांसवृद्धि और
वार्षिक पुष्प इनके ऊपर अर्क

शंखानाभिर्बिभीतस्य मज्जा पथ्या मनःशिला ।।
पिप्पली मरिचं कुष्ठमजादुग्धेन पेषितम् ।।२९।।
तदर्कः पूरणाद्धन्यात्काचं पटलमर्बुदम् ।।
तिमिरं मांसवृद्धिं च वार्षिकं पुष्पमेव च ।।३०।।

शंखाहुली, बहेड़े की छाल, हड़, मैनशिल, पीपरि, स्याह मिर्च और कूट इन सबको बकरी के दूध में भिगोय पीस इन सबका अर्क आंखों में भरने से कोई चोभ, फुल्ली, माड़ा, तिमिर, मांसवृद्धि और वर्षदिवस की फुल्ली ये सब नेत्ररोग दूर हो जाते हैं।।२९-३०।।

कर्णरोग नाशक अर्क

शृङ्गवेरं क्षौद्रसिन्धुस्तैलार्केण च पूरणम् ।।
कर्णशूले कर्णनादे बाधिर्ये क्ष्वेड एव च ।।३१।।

अदरख, शहद, सेंधानोन इनके तेल का अर्क कान में पूरने से कान के सर्व रोग दर्द और शब्द (भांय भांय) होना, बहिरापन और कान में फोडे निकल आते हैं ये सब आराम होते हैं।।३१।।

तीव्रशूलतुदे कर्णे सशब्दे क्लेदवाहिनि ।।

देयश्छागलमूत्रार्कः कोष्णसैंधवसंयुतः ।।३२।।
आम्रजम्बूप्रवालानि मधुकस्य वटस्य च ।।
एतदर्कपूरणेन पूतिकर्णे मदं हरेत् ।।३३।।

कान में कठिन शूल हो, शब्द अधिक होता होय, राध बहती होय तो उसमें बकरी के मूत्र का अर्क गरम २ सेंधानोन मिलाकर कान में चुवाय देवे अथवा आम, जामुन, महुआ और वड़ इन सबके पत्तों का अर्क कान में डाले तो कान का बहना जाता रहेगा।।३२-३३।।

गोमूत्रं हरितालं च तथा माहिषगुग्गुलम् ।।
सप्ताहं वा दशाहं वा शतशः परिभावितम् ।।
करंजबीजं तद्वर्तिर्दृष्टे पुष्पं विनाशयेत् ।।३४।।

गोमूत्र, हरताल, भैंसहिया गूगल सात दिन या दश दिन बराबर भिगोय २ कर सौ वार भावना देवे और उनके साथ फिर करंजा के बीज की बत्ती करे तो वह बत्ती पुतली की फुल्ली को दूर कर देती है।।३४।।

पलकों के वाल जमानेवाला और खुजली दूर करनेवाला अर्क

रसाञ्जनं सर्जरसो जातीपुष्पं मनःशिला ।।
समुद्रफेनलवणं गैरिकं मरिचं तथा ।।३५।।
मधुक्लिन्नैस्तदर्कस्तु पूरणात्क्लिन्नवर्त्मनि ।।
पक्ष्माणि रोहयेत्कण्डूं हन्यादर्कस्य पूरणात् ।।३६।।

रसांजन, रसौत, चमेली के फूल, मैनसिल, समुद्रफेन नोन, गेरू, स्याह मिर्च इन सबको शहद में भिगोय अर्क निकाल पलकों में पूरन से पलकों के बाल जमा देता है और नेत्रों की खुजली को दूर करता है।।३५-३६।।

नेत्रस्राव के ऊपर अर्क

बब्बूलार्कः क्षौद्रयुक्तो नेत्रस्रावं हरेत्क्षणात् ।।३७।।

बबूल का अर्क शहद के संग लगावे तो उसी समय नेत्रों से पानी गिरना बंद हो जाता है।।३७।।

नेत्रस्राव और नेत्रों के अन्य रोगों पर अर्क

पुनर्नवायाः श्वेताया अर्को हन्यादृगामयान् ॥
दुग्धेन कण्डूं क्षौद्रेण नेत्रस्रावं च सर्पिषा ॥
पुष्पं तैलेन तिमिरं काञ्जिकेन निशान्धताम् ॥३८॥

श्वेत साठी को दूध के साथ निकाला हुआ अर्क सम्पूर्ण दृष्टिरोगों को दूर करता है और शहद से निकाला हुआ अर्क नेत्रों की खुजली और घी से खींचा अर्क नेत्र बहने को बंद करता है। यही अर्क तेल से निकाला हुआ फुल्ली को दूर करता है और कांजी से तिमिर को दूर करता है॥३८॥

पीनसादि रोगों का अर्क

कट्फलं पौष्करं भृङ्गैर्व्योषं यासश्च कारवी ॥
एतदर्कः भृङ्गवेररसयुक्तो गदान् हरेत् ॥३९॥
पीनसं स्वरभेदं च तमकं सहलीमकम् ॥
सन्निपातं कफं वातं श्वासं कासं विनाशयेत् ॥४०॥

कायफल, पुष्करमूल, काकरासींगी, त्रिकुटा, जवासा, करेला और सोंफ इन सबका अर्क अदरख के रस के साथ पीने से पीनसरोग, स्वरभेद, तमक श्वासभेद और सन्निपात, कफ, वादी, श्वास, खांसी इन सर्व रोगों को दूर करता है॥३९-४०॥

पूतिनासारोग पर अर्क

व्याघ्री दंती वचा सिन्धुः सुरसा व्योषसैन्धवैः ॥
सिद्धोऽर्कस्तु नसि क्षिप्तःपूतिनासागदापहः ॥४१॥

भटकटैया, वज्रदंती, वच, सैंधव रास्ना, त्रिकुट, सेंधानोन इन सबसे सिद्ध हुआ अर्क नासिका में लगाने से नासिका की दुर्गन्धि दूर होती है॥४१॥

क्षवथु (छींक) का हटानेवाला तथा कफनाशक अर्क

शुण्ठीकुष्ठकणाबिल्वद्राक्षार्कः क्षवथुं हरेत् ॥

मर्दयेत् कट्फलार्कस्तु श्लेष्मनाशाय मस्तके ।।४२।।

सोंठ, कूठ, पीपरि, बेलगिरी, दाख इन सबका अर्क छींकरोग को आराम करता है। कफ दूर होने के वास्ते कायफल का अर्क मस्तक पर लगावे तो कफ विकार दूर होवे।।४२।।

नासारोग व मस्सा को दूर करनेवाला अर्क

गृहधूमकणादारुनक्ताह्वासैंधवैः समैः ।।
अपामार्गेण जातोऽर्को नासार्शोघ्नो दिनत्रयात् ।।४३।।

गृहधूम, धमासा, पीपरि, देवदारु, हलदी और सेंधानोन ये सब बराबर २ लेके ओंगा के साथ खींचा हुआ अर्क नासारोग को और मस्सा को तीन दिन में दूर करता है।।४३।।

अति निद्रा को मिटानेवाला अर्क

क्षौद्राश्वलालसंयुक्तमरिचार्कस्य चाञ्जनात् ।।
अतिनिद्रा शमं याति तमः सूर्योदये यथा ।।४४।।

शहद और असगंध के सहित स्याह मिर्च का अर्क खींच के नेत्रों में लगाने से अधिक निद्रा आने का रोग सूर्योदय में अन्धकार के समान दूर हो जाता है।।४४।।

अनेक नेत्ररोगों पर अर्क

शिलायां रसकं पिष्ट्वा सम्यगाप्लाव्य वारिणा ।।
गृह्णीयात्तज्जलं सर्वं त्यजेच्चूर्णमधोगतम् ।।४५।।
शुष्कं च तज्जलं सर्वं पर्पटीसन्निभं भवेत् ।।
विचूर्णं भावयेत्सम्यक् त्रिफलार्कैः पुनः पुनः ।।४६।।
कर्पूरस्य रजस्तत्र दशमांशेन निक्षिपेत् ।।
अञ्जयेन्नयने तेन नेत्राखिलगदच्छिदा ।।४७।।

मैनशिल को पारे के साथ पीसकर खूब पानी से रगड़कर पतला कर लेवे और यह पानी सब दो सेर लेवे और नीचे के चूरे को छोड़ देना चाहिये। जब वह सूखकर पापर के समान हो जावे तो फिर पीसकर त्रिफला के अर्क

से बारम्बार धोवे और कपूर का चूर्ण उसमें दशमांश छोड़े फिर उस अंजन से आंखों को आंजे तो अवश्यकर संपूर्ण नेत्ररोग दूर हो जावेंगे।।४५-४७।।

दंतकृमि नष्ट होने के लिये अर्क

नील्यर्को वाततुंब्यर्कः काकजङ्घाभवोऽथवा ।।
गण्डूषकरणैर्हन्याद्दन्तानां कृमिजालकम् ।।४८।।
त्रिफला स्वर्णमाक्षीकं तारामाक्षिकसैन्धवम् ।।
खदिरो दग्धपूगं च लोहचूर्णं समांशकम् ।।४९।।
वज्रदन्तीभवे चार्के भावयेद्दिवसत्रयम् ।।
लेप्याः सायं तेन दन्ताः सप्ताहाद्दृढवत्तराः ।।५०।।

नील के अर्क के वा तोंबी के अर्क के वा काकजंघा के अर्क से कुल्ले करने से दांत के सम्पूर्ण कीटजालों का नाश होता है। त्रिफला, सोनामाखी रूपामाखी, सेंधानोन, खैर, जली हुई सुपारी व लोहचूर्ण ये सब बराबर २ भाग लेकर वज्रदन्ती के अर्क में तीन दिन भिगोय भावना देवे फिर उससे दातों को सात दिन रगड़े तो दांत बहुत ही पुष्ट होवेंगे।।४८-५०।।

जिह्वारोगनाशक अर्क

व्योषक्षाराभयावह्निचूर्णमुर्वार्कभावितम् ।।
उपजिह्वाप्रशान्त्यर्थं पीडयेदुपजिह्वकाम् ।।५१।।

त्रिकुटा, खार, हर्र, और चित्रक ये सब मूर्वा के अर्क में भिगोय सो अर्क उपजिह्वा (जिभाली) रोग की शांति के लिये जीभ पर रगड़े तो अवश्य करके रोग शांति ही जायगी।।५१।।

जीभ और दांत के रोगों पर अर्क

कटुत्रयं शिवा धात्री यवानी जीरकद्वयम् ।।
चव्यमौषधवत्तुल्या भागयुग्मं च सैन्धवम् ।।५२।।
सप्तवारानम्लवर्गे द्विगुणैश्चित्रकार्ककैः ।।

भावयित्वा वटी कार्या जिह्वादन्तरुजापहम् ॥५३॥

त्रिकुटा, हर्र, आंवला, अजवायन, दोनों जीरे और चव्य ये औषध बराबर भाग ले दो भाग सेंधानोन इन सबको सात वार खटाई में भिगोकर दूने चित्रक के अर्क में मिलाय फिर गोली बांधे यह गोली जिह्वा और दंत के रोग को दूर करती है॥५२-५३॥

तालुरोगहर अर्क

वचा चातिविषा पाठा रास्ना कटुकरोहिणी ॥
पिचुमन्दार्ककवला तालुरोगविनाशनम् ॥५४॥

वच, अतीस, पाठ, राई और कड़वी रोहिणी ये सब औषध पिचुमंद (नींब विशेष) के अर्क में संयुक्त करके गोली बनावे या चूर्णसा रखे फिर उसका नास लेने से तालुरोग दूर होगा॥५४॥

कण्ठरोग नष्ट करनेवाला अर्क

गोमूत्राऽतिविषादारुपाठाविषकलिङ्गका ॥
कटुकार्कस्य पानेन कण्ठरोगविनाशनम् ॥५५॥

गोमूत्र, अतीस, देवदारु, पाठ, विष (तेलियामीठा) इन्द्रजौ और कुटकी इन सबका अर्क पीने से कंठरोग नष्ट हो जाता है॥५५॥

मुखपाकरोग पर अर्क

जातीपत्रामृताद्राक्षावासदार्वीफलत्रिकम् ॥
अर्कः शीतः क्षौद्रयुक्तो गण्डूषान्मुखपाकनुत् ॥५६॥

जावित्री, गिलोय, दाख, जवासा, दारुहलदी, त्रिफला इन सबको शीतल अर्क में शहद मिलाय कुल्ले करे तो मुख पके को उत्तम करता है॥५६॥

मुख के व्रण क्लेद और दुर्गंधि को दूर करनेवाला अर्क

कृष्णजीरककुष्ठेन्द्रजवजार्कस्य सेवनात् ॥
त्रिदिनेन व्रणक्लेददौर्गन्ध्यमुपशाम्यति ॥५७॥

स्याह जीरा, कूट और इन्द्रजौ इनका अर्क सेवन करने से तीन दिन में

व्रण, मुख के छाले और मुखदुर्गंध दूर होता है।।५७।।

लाला (लार) स्रावपर अर्क

नीलोत्पलदले क्लिन्नं त्रिदिनं मधुकं ततः ।।
अर्को गण्डूषतो हन्ति लालास्रावं न संशयः ।।५८।।

नीले कमल के पत्ते तीन दिन शहद के साथ मसले फिर उसके अर्क के कुल्ले करे तो लार बहना अवश्य बन्द होवे।।५८।।

स्थावर विषशांति के लिये अर्क

स्थावरेण विषेणार्तं मदनार्केण वा जयेत् ।।
शतपत्र्यादिकार्कैस्तु रेचकं तु समाचरेत् ।।५९।।
दद्याच्च मधुसर्पिर्भ्यां मरिचार्कं तु साम्लकम् ।।
हेमार्कसाधितैरर्कैर्मर्दयेच्च विरेचयेत् ।।६०।।
आदौ संस्नेहनं कृत्वा ततो लेपं समाचरेत् ।।
गोमूत्रपिष्टैः पञ्चागैः शिरीषस्य पुनः पुनः ।।६१।।
सूचीविषवमेश्चार्थमर्कं दद्याद्द्वयोरपि ।।६२।।

अब आगे विषों की शांति के अर्थ अर्क चिकित्सा कहते हैं कि, स्थावर विष से पीड़ित मनुष्य को मैनफल के अर्क से छिदावे और कमलिनी आदि के अर्क से रेचक करावे फिर शहद, घृत, खटाई के साथ में मिर्चों का अर्क देवे और पीली दुग्ध के अर्क से मालिश व दस्त करावे और प्रथम चिकनाई लगावे फिर लेप करे। गोमूत्र में खूब पीसे हुए सिरस के बीज के पंचांग का लेप सूचीविष को कराने के अर्थ दोनों पीपलियों के अर्क के साथ देवे।।५९-६२।।

सर्पविष नाशक अर्क

पिप्पल्यो धान्यकं मांसी लोध्रमेला सुवर्चिला ।।
स्थूलैला मरिचं बालं निर्विषी स्वर्णगैरिकम् ।।६३।।
मालत्यर्केण गुटिकां कर्षमात्रं तु भक्षयेत् ।।
गरुडच्यर्कस्य पानं तु सर्पाणां विषनाषनम् ।।६४।।

पीपल, धनियां, जटामासी, लोध, इलायची, हुरहुर, बड़ी इलायची, स्याह मिर्च, नेत्रवाला, निर्विषी, पीलागेरू इन सबकी चमेली के अर्क से गुटिका बनाकर चार मासे भर सेवन करने से अवश्य सांप का विष शांत होता है। पाताल गरुड़ी के अर्क को पीवे तो भी सर्पों का विष शांत होवे।।६३-६४।।

बिच्छुओं के विषपर अर्क

सूर्यावर्तार्कगन्धस्तु वृश्चिकस्य विषं हरेत् ।।
अपामार्गजटार्को वा धत्तूरार्कः सदुग्धकः ।।६५।।

हुरहुर का अर्क और गन्धक बिच्छू के विष को दूर करता है। ओंगा की जड़समेत धतूरे के अर्क बिच्छू के विष को दूर करता है।।६५।।

कुत्ते के विषपर तथा लूताविनाशक अर्क

अङ्कोलार्कोऽथ वंशार्कः श्वविषघ्नः पृथक् पृथक् ।।
रजनीयुग्मपातङ्गं मञ्जिष्ठानागकेशरम् ।।६६।।
गैरिकार्केण शीतेन लेपो लूताविनाशनः ।।
बिडालमांस्यर्कलेपो मूषकानां विषापहः ।।६७।।

अंकोल फल का अर्क वा बांस का अर्क यह पृथक् २ कुत्ते के विष को दूर करता है। दोनों हलदी, पतंग, मँजीठ, नागकेशर और गेरू इनके शीतल अर्क से लेप करे तो मकरी का विष शांत होता है और बिलाव-मांसी के अर्क का लेप चूहों के विष को दूर करता है।।६६-६७।।

कनखजूरे के तथा चीटी आदि के विषपर अर्क

तिक्ताजाजीनागरयोरर्केण सहपेषितम् ।।
शतपद्या हरेत्सद्यो द्विषमुष्टिभवं विषम् ।।
पिप्पल्यादिविषं हन्याच्छुण्ठयर्कस्तत्रमर्दितः ।।६८।।

कुटकी, स्याह जीरा और सोंठ के अर्क से पीसा हुआ शतावरी और कुचले का लेप कनखजूरे के विष को निःसन्देह नाश करता है। सोंठ का अर्क मर्दन किया हुआ चींटी आदि के विष को दूर करता है।।६८।।

प्रदर रोग को दूर करनेवाला अर्क

सितादुग्धेन संयुक्तं माषार्कस्य पलद्वयम् ।।
घृतदुग्धाशिनी नारी प्रदरात्परिमुच्यते ।।६९।।
अशोकवल्कलार्कश्च घृतं दुग्ध च शीतलम् ।।
यथावत्प्रपिबेत्प्राता रक्तप्रदरनाशनम् ।।७०।।
दार्वी रसाञ्जनं वासा किरातश्चार्कपुष्पकम् ।।
रक्तचन्दनबिल्वार्कः सक्षौद्रोऽसृग्दरं हरेत् ।।७१।।

दूध मिश्री के साथ दो पल उड़दों के अर्क को घृत दूध के साथ खाने वाली स्त्री प्रदर रोग से छूट जाती है। अशोक की छाल का अर्क घी दूध शीतल जो स्त्री विधिपूर्वक प्रातःकाल पिया करे तो रक्तप्रदर व योनिरोग दूर होता है। दारुहलदी, रसौत, वांसा, चिरायता, आक के फूल, लाल चन्दन, बेल इनका अर्क शहद के साथ खाने से रक्तप्रदर (योनिरोग) मिट जाता है।।६९-७१।।

सोमरोग नाशक अर्क

कदलीनां फलं पक्वं धात्रीफलरसं मधु ।।
शर्कराभिः कृतं मद्यं सोमरोगविनाशनम् ।।७२।।

पक्के केला के फल को लेकर आंवलों का अर्क, शहद और शक्कर इनसे बनाया हुआ मद्य सोमरोग का नाश करता है।।७२।।

बहुत मूत्रस्राव रोगपर अर्क

चक्रमर्दकमूलं तु सम्पिष्टं तण्डुलाम्बुना ।।
प्रभातसमये पीतस्तदर्को बहुमूत्रजित् ।।७३।।

पंवार की जड़ चांवलों के जल से खूब पीसकर प्रातःकाल समय उसका अर्क पीने से बहुमूत्र रोग को दूर करता है।।७३।।

स्त्रियों के ऋतु प्राप्तिपर अर्क

ज्योतिष्मतीघनाराजीवचाशनभवोऽर्ककः ।।
शीतलः पयसा पीतो नारीणां पुष्पकारकः ।।७४।।

मालकांगनी, नागरमोथा, राई, वच और नींब इन सबका बना अर्क शीतल पानी के साथ पिया जावे तो स्त्रियों के पुष्प (रज) उत्पन्न होता है।।७४।।

गर्भधारण करनेवाला अर्क

अश्वगन्धार्भवार्केण सिद्धं दुग्धं घृतान्वितम् ।।
ऋतुस्नातांगना प्रातः पीत्वा गर्भं दधाति हि ।।७५।।

असगंध के अर्क से सिद्ध हुआ दुग्ध घृत मिलाय के ऋतुस्नान किये स्त्री प्रातःसमय पीने से गर्भ को अवश्य धारण करती है।।७५।।

गर्भधारण न करानेवाला अर्क

आरनालपरिपेषिता त्र्यहं माजया कुसुमती च
पुष्पिणी ।। या पुराणगुडमिष्टसेविनी सा दधादि ।।
नहि गर्भमङ्गना ।।७६।।

कांजी में भिगोय अगेथू के फूलों का अर्क स्त्री तीन दिन सेवन करे तो पुष्पिणी होवेगी अर्थात् फूल को धारण करेगी और जो पुराना गुड़ मीठी वस्तुओं के साथ लोभ से खावे तो गर्भिणी नहीं हो सकती है।।७६।।

योनि संकोच पर अर्क

नववार्ताकिनीकुष्ठसैन्धवामरदारुभिः ।।
साधितोऽर्कः पिचुं योनौ विप्लुतायां तु धारयेत् ।।७७।।
वातलां कर्कशां तप्तां मत्तस्पर्शां तथैव च ।।
कुम्भैरुष्णैरुपचरेदन्तर्वेश्मनि संवृते ।।७८।।

नवीन कटेली, कूट, सेंधानोन, देवदारु इन सबके अर्क से सिद्ध किये हुये वकायन के फल को स्त्री योनि में रखे और वादी वाली, दुबली, दुखारी और मतवाली इन चारों का कुम्भों के सेक से भीतर के घर में होके इलाज करे।।७७-७८।।

स्कंदापस्मार रोगनाशक अर्क

बिल्वं शिरीषस्तुलसीयुग्मपाठा च राजिका ।।७९।।
श्वेतदूर्वा मरुबको भार्ङ्गी कह्लारभूस्तृणम् ।।
श्वेतवर्वरिकाकृष्णवर्वरीकासमर्दकः ।।८०।।
महानिम्बः कट्फलं च निर्गुण्डयश्वारिकशल्लकी ।।
उदुम्बरीभारवाहो विडङ्गं काकमाचिका ।।८१।।
बला एलासमांसास्तु दद्यान्मूत्राष्टकं त्र्यहम् ।।
गोजाविमहिषोष्ट्राणां खराश्वकरिणां तथा ।।८२।।
निष्कासयेत्ततश्चार्कं शाम्भवं कवचं जपन् ।।
परिवेषप्रयोक्तव्यं स्कन्दापस्मारशान्तये ।।८३।।

बेल, सिरस, तुलसी दोनों, पाठ, राई, सफेद, दूर्वा, मूर्वा, भारंगी, कमल, भूतृण, श्वेत, बबूल, स्याह, बबूल, कसोंदी, बकायन, कायफल, संभालू, सलाईभेद, गूलर, मोथा, बायविडंग, काकमाची खरैटी, इलायची जटामांसी इनको तीन दिन मूत्राष्टक में भिगोवे। गाय, बकरी, भेड़, भैंस, ऊंटिनी, गदही, कुत्ती, हथिनी इन आठों का मूत्र लेले। उपरान्त फिर शिवजी का कवच खूब चित्त से पढ़ता हुआ इनका अर्क निकाले, इसको स्कन्दापस्मार नाम बच्चों के सर्वरोग शान्त करने के लिये देवे।।७९-८३।।

उक्त अर्क के लेने का प्रमाण

जातमात्रस्य बालस्य वल्लमर्कं प्रदापयेत् ।।
तज्जनन्याः पलं देयमजादेर्द्विगुणादिकम् ।।८४।।

यह अर्क जन्मते ही वालक को तीन रत्तीभर देवे और उसकी माता को पलभर देवे और बकरी आदि पशुओं को दूनी मात्रा देना चाहिये।।८४।।

वालकों के अतीसार आदि रोगों पर अर्क

घनकृष्णारुणाभृंगीजातोऽर्कः क्षौद्रसंयुतः ।।

शिशोर्वरातिसारघ्नः कासश्वासवमीन् हरेत् ।।८५।।
विडंगान्यजमोदा च पिप्पली तंडुलानि च ।।
एषामर्कः सुखोष्णस्तु बालस्यामातिसारजित् ।।८६।।

नागरमोथा, पीपरि, मंजीठ, काकरासिंगी, इन सबका अर्क शहद से देवे तो बालक के अतीसार रोग को बंद करे और खांसी श्वास व बमन को दूर करता है। वायविडंग, अजमोद, पीपरि और चावल इन सबका अर्क कुछ २ गरम बालक के अतीसार (दस्तों) को आराम करता है।।८५-८६।।

बालकों के सब रोगोंपर अर्क

रजनी सरलो दारु बृहती गजपिप्पली ।।
पृष्ठपर्णी शताह्वा च जातोऽर्को मधुसर्पिषा ।।८७।।
दीपनी ग्राहिणी हन्ति महार्तिं च सकामलान् ।।
ज्वरातीसारपाण्डुघ्नी बालानां सर्वरोगनुत् ।।८८।।

हलदी, सरल, देवदारु, भटकटैया, गजपीपरि, पृष्ठपर्णी और शतावरी इन सबके अर्क को शहद और घृत के साथ खाने से अग्नि दीपन करे, मल को बांधे और सब प्रकार की पीड़ा कामला, ज्वर, अतीसार और पांडु वगैरह सब बालकों के रोग दूर करता है।।८७-८८।।

बालकों का मूत्र रुक जाने पर अर्क

कणोषणसिताक्षौ द्रसूक्ष्मैलासैन्धवैः कृतः ।।
मूत्रग्रहे प्रयोक्तव्यः शिशूनामर्कमुत्तमम् ।।८९।।

पीपरि, स्याह, मिर्च, मिश्री, शहत, छोटी इलायची और सेंधानोन इन सबका अर्क बच्चों के मूत्र रुक जाने में बहुत ही फायदेमंद है इस वास्ते अवश्य देना चाहिये।।८९।।

वाजीकरणप्रयोग

स्वर्णमाक्षिकलोहे च पारदश्च शिलाजतु ।।
पथ्या विडङ्गधत्तूरैर्विजया जातिपत्रिका ।।९०।।

अश्वगन्धा गोक्षुराणामर्कैर्भाव्यं पृथक् पृथक् ।।
सप्तवल्लं तु वल्लैकं मध्वाज्याभ्यां लिहेत्ततः ।।९१।।

सोनामाखी, लोह, पारा, न्यारे २ शिलाजीत, हर्र, वायविडंग, धतूरा, भांग और जावित्री इन सबको न्यारे २ असगंध, गोखरू के अर्क से सात दिन बराबर भिगोवे और घृत के साथ चटावे यह वाजीकरण विधि है।।९०-९१।।

वाजीकरण पर अन्य उपाय

गवां विरूढवत्सानां सिद्धं पयसि पायसम् ।।
गोधूमचूर्णं च सिता शीतं मधुघृतान्वितम् ।।९२।।
भुक्त्वा हृष्यति जीर्णोऽपि दशदारान् व्रजत्यपि ।।
ब्रह्मचर्यं प्रकर्तव्यमेकविंशदिनावधि ।।९३।।

अधिक दिन की ब्याई हुई और जिसका बछड़ा हो इस प्रकार की गाय के दूध में सिद्ध की हुई गेहू की खीर मिश्री से युक्त और शीतल करके शहद और घी के साथ भक्षण करे, इससे वृद्ध होने पर भी आनन्दपूर्वक दश स्त्रियों के साथ भोग कर सकता है परन्तु २१ दिन तक ब्रह्मचर्य (जितेंद्रिय) रहे।।९२-९३।।

वीर्यस्तम्भन

अपर्णाबीजसंयुक्तमुग्रबीजं प्रकल्पयेत् ।।
तुल्यमुन्मत्तबीजं च तदर्केणैव भावितम् ।।९४।।
सतैलं भावितं पश्चादस्य वल्लयुगं नरः ।।
संमितं भक्षयन् कामाद्रमणीं रमयते ध्रुवम् ।।९५।।

अपर्णा वृक्ष के बीज सहित वचा के बीज लेवे और उसी के बराबर धतूरे के बीज लेवे और इन्ही वृक्षों के रस से उन बीजों को भिगोय के अर्क निकाले, फिर वह अर्क इन्हो के तेल सहित चार रत्ती भर मिश्री के साथ नित्य सेवन करे तो सर्व आलस्य और मन्दताको त्यागकर वह मनुष्य कामवश होकर निश्चयकर रोज रमणी से रमण

करे।।९४-९५।।

वीर्यस्तंभ और लिंग व योनि का दृढ़ीकरण अर्क

स्वच्छवल्लं बबूलस्य शिम्बीरसविभावितम् ।।
सायं वेदांगुलं दुग्धे क्षाल्यं दुग्धे पिबेत्ततः ।।९६।।
वीर्यस्तम्भो भवेल्लेपाद्योनिर्गाढा प्रजापते ।।
बबूल्यर्कं सलवणं पीत्वा तद्वेगरोधनात् ।।९७।।

शुद्ध चिकनी बबूल के वक्कल को नीबू के अर्क में भिगोयकर फिर उसमें चार अंगुल का वस्त्र रंग लेवे. उस धुवावर्ण वाले रसीले वस्त्रखंड को अपने पीने योग्य दुग्ध में धोके पीले, इसको नित्य पीने से पुरुष का वीर्यस्तम्भन हो जाय. इसमें संशय नहीं है यह औषध रुकावट करने वाली है। इसका लेप करे तो लिंग मोटा हो जावे और अपनी योनि में रख लेवे तो योनि बहुत कड़ी हो जावेगी। बबूल का अर्क नोन के साथ पीकर के वेग को रोके तो भी वीर्यस्तम्भन हो जावे।।९६-९७।।

केतक्यर्केण बहुशो गन्धपाषाणधूपितो दशधा ।।
तद्युक्तलिङ्गभोगाद्योनौ लिङ्गे सुगन्धिः स्यात् ।।९८।।

इति श्रीरावणकृतार्कप्रकाशे सप्तमं शतकं समाप्तम् ।।७।।

केतकी के अर्क से बुझाया हुआ जो पूर्व कहे दश धूप उससे सुवासित किया गन्धक लिंग में लगाकर स्त्री प्रसंग करे तो योनि और लिंग सुगन्धित हो जावेगी।।९८।।

इति पण्डितमुकुन्दरामकृतार्कसंग्रहहिन्दीटीकाया सप्तमं शतकं समाप्तम् ।।७।।

******
****

अष्टमं शतकम्

उन्मत्तरस और वशीकरण

रावण उवाच

हंसहेली जटारंगोरोचनां टंकणं तथा ।।
स्वार्कक्लिन्नैस्तदर्कैस्तु नार्या वै सारिवा तथा ।।१।।
भोज्ये पाने प्रदातव्यं उन्माद्यो भूतगंधया ।।
भोज्ये पाने येन नीतः प्रेष्ठजीवितवश्यकृत् ।।२।।

रावण बोला कि हे प्रिये! शंखाहुली की जड़, रक्त चन्दन और गोरोचन इनको एक २ टंक लेकर इन्हीं के रस में भिगोय अर्क निकाले और वह और सारिवा यह स्त्री को खाने और पीने में देना। यह उन्मत्त करने वाला अर्क गंध मिलाय खाने पीने में लिया तो वह प्रियतम के मन को वश करता है।।१-२।।

जगद्वशीकरण

खवल्लिफलदलजार्कः सप्ताहं वासितः स्त्रियै देयः ।।
एवं विधिना हि रतया पुंसो दत्तो जगद्वशकृत् ।।३।।
सार्द्धमरण्यरजन्या त्रिखादितः स्वान्तसाधितस्नेहम् ।।
सकलमहीभुग्ललनावशीकरं नागतुल्ये मे ।।४।।

उपरोक्त अर्क आकाशवेल के पत्ते और फूलों के अर्क के साथ भिगोकर स्त्री को देवे इसी प्रकार से स्त्री और पुरुष को देवे तो जगत् भर में अवश्य वशीकरण होवे। वनहलदी के साथ प्रेमपूर्वक एकांत में तीन दिन तक बनाया हुआ उन्माद्यार्क खवावे। हे नागतुल्ये (गजगामिनी)! सम्पूर्ण राजा और रानियों को वश में करने वाला यह अर्क मैंने कहा है।।३-४।।

प्रस्थापिता पितृस्थाने एवमर्कं पिबेत्तु या ॥
स सेवितो नखाहेन वसीकरणसिद्धिदः ॥५॥

अपने पिता के गृह भेजी हुई स्त्री इस उन्माद्यार्क को बीस दिन पीवे तो इसको सेवन करने से वशीकरण सिद्ध होता है॥५॥

वामिनो मिथुनं ग्राह्यं वियोगं तस्य कारयेत् ॥
स्मरनेत्राग्निदाह्यत्वमापीडादृढबन्धनम् ॥६॥
एवं स्वनिकटे स्थाप्य ततो नार्यै समर्पयेत् ॥
ब्रह्मासनं गतो वापि तत्त्यक्त्वा स्वप्रियो भवेत् ॥७॥

वामी यानी मदिरा पीने वाले स्त्री और पुरुषों का जोड़ा देख उनका आपस में वियोग करवा लेवे और फिर मदिरा पीने वाले एक से एक को सामने रखे ऐसे कि, जिससे उनकी कामभरी दृष्टि उनको जलाया करे, जब तक उनको कामाग्नि की देखे और पीड़ा ज्यादा हुये जाय तभी तक गाढ़ा बांधे रहे। उपरांत फिर पुरुष को स्त्री के गोद में लिटा देवे तो यह प्रयोग होने से कोई ब्रह्मा आदि के आसन पर भी बैठा होय तो वह छोड़ के आकर अपना ही प्यारा होवे॥६-७॥

आधेवोऽर्कस्तु साध्योऽसावाधारार्कश्च साधकः ॥
पीत्वा कर्षयते शीघ्रं चतुर्धा चतुरां स्त्रियम् ॥८॥
"ओंताराय कृष्णाय त्रिनेत्राय ईक्षिताय ॥
आर्याय नमष्टः ठः स्वाहा" इति मंत्रः ॥९॥
मंत्रो ह्ययं पुरश्चार्यो जपसंख्याक्रमेण वै ॥
पंचसंख्याप्रजापेन समाकर्षयते ध्रुवम् ॥१०॥

जो अर्क साध्य हैं सो तो आधेय हैं और जो अर्क साधक हैं सो आधार हैं इन अर्कों को चार दिन पीकर शीघ्र चार स्त्रियों को खींच लेवें "ॐ ताराय कृष्णाय त्रिनेत्राय ईक्षिताय आर्याय नमष्टः ठः स्वाहा" यह मंत्र है। मनुष्य को चाहिये कि प्रथम इस मन्त्र का पुरश्चरण एक लक्ष करे उपरान्त फिर समय पर पांच ही वार मन्त्र पढ़ने से आकर्षण निश्चय

होवेगा। यह आकर्षण कहा॥८-१०॥

विद्वेषण की विधि

अहोरात्र्यन्धपंगूनां केशास्तद्वाहनस्य वा ॥
निखनेन्निर्गमद्वारि तदर्कं दिक्षु विन्यसेत् ॥११॥
वक्ष्यमाणं महामंत्रं जपेत्पूर्वविधानतः ॥
विद्वेषस्तु प्रजायेत त्रिदिनान्नात्र संशयः ॥१२॥

अब विद्वेषण कहते हैं कि दिन में अंधा (उल्लू), रात्रि में अंधा (रतौंधी वाला) और पंगुला इनके केश और उसका वाहन घोड़ा आदि के बाल निकलने के द्वारे में गाड़ देवे और पहिले कहा हुआ उन्माद्य अर्क इनके चारों ओर छिड़क देवे और आगे कहे मंत्र को पूर्वोक्त विधान से तीन दिन बराबर जपे तो विद्वेष (लड़ाई) अवश्य होवे इसमें कोई संदेह नहीं॥११-१२॥

हयारिहययो रक्तघृतेनाभ्यज्य कज्जलम् ॥
कृत्वा दत्त्वा नयनयोर्यं पश्येद्द्वेषणं भवेत् ॥१३॥
"तारोह ॐ डामरेति ईश्वरायामुकेन च ॥
सह द्वेषं कुरुकुरु स्वाहा ठष्ठः" अयं मनुः ॥१४॥

भैंसा और घोड़े के रक्त में घृत मिलाय काजल उतारे उसको नेत्रों में आंज के जिसको देखे सोई विद्वेषी होय याने वहां पूरा विघ्न हो जावे अर्थात् अवश्य पूरी २ हानि होवे। मंत्रोद्धार यह है कि ॐ नमो डामराय चेश्वरायामुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु ठः ठः स्वाहा" यह मंत्र है॥१३-१४॥

मंत्रसिद्धि के नियम

आभ्यन्तरं बहिः शुद्धिर्ब्रह्मचर्यं यथोदितम् ॥
अल्पाहारश्चाल्पनिद्रा नियमः सर्वसिद्धिषु ॥१५॥

योगमार्ग की कही रीति से भीतर बाहर की शुद्धि और धर्मशास्त्र में कही रीति से ब्रह्मचर्यधर्म करे और लघु नाम थोड़ा भोजन करे और

किंचित् नींद इस प्रकार नेम से रहे और गुरु की बतायी उत्तम रीति पर सीखा हुआ मंत्र विधिपूर्वक जपा जावे तो ईश्वर कृपा करे तो अवश्य सिद्धि होवे।।१५।।

महादेवाभरणकं तत्सुतांश्च लघीयसः ।।
क्षिप्त्वा चाहिवरच्छिद्रे मासमात्रं समुद्धरेत् ।।१६।।
साध्यस्य निखनेद्द्वारि किंचिच्चैवं तथा पुनः ।।
आग्निकोणाद्वायुकोणे क्षिपेदेतत्समुच्चरेत् ।।१७।।
बलिं गृह्णिन्त्विमे भूताः स्थानस्थाः सर्व एव हि ।।
उच्चाटयन्तु सर्वेऽपि रिपुमेनमहत्रिकात् ।।१८।।
"तारो नमो भगवते डामरेश्वरमूर्तये ।।
उच्चाटय" इति मंत्रेण कार्यसिद्धिरुदाहृता ।।१९।।

महादेव का आभरण नाम सर्प और उनके बच्चे शत्रुओं के वास्ते मारकर फिर सर्प ही के बिल में खूब अच्छी तरह गाड़ देना चाहिये उपरांत एक मास में निकाले तो कुछ तो साध्य निकले सो उसके द्वारपर गाड़ देवे और कुछ अग्निकोण से वायव्य कोण की तरफ छोड़ देवे और यही कहता जावे कि इस स्थान के बासी सम्पूर्णभूतो! यह बलि तुम ग्रहण करो और इसको तीन दिन में उचटाओ, इस मंत्र को जपता जावे ॐ नमो भगवते डामरेश्वरमूर्तये अमुकं उच्चाटयोच्चाटय, इस मंत्र से यहां कार्यसिद्धि होगी।।१६-१९।।

उच्चाटन के नियम

ब्रह्मचर्यादिनियमान् धारयेद्विधिपूर्वकम् ।।
जपेत गुरुमार्गेण दीक्षितो मंत्रसिद्धिदम् ।।२०।।

ब्रह्मचर्य आदि नियमों को विधिपूर्वक धारण करे और गुरु की रीति से मंत्र को जपे तो ईश्वर की कृपा से यह उच्चाटन सिद्ध होगा।।२०।।

बुद्धिस्तम्भन

अन्तिमपाण्डववल्ली शिखरी सिद्धार्थमार्कवं चैव ।।

श्वेतावचैषामर्कमादौ पीत्वा तद्धर्षयेल्लोहम् ।।२१।।
पात्रे तच्चन्दनसमं द्विदिनान्ते समुद्धरेत् ।।
तिलकं सर्वशत्रूणां बुद्धिस्तम्भकरं परम् ।।२२।।
"तारो नमो भगवते विश्वामित्राय वै नमः" ।।
चतुर्दशाक्षरो मन्त्रः सिद्धेऽस्मिन्कर्मणि स्मृतः ।।२३।।

इसके उपरांत अब स्तम्भन कहते हैं। बहुत पुराने अर्जुन वृक्ष की वेल, ओंगा, सरसो, भांगरा और श्वेत वच इन सबका अर्क पहले पी लेवे फिर इन्हीं के अर्क से लोहे को खूब घिसे, जब घिसते घिसते कि चन्दन के समान हो जावे तो फिर दो दिन तक बराबर उसी बर्तन में रख छोड़े, इसके तिलक से सर्व शत्रुओं की बुद्धि स्तम्भन हो जाती है। ॐ नमो भगवते विश्वामित्राय नम यह १४ अक्षर का मन्त्र इस कार्य मे उत्तम है।।२१-२३।।

शत्रु पराजयकरण

यवनार्कस्तु सांघ्रिश्च हरितालेन वेष्टयेत् ।।
ताम्रपात्रे पुनर्वेष्टच मुखस्थं सर्वशत्रुहृत् ।।२४।।
पीत्वादौ कृकलासार्कं 'ॐ चामुण्डे भवेति' च ।।
मन्त्रो भवेद्दारुणोऽसौ मनुरेकादशाक्षरः ।।२५।।

जड़ समेत प्याज वा लहसुन का अर्क हरताल के साथ तांबे के पात्र में घिसकर उसको मुंह में रखे तो सम्पूर्ण शत्रुओं को जीत लेवेगा, परंतु प्रथम किरकांटे का अर्क पीकर 'ॐ नमश्चामुंडायै नमो नमः' या 'भवाय च' इस मन्त्र को जपे। ११ अक्षरों का यह दारुण मन्त्र है, इसको शत्रु जीतने पर कहा है।।२४-२५।।

कौतुककरण

लिखेच्चित्रं तदर्केण रक्ताश्वारिप्रसूनकम् ।।
सम्मार्ज्य दर्पणं पश्येत्खराश्वाद्यं स्वरूपकम् ।।२६।।

भैंसे के रक्त से फूल के आकार का चित्र लिखे और इसी के रक्त से दर्पण

को मांजकर यदि देखे तो अपना स्वरूप भैंसे कासा दीखे॥२६॥

ज्वालामुख्यम्लवेतं च रक्ताश्वारिप्रसूनकम् ॥
सम्मार्ज्य दर्पणं पश्येन्नृखराश्वोष्ट्ररूपकम् ॥२७॥

ज्वालामुखी और अम्लवेत का अर्क और लाल घोड़े और भैंसे का अर्क ले इससे भी दर्पण मांजकर यदि देखे तो मनुष्य का मुख गधे घोड़े और ऊंट कासा दीखेगा॥२७॥

गोदुग्ध्यर्केऽञ्जनं पुष्पे सेन्द्रजालिककज्जलैः ॥
दर्पणे दृश्यते रूपं पूर्वजन्मसमुद्भवम् ॥२८॥

दुद्धी के अर्क में फूल रंगकर इससे इन्द्रजालरूपी देखे और कजली मे दर्पण को मांजकर देखे तो पुर्वजन्म का स्वरूप जैसे का तैसा ही दीखने लगे॥२८॥

नार्या जरायुधूपेन चित्रं वह्नौ प्ररोहति ॥
पुनर्माहिषधूपेन योगात्स्वस्थं भवेद्ध्रुवम् ॥२९॥
नस्येऽञ्जनं तदा तेन कृतभ्रान्तिनिवारणम् ॥
तत्तुल्या गर्भशय्यायां धूपाद्भिन्ना न दृश्यते ॥
प्रकटत्वं समायाति स्वर्णमाहिषधूपतः ॥३०॥

नारी के जर को धूप देने से पूर्वोक्त पुष्पादिका चित्र प्ररोहण करे (उठे) अर्थात् हँसने लिखने लग जावेगा और भैंसे की धूप से स्वस्थ होवेगा और वही सूंघा आंजा गया किये कराये की भ्रान्ति को मेटेगा और उसी को सेज के निकट धूप देवे तो दोनों परस्पर मिली दीखे फिर माहिषधूप से प्रकट होवे॥२९-३०॥

मारणविधि

हालाहलं वत्सनाभं लाङ्गली चित्रमूलकम् ॥
स्वादजां चौर्णनाभिं च श्वेता च गृहगोधिका ॥३१॥
एतदर्केण वस्त्राणि लिप्त्वा यः परिधारयेत् ॥
विमुक्तकर्णतयेवैवं जायतेऽसौ यमेऽतिथिः ॥३२॥

हालाहल वत्सनाभ, जलपीपली, चित्रक, खारी मूली, मकड़ी और सफेद छिपकली इन सबके अर्क को किसी के वस्त्रों में लगावे और पहिरावे तो वह दिये हुए ऋणी की तरह निश्चिंत हुआ यम का अतिथि हो अर्थात् यमपुरी जाने वाला होगा।।३१-३२।।

गोपालादस्योरसस्तु यत्नादर्कं समुद्धरेत् ।।
पुनर्हालाहलार्केण भावितं तच्च मेलयेत् ।।३३।।
महारसेन देयोऽसौ चम्बेल्यकानुपानतः ।।
वारमेकं स रमते रमणीभिर्भुनक्ति च ।।३४।।
स्तुतिं कुर्वन्ति वैद्यस्य को वा धन्वन्तरिस्त्वयम् ।।
सोऽथ कुर्वीत वमनं रेचनं च म्रियेत च ।।
रुधिरच्छार्दिरित्यादिदुष्टदुःखैर्विदूषितः ।।३५।।

बघेरा के रस का अर्क यत्न से निकाले और उसे हालाहल विष के अर्क में मिलाकर युक्त करे और इसी प्रकार महारस को चमेली के साथ में देवे तो वह लेने वाला मनुष्य एक बेर ही रमणी से रमण करने पाता है और भोजन करने पाता है और फिर नहीं और फिर उस वैद्य की सब स्तुति करते हैं कि क्या यह धन्वन्तरिजी ही है और यह साध्य लोही, छादणी, दस्त, वमन से दुःखी होता है उपरांत मृत होता है।।३३-३५।।

अदृश्यकरण

बिडालकंटकक्षौद्रो हलमीनवकेशरैः ।।
योगिन्यर्कोऽञ्जनं चैतदन्धकारे तु मेलयेत् ।।३६।।
तदीयां गुटिकां कृत्वा क्षिपेत्त्रेधा तु सम्पुटे ।।
मुखमध्ये स्थिता यस्य सोऽस्य दृश्यः प्रजायते ।।३७।।

गोखरू, शहद, कलिहारी, नवीन उत्तम केशर, जटामांसी के अर्क में संयुक्त कर फिर कहीं अंधेरे में अंजन बनावे अर्थात् अर्क में खूब घोंटे, गाढा होने पर छोटी २ गोली बना तीन सम्पुट अर्थात् पर्त में लपेट मुख में रखे तो वह मनुष्य अदृश्य होवेगा यानी वह किसी को नहीं दिखाई

देवेगा।।३६-३७।।

शिवालये तु कन्यार्कः शिलायां शिलया सह ।।
ललाटे तिलकं कृत्वाऽदृश्यो भवति तत्क्षणात् ।।३८।।

शिवजी के सिवाले में घीग्वार के पट्ठे का अर्क खरल में मैनशिल के संग घिसकर ललाट में टीका लगाने से जरा सी देर में नहीं दिखाई देवेगा।।३८।।

स्रोतोञ्जनं सप्तबारं तेन कार्याऽर्कभावना ।।
शरावं तत्तु तत्कुक्षौ दत्वा पाकगृहे पचेत् ।।३९।।
पुटपाकविधानेन पचेदेवं महानसे ।।
तदञ्जनाददृश्यः स्यात्पुनस्तत्त्वंसनात्स्फुटम् ।।
"तारानमोडामरायादृश्यसिद्धिंकरोतुचेति "।।४०।।

स्रोतोंजन को घीग्वार के पट्ठे के अर्क में सात वेर भिगोवे फिर उसको सकोरे में धर देवे और रसोई के जगह मकान में पकावे और पुटपाक की रीति से पकाय लेवे फिर अंजन बना लेवे इस अंजन से भी अदृश्य हो जाता है फिर उसको मिटावे तो दीखने लगेगा। मंत्र इसका यह है 'ॐ तारो नमो डामराय मेऽदृश्यसिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा'।।३९-४०।।

मोहनकरण

कालोन्मत्तस्य पञ्चांगं कृष्णसर्पे विनिःसृतम् ।।
शम्भोरस्त्राद्भावितस्य धूपो यस्मै प्रदीयते ।।
सम्मोहनमवाप्नोति नरो वा नरवाहनः ।।४१।।

जड़ सहित काले धतूरे का काले सर्प के संग अर्क निकाल के और शिव के शस्त्र का धुवां दे जिसको दिया जावे वह मनुष्य हो वा तद्वाहन पशु हो तुरंत मोह जाता है।।४१।।

मोहन के अन्य उपाय

रुद्रप्रियस्य बीजानामर्केणैव विभावितम् ।।
दशधा तालकं भाव्यं भक्षणात्सर्वमोहकृत् ।।४२।।

धतूरे के बीजों के अर्क में हरताल को दश बार भिगोय के खूब सुखावे फिर खाने में देने से सबको मोहता है॥४२॥

गुरुहेली कामफली काकोदुम्बरिभूफली ॥
कन्यापुरुषमूत्राभ्यां सप्तवारेण भावयेत् ॥४३॥
शोषयित्वा ततः पेष्यं धत्तूरार्केण गोलिका ॥
विधानतिलकेनैव मोहयेद्भुवनत्रयम् ॥४४॥

गुरुहेली, कामफली, काकोदुम्बरी, आमला इन सबको कन्याके पेसाव में सात वार भावना दे फिर सुखावे और पीस लेवे उपरान्त धतूरे के अर्क में गोली बनावे और इसका तिलक लगावे तो लोगों को मोहित करेगा॥४३-४४॥

अग्निस्तम्भकरण

रक्तयाभेकशशिजपाटलार्को जलस्थले ॥
कृत्वाऽथ पाचयेत्तैलं यथोक्तविधिना ततः ॥४५॥
एतेषामेव यो लेपं कारयेत्करपादयोः ॥
अङ्गाराणामुपरितो नरो भ्रमति भूमिवत् ॥४६॥

रक्तशोष, मेंडक, पाटल और कमोदिनी इनके अर्क से नीचे जल का पात्र रखकर इसका तेल यंत्रविधि से निकाल लेवे और इसी तेल का लेप हाथ व पैरों में लगाने से आदमी आग के अंगारों पर चले तो भी कुछ तकलीफ नहीं होती है मानो जमीन में चलता है॥४५-४६॥

सहव्येक्षुभवं पीत्वा चर्वयेत्तगरं वचाम् ॥
तप्तलोहं लिहेत्पश्चात्कृतदोषो विशुद्ध्यति ॥४७॥

घी के संग गन्ने का अर्क पीके तगर और वच को चाव लेवे फिर तपे लोहे को भी निगले तो उसका दोष निवारण हो जावेगा यानी आराम होगा॥४७॥

उच्चटाया रसेनैव सर्वांगे लेपमाचरेत् ॥
अङ्गाराद्यग्निकामध्ये भ्राम्यमाणो न दृश्यते ॥४८॥

तारश्च वज्रकिरणे अमृतं कुरु युग्मकम् ॥
स्वाहान्तस्तिथिवर्णोऽयमग्निस्तंभो नियोजयेत् ॥४९॥

उटंगन के अर्क को सम्पूर्ण शरीर में लेपन करे तो अंगारे में भी घूमे तो भी डर नहीं यानी जले नहीं। इसमें मन्त्र यह है 'ओम् तारकेश्वर वज्रस्यामृतं कुरु कुरु स्वाहा' यह पन्द्रह अक्षरों का मन्त्र है। इसको अग्निस्तंभ कर्म करने में नियोग करे॥४८-४९॥

जलस्तम्भकरण

सर्पाक्ष्यास्यस्य रक्तं तु कृत्वा चन्द्रार्कवह्निषु ॥
सुखेन जलमध्येऽसौ पर्यटेन्निजगेहवत् ॥५०॥

सर्प के मुख और नेत्र का रुधिर लेकर धूप और चांदनी में लेवे फिर उसको अपने पास धरकर उपरांत चाहे जहां जल में अपने घर के तौर पर तैरता रहे॥५०॥

जलस्तम्भका अन्य उपाय

श्वेताजटारक्तिकायाः कुसुम्भपरिपोषितः ॥
तेनैव रञ्जयेद्वस्त्रं तद्वस्त्रेणाङ्गवेष्टितम् ॥५१॥
गम्भीरजलमध्येऽपि यावदिच्छेत्स तिष्ठतु ॥
जलस्तम्भस्य सिद्धिस्तु भवेत्त्वस्यार्कभक्षणात् ॥५२॥

सफेद चिरमिटी की जड़ कुसुम के रस में खूब पीसकर उसी से वस्त्र को रंग देवे फिर अपने शरीर में लपेटे और गंभीर (ज्यादा) पानी में भी खूब विचरे। पानी के थमने की सिद्धि मछली के अर्क के खाने से भी होती है॥५१-५२॥

तीसरा उपाय

भैरवीयकपालस्य चूर्णं श्लेष्मान्तकं फलम् ॥
पिष्ट्वा तेनाजिनं लिप्त्वा घनं ह्यङ्गुलमानतः ॥५३॥
तच्छुष्कं निक्षिपेत्तोये तडागे वा नदीतटे ॥
तस्योपरिस्थितो योऽसौ न कदाचिन्निमज्जति ॥५४॥

भैरवीय कपाल (मनुष्य की खोपड़ी) का चूर्ण और लसौड़े के फल इन सबको पीसकर आसन में अंगुलीपुट लपेटे और उस आसन को खूब सुखावे और नदी या तालाव के तीर जल में छोड़ दे फिर उस पर जा बैठे सो कदाचित् डूबेगा नहीं।।५३-५४।।

उन्मत्तकरण

ऊर्णनाभिश्च षड्बिन्दुः समांसा कृष्णकण्टकी ।।
भावयेदेतदर्केण ततो गात्रे विनिक्षिपेत् ।।५५।।
स्फोटा भवंति सप्ताहान्म्रियते च तया रुजा ।।
इन्दीवरशिखण्डीनां पिच्छलेपात्सुखी भवेत् ।।५६।।

ऊर्णनाभि और छबिन्द यह सब बराबर लेकर काली कटेली के अर्क में भावना देवे फिर उसको शत्रु के शरीर में छिड़क देवे तो सात दिन में उसके फोड़े अवश्य निकल आवेंगे और वह उसी रोग से मर भी जावेगा किंतु नील कमल और मोरपंख के लेप से सुखी हो जा सकता है।।५५-५६।।

याम्यभौमे मृतो यस्तु तद्भस्मादापरक्षयेत् ।।
वैरिवर्चे समायुक्तं सरावे संपुटो भवेत् ।।५७।।
मृतकेशैस्तदावेष्टय शून्यागारे परित्यजेत् ।।
यावच्छुष्यति सा विष्ठा तावच्छत्रुर्मृतो भवेत् ।।५८।।
"तारो नमो भगवते ॐ डामरेश्वराय च ।।
अमुकं मारय १ ष्ठठः" एवं मन्त्रमुदीरयेत् ।।५९।।

जो पुरुष मंगलवार के दिन भरणी नक्षत्र में मरे तो उसकी भस्म लेकर यत्नपूर्वक रख छोड़े फिर उसमें शत्रु की विष्ठा मिलावे फिर सकोरों से बंद कर मुरदों के बालों से बांधे फिर शून्य मकान में उसे छोड़ देवे तो जितने देर में वह विष्ठा सूखे उतनी देर में उन्मत्त होकर शत्रु मृत्यु को प्राप्त हो जावे। 'ॐ नमो भगवते ॐ डामरेश्वराय अमुक मारय ठ ठः' इस मंत्र का विधिपूर्वक जप करे।।५७-५९।।

उन्मत्तकरण का अन्य प्रयोग

भावयेद्धूर्तजार्केण भक्ष्ये पाने प्रदीयते ।।
उन्मतो जायते स्वस्थः सितांगोदुग्धपानतः ।।६०।।
लवमुखीरुद्रहारः कण्टकी कण्टकं समम् ।।
लांगूलवद्द्विषो विष्टा गृहीत्वा दक्षिणाशजाम् ।।६१।।
विसृजेच्छयने यस्य सद्यः शत्रुर्यमं स्मरेत् ।।
पयसा मुंडितं मंडं शय्यां त्याग उपक्रमः ।।६२।।

पूर्वोक्त भस्म को धतूरे के अर्क में भिगोकर खान पान में देवे तो शत्रु उन्मत होवे और दूध मिश्री के पीने से आराम हो जावे। लोमुखी नागदमनी और काटों समेत कटेली इन सबको जमालगोटे के अर्क में भावना देवे उपरांत उसमें हरताल मिलावे और फिर सुखा लेवे इसके धूप से शत्रु उन्मत्त होवेगा और काली जीरी के धुवें से सुखी होवे और भेड़िया की विष्ठा लेवे और जिसके शयनस्थान में डाल देवे वह शत्रु मर जावे और घबड़ा जावे। दूध से रगड़ी हुई खोपड़ी को सेजपर गेर देवे तो भी इसी तरह होवे।।६०-६२।।

दूरदेशगमनसाधन

शरपुंख्या कोकिलाक्षः काकजङ्घा च भृङ्गकः ।।
एते श्वेताश्च ह्रींबीजं पुष्यार्के ज्येष्ठयोद्धरेत् ।।६३।।
पीत्वा तदर्कमेतेषां मूलैस्तु कटिबन्धनम् ।।
वायुवद्भ्रमते पृथ्वीं प्रयासायासवर्जितः ।।६४।।
श्वेतकाकस्य जंघा च तथा कामफलानि च ।।
कृष्णाया सुरभेर्दुग्धं पत्रवृक्षस्य वल्कलम् ।।६५।।
एतेषां पादलेपेन योजनानां शतं व्रजेत् ।।
श्वेतार्कस्य हि मूलाङ्गं शुक्तवंशस्य रोचना ।।६६।।
अजाया नवनीतेन पुष्यनक्षत्रपाचितैः ।।
लेपेन पादतलयोर्व्रजेत्कामिकमार्गकम् ।।६७।।

शरफोंका, कोकिलाक्ष, काकजंघा और भांगरा इन सबका रस चित्रक के साथ पुष्पनक्षत्र का जब सूर्य होवे वा ज्येष्ठा नक्षत्र में निकाले, इस अर्क को पीवे और इन्ही सबकी जड़ें कमर में बांधे तो पृथ्वी पर हवा के तौरपर तैरता रहे, परिश्रम जरा नहीं पड़ेगा। श्वेतकाकजंघा, कामफली, काली गाय का दूध और पत्रज की छाल इनको पैर में लपेटने से मनुष्य सौ योजन चल सकता है। श्वेत बांस की जड़ और गोरोचन इस सबको बकरी के मक्खन से पुष्पनक्षत्र में पकावे और चरणों के तलुओं पर लेपन करे तो जितना चाहे उतना चल सकता है, परिश्रम नहीं पड़े॥६३-६७॥

बुद्धिभ्रंशकरण

भ्रामर्यर्कं तु पीत्वादौ पश्चात्तद्घ्राणमाचरेत् ॥
प्रेतास्यगं पुरं कृष्णधूपितं च चिताग्निना ॥६८॥
प्रेताहितस्य धूपेन जगदावेशितं भवेत् ॥
कृष्णागुरुं तालकं च कनकस्य फलानि च ॥६९॥
उग्रगन्धाकुक्कुटाण्डः सकलानां प्रधूपनात् ॥
धूपेन वेशयेत्सर्वं यावद्देहं न संशयः ॥७०॥
मृडप्रियप्रसूनस्य पञ्चाङ्गानि च भावयेत् ॥
यमवाहनरक्तेन यावत्प्रकृतिसंख्यकम् ॥७१॥
तदत्यष्टिलवं देयं वत्सनाभं च धूपनम् ॥
चेष्टां हरति सर्वेषां पुरुषो निशिताकृतिः ॥७२॥

भौरीं के अर्क को प्रथम पीकर वा सूंघकर फिर मादक कर्म का नाम लेवे और मुरदे के मुख में धरा हुआ गूगल से काला, चिता की अग्नि से धूनी देवे फिर राल की धूनी देवे तो संपूर्ण जगत् बावलासा हो जाता है। कृष्णागुरु, हरताल, धतूरे के फल, वच, अजवायन और मुरगी का अण्डा इन सबों की धूप से सम्पूर्ण देहधारियों को बावलापन हो जाता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। धतूरे के फल और पंचांग अर्थात् धतूरे के

वक्कल, जड़, पत्र, काष्ठ, फूल इन सबको लेकर खूब कूट छानकर भैंसे के रक्त में इक्कीस वार भावना देवे और उसके आठवें भाग को वत्सनाभ से धूनी देवे, वह धुवां सबों की चेष्टा को हरता है और इससे पुरुष लोहे की मूर्ति के तुल्य हो जाता है।।६८-७२।।

स्त्रीपुरुषों का संभोगसंधीकरण

सद्यो मृतस्य सुग्रीवार्कक्लिन्नवस्त्रं करीरके ।।
दृढीकृतं तु कीलेन सुप्ते नरि निधारयेत् ।।७३।।
सकृद्युक्तो प्रजायेतां तदा नारीनसै भृशम् ।।
मोक्षो वस्त्रस्य वंशाच्चेन्मुक्तिर्भूयात्तदा तयोः ।।७४।।
समुद्रगाया नद्यास्तु सुतीरगतमृत्तिकाम् ।।
सुभैरवस्य वाहस्य रतौ रेतो तयोस्तु यत् ।।७५।।
इमां तु वटिकां योऽसौ कोलयुक्तां करोति च ।।
सर्वासनानां बन्धं तु मोक्षोऽस्यार्कस्य पानतः ।।७६।।

तत्काल के मरे हुए मुरदे की ग्रीवा (कंठ) का अर्क (रक्त) लेकर उससे भिगोया वस्त्र बांस में कील से ठोक लेवे और रमणे वाले की शय्या के पास छोड़ देवे तो उससे दोनों स्त्री पुरुष, जुड़े रहे जाते हैं और जब उसकी कील निकाल वस्त्र उस बांस में दूर होवे तो उनकी छुट्टी होती है, यह देखने वालों को ताज्जुब होवेगा। समुद्र में मिलने वाली बड़ी नदी के तट की मिट्टी लेकर और कुत्ते के बाल और उसी कुत्ते के बालों को उसी के किये विषय से टपका वीर्य मूत्र रज में रंगकर फिर उसकी गोली बेर के समान बनावे जिस किसी को यह गोली देवे तो सम्पूर्ण आसनों का बन्धन होवे यानी कोई भी आसन न खुले फिर इसी का अर्क पीने से छुट्टी होवेगी।।७३-७६।।

क्षुधावृद्धि

अग्न्यर्कं तु समाकृष्य पिवेत्पश्चाद्भुजि चरेत् ।।
वन्दार्केणार्कवृक्षस्य पीठे कृत्वा निषेचनम् ।।

योऽसौ भुंक्ते घृतैः सार्द्धवह्निनं भीमसेनवत् ।।७७।।

चित्रक के अर्क को निकालकर पी लेवे और फिर भोजन करे, अथवा आक के फूलों के भीतर के गुन्दोके अर्क को पीकर कुछ आसन के नीचे छिड़क देवे तो वह घृत के सहित बना हुआ भोजन भीमसेन के समान बहुत करे।।७७।।

क्षुधावृद्धि का दूसरा प्रयोग

गृहीत्वा मंत्रितान्मंत्री बिभीततरुपल्लवान् ।।
आक्रम्य दक्षजङ्घायां विंशत्याहारभुग्भवेत् ।।७८।।

संध्यासमय विधिपूर्वक बहेड़े को न्योता दे आवे और पत्ता लाय अर्क निकालकरके उस अर्क को दक्षिणजंघा में लगावे तो बीस आहार के समान भोजन करने वाला होवे।।७८।।

तीसरा प्रयोग

अक्षमासंत्र्य सन्ध्यायां शतपुष्पस्य मालिका ।।
शिरो बद्धा कृपणतां त्यक्त्वा पाण्डुवदत्त्यसौ ।।७९।।

सायंकाल जाकर आक के वृक्ष को निमंत्रण कर आवे फिर प्रातःकाल उसके सौ फूलों की माला को चोटी में बांधकर कृपणता को छोड़ के भोजन करे। 'ॐ नमस्ताराय सर्वभूताधिपतये मम ग्रासं शोषय २ स्वाहा' इस मंत्र को नियमपूर्वक जपे तो काम सिद्ध होता है।।७९।।

क्षुधानिवारण

गणेशप्रियमूलानि रथांगारस्य मूलकम् ।।
नीलोत्पलस्य मूलानि कसेरुं चापि पाचयेत् ।।८०।।
तत्पायसं च सघृतं भुक्तं मांस क्षुधापहम् ।।८१।।

मूषापर्णी, असगंध, मूली, नीलकमल की जड़ और कसेरू इनको खूब पकावे इसकी खीर बनावे और घृत के साथ भोजन करे तो १ महीने की भूख जाती रहेगी।।८०-८१।।

क्षुधानिवारण प्रयोग दूसरा

उदुम्बरशमीजम्बूबीजं मूलशिरीषजम् ॥
बीजं युक्तं तु तच्चूर्णं मासार्द्धं क्षुत्तृषापहम् ॥८२॥

गूलर, शमी, जामुन, मूली, सिरस के बीज इन सबका चूर्ण घी के साथ खावे तो १५ रोज क्षुधा और प्यास जाती रहे॥८२॥

क्षुधानिवारण तीसरा प्रयोग

कोकिलाक्षस्य बीजानि महिषीदुग्धक्षौद्रयुक् ॥
द्वादशाहं क्षुधा हन्यात्सर्वत्रार्कः समुद्भवः ॥८३॥

कोकिलवृक्ष के बीज, भैंस का दुग्ध और शहद के साथ इन सबका अर्क १२ रोज की भूख का निवारण करता है॥८३॥

चोर आदिकों का भयनिवारण

टंकलोहात्परं भेदजातार्केण निषेधयेत् ॥
सहस्रधा तु तत्पृष्ठमनुमेकं लिखेन्नरः ॥८४॥
पिशाचिनीगणो शांतिं चोरिणीति पदं तथा ॥
नखाक्षरो मनुरयमिति कुष्ठचास्त्रभेदकम् ॥८५॥
एतत्प्रभावतः कोऽपि मेघशब्दं शृणोति न ॥
योगनिद्रे विष्णुमाये सर्वान्निद्रय निद्रय ॥८६॥
इमं मंत्रं तु जपता विंशद्वर्णमनुत्तमम् ॥
गुडपिप्पलिकामध्ये बलेर्निदर्यते जगत् ॥८७॥
आदौ पीत्वा द्विधाऽर्कं तु धत्तूरजलभावितम् ॥
मांस स्रोतोंजनं तेन जिताक्षो निशि पश्यति ॥८८॥

लोहचूर्ण १ टंक और पाषाणभेद १ टंक इन सबका अर्क शुद्ध आसन पर बैठकर एक हजार बेर सीचे फिर इस मंत्र को इन कही औषधों के अर्क से रंगे पात्रपर सौ मंत्र लिखे 'ॐ तारक नमस्ते चोरिणी पिशाचिनी तारां शमय २ स्वाहा' यह २० अक्षरों का मंत्र सिद्धि को देता है और इसके प्रभाव से कोई मेघ का शब्द भी सुने तो न चेते अथवा गुड़ पीपल

की बलि देने से भी सारा जगह आलस्य में शिरला के तुल्य पड़ा रहे और 'ॐ नमो योगनिद्रे विष्णुभावे सर्वान्निद्रय २ स्वाहा' इस-२० अक्षरों के मंत्र को जपते २ सिद्धि होवेगी। पेस्तर वृद्धदारु नाम औषध का अर्क पीकर धतूरे के अर्क में भावना देवे और जिसके नेत्रों में आंजा जावे उसको एकमास में जरूर २ अच्छी तरह रात को दीखने लगेगा।।८४-८८।।

तारो नमो ब्रह्मवेषरिरक्ष द्विठठं मनुः ।।
मन्वक्षरोपसंसिद्धिः पञ्चांगविधिना ततः ।।८९।।
मुष्टौ गृहीत्वा सप्तपाषाणान् कटचां बद्धा परौ ततः ।।
गृहीत्वा गृहणीं पादयोर्लिप्य साधकः ।।९०।।
धत्तूरार्कं पिबेच्छीघ्रं विशेषो जायते क्षणात् ।।
कुर्वंति स्वेषु कलहं चौराणां स्तंभने गतिः ।।९१।।
आदिचौरे कठिल्लस्य ब्रह्मलब्धवरस्य च ।।
तेषां चौर भयं नास्ति ये स्मरंति कठिल्लकम् ।।९२।।

इति श्रीरावणकृतार्कप्रकाशे अष्टमं शतकं समाप्तम् ।।८।।

'ॐ नमो ब्रह्मवेषं रक्ष रक्ष ठः ठः स्वाहा' इस १४ अक्षरों के मंत्र को पञ्चांगविधि और ब्रह्मचर्यादि विधि से पूजन करके चित्त से जपे तो अवश्य सिद्ध होवेगी। सात कंकरी पत्थर बराबर की लेके कमर में बांधकर मुट्ठी में भटकटैय्या को लेकर चला जाय और उसी का अर्क चरणों में लगाय लेवे और चले तो अवश्य धन मिलेगा। जो धतूरे के अर्क को पीकर जावे तो उसी वक्त में उनके चित्त में विक्षेप होवेगा और वे आपस में क्लेश करने लगेंगे और यह प्रयोग चोरों के रोकने में पूर्ण है। चोर इत्यादिकों के भय में ब्रह्माजी से वर प्राप्त भये कारवेल का अर्क जो घर में छिड़कते वा रखते हैं तो उनको चोरों से भय नहीं होता है।।८९-९२।।

इति पण्डितमुकुन्दरामकृतार्कप्रकाशहिन्दीटीकायां अष्टमं शतकं समाप्तम् ।।८।।

नवमं शतकम्

रावण उवाच

कर्णगण

तिलपर्णी समुद्रोत्थफलं च नवधा तथा ॥
समुद्रस्थितिरेवास्य शिराकर्णगणोऽप्ययम् ॥१॥

तिलपर्णी (रक्तचन्दन) समुद्रफल और जलबेंत यह नाड़ियों और कर्णों का पोषण करनेवाला गण है॥१॥

वामनगण

ज्योतिष्मती च हेमाह्वा तलिता नागनीफलम् ॥
माक्षिका देवदाली च गणोऽयं वामनः स्मृतः ॥२॥

मालकांगनी, चूक, धतूरा, नागपुष्पी, नागदमनी का फल, सोनामक्खी देवदारु यह वामन गण (बमन कराने वाला) है॥२॥

रञ्जनगण

चतुर्विधा हरिद्रा स्यात्पतंगो रक्तचन्दनम् ॥
नीली कुसुम्भमञ्जिष्ठा लाक्षा मेहंदिकिंशुकः ॥३॥
जलं पुष्पं चांजनं च विमला पारिजातकः ॥
पांडोः फलं बीजसारो गणोऽयं रंजनो स्मृतः ॥४॥

दारुहलदी, वनदारु, हलदी, पतंग, सुर्ख चन्दन, नील कुसुम, मंत्री, लाख, मेहँदी, ढांक के केसू, जंगाल, नील, सपेदा, पारिजात् पांडु का फल, विजयसार यह रंग का गण कहा है॥३-४॥

नेत्र्यगण

रसाञ्जनं द्विधा प्रोक्तं त्रिफला लोध्रकद्वयम् ॥
कुमारिका च पिवला गणोऽयं नेत्र्यसंज्ञिकः ॥५॥

दोनों तरह का रसौत, त्रिफला, दोनों लोध, घीग्वार का पट्ठा और थूहर यह सब नेत्रगण नेत्रों की पीड़ा में बहुत हितकारी है।।५।।

त्वच्यगण

तैलं तु नवधा प्रोक्तं बाकुची चक्रमर्दकम् ।।
स्थौणेयं पर्पटी सृक्का त्वच्योऽयं गणउच्यते ।।६।।

तिल्ली, सरसों, अंड़ी आदि नौ तरह का तेल, बाकुची, पवाँर, थूनेर, पपड़ी और सिरका यह त्वचा को बहुत फायदा करने वाला गुण है।।६।।

उपविषगुण

भल्लातकं चातिविषं चतुर्भङ्गा च खाखसम् ।।
करवीरं द्विधा प्रोक्तमहिफेनं द्विधा मतम् ।।७।।
धत्तूरस्तु चतुर्धा स्याद्द्विधा गुञ्जा विनिर्विषी ।।
विषमुष्टिर्लांगली च गणश्चोपविषाह्वयः ।।८।।

भिलावा, अतीस और चार तरह के खसखस के दाने, दोनों प्रकार की कनेर, चिरमिटी, निर्विषी, कुचिला, जलपीपरि यह उपविष विषवालों से पृथक् गणना में विषगण है।।७-८।।

जलपुष्पगण

अष्टधा कमलानि स्युर्जलसी स चतुर्विधा ।।
जलजीवी च कुम्भीका जलपुष्पगणस्त्वयम् ।।९।।

आठ तरह के कमल, चार तरह के जलैठी, जलजीवी और कुंभीक यह जलपुष्पगण है।।९।।

कन्दगण

आलूकमष्टधा प्रोक्तं मूलकं त्वष्टधा तथा ।।
अष्टधा कदलीकन्दो गृञ्जनं द्विविधं मतम् ।।१०।।
हस्तकन्दश्च लशुनं पलाण्डुर्द्विविधो मतः ।।
अष्टधा पद्मिनीकन्दो वाराहीकन्दलक्षणः ।।११।।

क्रमुकं मुशलीकन्दो विदारी च कसेरुकः ॥
शतावरी चाश्वगन्धा बृहत्पाण्डुः सुदर्शनः ॥१२॥
आर्द्रकं शक्रकन्दश्च कोलकन्दो नगोद्भवः ॥
मौलिकंदो सूरणं च ज्ञेयः कंदगणस्त्वयम् ॥१३॥

आठ तरह का आलू, आठ ही तरह की मूली, आठ ही तरह की कहेली की गांठ, दो तरह का गाजरकंद, सलगम, लहसून, दो तरह का प्याज, आठ तरह का कमलिनीकन्द, वाराहीकन्द, वनकोहलाकन्द, मूशली कन्द, विदारीकन्द, कसेरूकन्द, शतावरकन्द, असगन्धाकन्द बृहत्कन्द, पांडुकन्द, सुदर्शनकन्द, अदरखकन्द, शक्रकन्दी, बेरकन्द, दोनों तरह के पर्वतीकन्द, मौलिकन्द, सूरणकन्द और जिमीकन्द इतने तरह का कन्दगण होता है॥१०-१३॥

लवणगण

शाकम्भरी च सामुद्रं चोद्भिदं विट्सुवर्चलम् ॥
सैंधवं नीलकंठं च पंगु लवणमष्टधा ॥१४॥

सांबरलवण, समुद्रनोन, उद्भिज्ज नोन, बिडनोन, सोचरनोन, सेंधानोन, नीलकण्ठ नोन, पंगुनोन ये आठ तरह के नोन कहे हैं॥१४॥

क्षारगण

सर्जिक्षारो यवक्षारष्टंकणं च · सुवर्चिका ॥
पलाशगोर्या शिखरी क्षारसप्तकमीरितम् ॥१५॥

सज्जीखार, जवाखार, सोहागाखार, शोराखार, ढाकखार और ओंगा-खार ये सात प्रकार के खार कहे हैं॥१५॥

अम्लगण

जम्बीरद्वितयं बीजपूरं मधुककर्कटी ॥
निम्बूकमरिकं चिञ्चावृक्षाम्लं चाम्लवेतसम् ॥१६॥
नैपालं चणकाम्लं च चमीरं तगरं तथा ॥
धान्याम्लमम्लपत्री च चुक्रमम्लगणस्त्वयम् ॥१७॥

दोनों जंभीरी, बिजौरा नीबू, मधुककड़ी, कागदी, नीबू, कमरख, इमली, वृक्षाम्लवेत, नैपाली, चणे का वघर, चमीर, तगर, धान्याम्ल (कांजी), अम्लपत्री (अंश्मन्तकवृक्ष) और चूक ये अम्ल (खटाई) का गण है।।१६-१७।।

फलगण

आम्रं तु त्रिविधं प्रोक्तं द्विधाऽम्रातकमुच्यते ।।
राजाम्रं चैव कोशाम्रं पनसस्त्रिविधो मतः ।।१८।।
कदलं त्वष्टधा प्रोक्तं लकुचं चिर्भिटं द्विधा ।।
त्रिधा तु नारिकेरं स्यात्कलिन्दं द्विविधं मतम् ।।१९।।
द्विविधं खर्जूरकं स्यात्पंचधा कर्कटी भवेत् ।।
पूगीफलं चतुर्धा स्याद्द्विधा तालफलं भवेत् ।।२०।।
बिल्वं कपित्थनारंगे तिंदुकं स्याच्चतुर्विधम् ।।
राजामलं च जंबू च बदरं चक्रमर्दकः ।।२१।।
द्विधा चैतानि चत्वारि विंशकं तु प्रियालकम् ।।
क्षीरणी पद्मबीजं च मक्षा श्रृंगाटका वरा ।।२२।।
परूषकं मधूकश्च दाडिमं स्याच्चतुर्विधम् ।।
द्विधा गौरीफलं कोलं श्रृंगारीमिष्टबीजकम् ।।२३।।
बहुवारश्च कतकं सुनेपाली बदामकम् ।।
द्राक्षा खर्जूरिका द्वेधा बादामाक्षोटपीलुकम् ।।२४।।
मिष्टनिम्बूफलं सेवं शिलीन्ध्रं कट्फलानि च ।।
आंतकोतामृतफलं प्रोक्तः फलगणस्त्वयम् ।।२५।।

आम तीन तरह के, अमली दो तरह की, राजाम्र, कोशाम्र, कटहर तीन तरह के, केला आठ तरह का, बड़हर, गुरुभिंडू, तीम तरह के नारियल दो तरह के तरबूज, खजूर दो प्रकार, की ककड़ी पांच तरह की, सुपारी चार तरह की, ताड़फल दो तरह के, बेल दो तरह की; नारंगी, तेंदुआ चार तरह का, चार चार प्रकार का राजाम्र, लामड़ाभेद, राजपुत्रक,

जामन, वेर पवांर ये चारों दो दो प्रकार के, बीस तरह की चिरौंजी, खिरनी, कमलगट्टे, मखाने, बहुत उत्तम सिंघाड़े, फाल से महुवा, चार प्रकार के अनार, दौनों गौरीफल (देशों में प्रसिद्ध है), दोनों कोल (बेर), सिंघाड़ी, मीठा बीज (अन्य देश में प्रसिद्ध), शेलु भी, निर्मली, वृक्षफल, सुलेमानी बादाम, दाख, खजूरी दोनों, बादाम, अखरोट, शीतफल, मीठा नींबूफल, सेव, शिलींध्र वृक्ष का फल, आंतकोल, अमरफल, (नासपाती) यह फलगण (फलों का समूह) कहा है।।१८-२५।।

शालिगण

रक्तशालिः सकलिमं पांडुकं शंकुनाहृतः ।।
सुगन्धकः कर्दमको महाशालिश्च दूषकः ।।२६।।
पुष्पाण्डकःपुण्डरीकस्तथा माहिषमस्तकः ।।
दीर्घशूकं काञ्चनको हायनो लोध्रपुष्पकः ।।२७।।
षष्टिकोऽनङ्गमालश्च पार्वतीयश्च झिंझणा ।।
हाकुवा राजभोगश्च प्रोक्तः शालिगणस्त्वयम् ।।२८।।

अब चावलों का भेद कहते हैं। रक्तशाली, सकलिम, पांडुक, शंकुनाहृत, सुगंधक, महाशालि, दूषक, पुष्पांडक, पुण्डरीक, माहिषमस्तक, दीर्घशूक , कांचनक, हायन, लोध्रपुष्पक, षष्टिक, अनंगमाल, पार्वतीय, झिंझना हाकुवा और राजभोग यह शालिगण (चावलों का समूह) कहा गया है।।२६-२८।।

शिम्बीधान्यगण

त्रिधा यवश्च गोधूमो मुद्‍गः षड्‍विध ईरितः ।।
त्रिविधः प्रोच्यते माषो राजमाषस्त्रिधा मतः ।।२९।।
मकुष्ठस्तुवरी त्रेधा निष्पावश्च मसूरकः ।।
त्रिधा चणकमुद्दिष्टं कलापश्च त्रिपुण्ड्रकः ।।३०।।
सर्षपस्त्रिविधः प्रोक्तस्तिलः प्रोक्तः चतुर्विधः ।।

अतसी तुवरी राजी शिम्बीधान्यगणस्त्वयम् ॥३१॥

तीन तरह के जौ, गेहूं और मूंग छः छः तरह के, उड़द, माष, चौला ये सब तीन २ तरह के, उड़द, राजमाष, महामाष, चपल तीन तरह का, राजमाष, मौठ, अरहर यह तीन २ तरह की, लोबिया, मसूर तीन २ तरह की, चना तीन तरह के मटर, तीन तरह की सरसों, चार तरह के तिल, अलसी और राई यह सब धान्य (अन्न) गण है॥२९-३१॥

क्षुद्रधान्यगण

कंगुश्चतुर्विधः प्रोक्तः श्यामाकश्चणकः कुदः ॥
कोद्रवो द्विविधः प्रोक्तः वंशबीजं शरोद्भवम् ॥३२॥
कुसुम्भबीजं तीनीलं योनरी च गवेधुकः ॥
दिर्जोंधला बाजरी च क्षुद्रधान्यगणस्त्वयम् ॥३३॥

मालकागनी चार तरह की, शामा, महुआ, कोदों वंशबीज, शरबीज, कुसुमबीज, तीनील, पुनैरा, गरहेडुआ, ज्वार यह क्षुद्र नाम छोटे नाजों का गण है॥३२-३३॥

पत्रशाकगण

द्विर्वास्तुकं पोतकी द्विस्त्रिर्मार्षस्तण्डुलीयकम् ॥
द्विधा पालक्यपित्रेधा द्विधा चाकालशाककम् ॥३४॥
करवीलोणिकाघ्राणीचिंचुचाङ्गेरिचुक्रिका: ॥
सुनिषण्कश्च गोजिह्वा द्रोणपुष्पी पटोलकम् ॥३५॥
शतपुष्मा मेथिका च कुञ्जरस्तीक्ष्णकण्टका ॥
धान्यकं चक्रवर्ती च जीवंती काकमाचिका ॥३६॥
पर्पटः कासमर्दश्च द्विधा राजगिरीकितः ॥
लिङ्गदण्डो द्विधा कोष्ठो पत्रशाकगणस्त्वयम् ॥३७॥

दोनों वथुआ, दोनों पोई का शाक, तीन तरह का मरसा चौलाई, दोनों पालक का शाक, तीन तरह का नारीशाक, दोनों कालशाक, कड़री, लोनीशाक, घाणी, चिंचु, चांगेरी, चूका का शाक, निवासी, गोभी का

फूल, गोमा, परवल, सौंफ, मेथी, कुहेंदरा, तीखे कांटों वाला शाक, और देशों का शाक, धनियां चकवड़, अजवायन, कसौंदी, पपड़ीशाक, गंडेली दोनों राई, कीडांकल लिंगदण्डी, दोनों कोठशाक, यह सब पत्तों के शाक का गण कहा है।।३४-३७।।

पुष्पशाकगण

काचनारिर्द्विधा राज्ञा खदिरः शाल्मलिर्द्विधा ।।
चतुः सौभांजनोऽगस्तिः पुष्पशाकगणस्त्वयम् ।।३८।।

दोनों कचनार, दोनों राई, खैर, दोनों शाल्मलि (सेमर), चार तरह का सहिंजना और अगस्ति यह सब फूलों का शाकगण कहा है।।३८।।

फलशाकगण

द्विः कूष्माण्डं त्रिधालाबुः करसी द्विश्च डिंडिशम् ।।
द्विःकारवेल्लं वृत्ताकं चतुः कर्कोटकी द्विधा ।।३९।।
त्रिधा कोशातकी बिंवी द्विधा शिंबी त्रिधा भवेत् ।।
दक्षिणं पञ्चधा दोडी कण्टकारिफलं द्विधा ।।४०।।
पिण्डारकं च गोविंदं द्विधा चैलं तथैव च ।।
श्लेष्मान्तकंकाकतिन्दुफलंशाकगणस्त्वयम् ।।४१।।

दोनों कुम्हड़े, तीन तरह के अलाबू, घीया, दोनों करसी, टींड़सी, करेला, ककोड़ा, दोनों बैंगन, चार प्रकार की ककड़ी, तीन तरह की तुरई, दोनों तरह के कुंदरु, तीन प्रकार की सेवंती, दक्षिणी डोडी, पांच तरह की और दो तरह के पैराके फल, पिंडास, गोंदा, चेलवृक्ष, शेलटक, तिंदुशाक यह फलशाकगण कहा है।।३९-४१।।

जांगलजीवगण

हरिणैणकुरङ्गाश्च पृषश्चंद्रश्च बिंदुकः ।।
राजीवः कुक्कुटो मुण्डीशंबरो जाङ्गलाः स्मृताः।।४२।।

हिरण, तामणा, काला हिरण, चांदविन्दे वाला, बारहसिंहा, और रोहू

विना सींग के यह जांगल जीवगण है।।४२।।

बिलेशयजीवगण

गोधाशशभुजङ्गाखुफूत्कारः शल्लकी शिवा ।।
चुच्छुंदरी स्थूलमुषघूंसाद्यस्तु बिलेशयाः ।।४३।।

गोह, खर्गोश, सांप बीछू, मूषक, दुमुही, शिवा छछूंदरी और बड़ा मूषक, घूंस ये बिल के वास करने वाले हैं।।४३।।

गुहाशयजीवगण

सिंहव्याघ्रवृका ऋक्षहरिहाद्विपखड्गिनः ।।
बभ्रुजम्बुकमार्जारा इत्याद्याः स्युर्गुहाशयाः ।।४४।।

सिंह, व्याघ्र, भेड़िया, रीछ, विलू चीता, न्यौला, स्यार, बिडाल ये गढ़ें में रहने वाले जीव हैं।।४४।।

पर्णपशुगण

लाङ्गली वानरी खारी वृक्षमार्जारलम्पटः ।।
कुम्भेरीझिङ्गुनीलण्टश्चैते पर्णमृगा मताः ।।४५।।

लंगुरी, बंदरी, खारिका, वृक्षविलाई, लिपटपने वाली, कुम्हेरी और झींगनलंटी ये सब पत्ते वाले वृक्ष में वास करने वाले जीव हैं।।४५।।

विष्किरपक्षिगण

वर्तकालावगिरिकाकपिञ्जलकतित्तिराः ।।
पादायुधः कलिंगश्च चकोराद्यास्तु विष्किराः ।।४६।।

बटेर, वतक, तीतर, गोरा तीतर, गवरैवा, मुर्गा चकोर ये सब विष्कर संज्ञक जीव हैं।।४६।।

प्रतुदपक्षिगण

हारितो धवलः पाण्डुश्चित्रपुच्छो बृहच्छुकः ।।
पारावतः खञ्जरीटः पिकाद्याः प्रतुदाः स्मृताः ।।४७।।

हरा, धौला, चित्रपंखी, पहाड़ी तोता, कबूतर, खंजन, कोयल इत्यादि ये प्रतुद पक्षी हैं।।४७।।

प्रसह पक्षिगण

काककाकारिककुहीशशहागृध्रचिल्लकः ॥
चाषो भासश्च कुरर इत्याद्याः प्रसहाः स्मृताः ॥४८॥

कौआ, शिकरा, उलू, बाज, गीध, चील, नीलकंठ, मोर,. कुरर ये सब बल करके खाने वाले जीव हैं॥४८॥

ग्राम पशुगण

छागो मेषो वृषोऽश्वश्च लुलायो ग्रामशूकरः ॥
वृषदंशः सारमेय एते ग्रामसृगाः स्मृताः ॥४९॥

बकरा, मेढ़ा, बैल, भैंसा, घोड़ा गांव का सूकर, बिलाव, कुत्ता ये सब ग्राम मृग (पशु) हैं॥४९॥

जलतीरजीवगण

सर्पश्च शृंगी खड्गश्च बलमाहिषशूकराः ॥
चमरी गवयो लोझ इत्याद्यास्तीरसंस्थिताः ॥५०॥

सांप, बारहसिंगा, वराहबली, भैंसा, शूकर, चमरी, गौ, रोहू ये सब जल के निकट रहने वाले जीव हैं॥५०॥

प्लव (उड़नेवाला) जीवगण

हंससारसकाचाक्षावचक्रक्रोञ्चशराविकाः ॥
नन्दीमुखीसकादम्बा बलाकाद्याः प्लवाः स्मृताः ॥५१॥

हंस, सारस, चाख, चकवा, ढ़ेंक, रदबिम्दु, नांदीमुख, करवा, बगुला, लवा ये सब उछलके उड़ने वाले जीव हैं॥५१॥

कोशजजीवगण

शंखः शंखनखः कोशी शुक्तिशम्बूककर्कटाः ॥
भेकमेढकभूनागडिण्डिमाद्याश्च कोशगाः ॥५२॥

शंख, शंखाहुली, शंखकोशी, सुती, घोंघा, केंकड़ा, मेंढ़क, झींगर, आदि कोशज जीव हैं॥५२॥

पादीनजीवगण

कुम्भीरकूर्मनक्राह्वा गोधामकरशंकवः ।।
घण्टिका शिशुमारश्च ग्रहाद्याः पादिनः स्मृताः ।।५३।।

कांटेवाला मच्छ, कछुआ, नाका, गोह, मकर, सांकच, घड़ियाल, सूस इत्यादि पादीन संज्ञक जीव हैं।।५३।।

मत्स्यगण

रोहीतकश्च झंगूरः प्रोष्टीविलिचमोरलः ।।
शृङ्गीमुण्डीरोमशोलिखल्याद्या मत्स्यजातयः ।।५४।।

रोहेड़ा, झींगुर, मछली, पंखदार मछली, मोरिलिया, सींगवाला गुंड़ा, रोमवाला, सिल्ही, खल्ही यह मत्स्यगण कहा है।।५४।।

विरेचनगण

आरग्वधश्च कम्पिल्लः कटुक्यं कोष्ठवारुणी ।।
शिवलिङ्गीं नागपुष्पी द्विधा दन्ती त्रिधात्रिवृत् ।।५५।।
सन्नाहमाक्षिका द्वेधा रेवाचीनीन्द्रवारुणी ।।
अजैपालं गन्धरेकी विरेचनगणस्त्वयम् ।।५६।।

अमलतास, कंपिला, कुटकी, कोटवारुणी, शिवलिंगी, नागपुष्पी दोनों दंती, तीनों निसोत, सनाय, सोनामाखी, रूपामाखी, रेवतचीनी, इन्द्रवारुणी, अजैपाल, (जमालगोटा) और गन्धनाकुली यह सब विरेचन (दस्तावर) गण है।।५५-५६।।

पाचनगण

पाषाणभेदी मरिचं जवानी जलशीर्षके ।।
शुण्ठी चव्यं गजगणः भृंग्यादिः पाचको गणः ।।५७।।

पाषाणभेद, स्याह मिर्च, अजवायन, जलशिर, सोंठ, चव्य, गजपीपरि, काकरासिंगी यह सब पाचन यानी पचाने वाला गण है।।५७।।

उष्णगण

त्रिविधा पिप्पली तस्या मूलं तुंबरकस्त्रिधा ।।

तेजोह्वाकफलं भांडी पौष्करादिकमुष्णकम् ।।५८।।

पीपरि, जलपीपरि, गजपीपरि, पिप्पलामूल, तुंवरु, सौरभ, वनतुंबुरु, तेजबल का फल, भारंगी, पुहकरमूल इत्यादि उष्णगण, है।।५८।।

दीपनगण

द्विविधश्चित्रगोधान्यमजमोदा च जीरकम् ।।
चतुर्धा हबुषा द्वेधा गणोऽयं दीपनः स्मृतः ।।५९।।

चित्रक, चीता, दोनों तरह के धनियां, अजवायन, अजमोद चार तरह का जीरा, दो प्रकार का हाऊंबेर यह दीपनगण (अग्नि बढ़ाने वाला और पचाने वाला) है।।५९।।

पुष्टिकारकगण

चतुर्धा तु तुगाक्षीरी चन्द्रसूरोऽष्टकवर्गकः ।।
द्वीपान्तरवचा चिह्लं त्वक्पत्रं नागकेशरम् ।।६०।।
तालीशपत्रत्वक् क्षीरी त्वचा गोगुरुरोहिणी ।।
कपिकच्छूतोयबद्धभूफलं पौष्टिको गणः ।।६१।।

चार तरह का वंशलोचन, हाल्यूं, अष्टवर्ग, दूसरे टापू की वच, पत्रज, नागकेशर, तालीसपत्र, वंशलोचन तज, गोरखमुंडी, गुरुरोहिणी, कौंच तोयबन्धा, बहुफली यह सब पुष्टिकारक गण है।।६०-६१।।

वातहारकगण

महानिंबश्च कार्पासी द्विधैरंडो वचा द्विधा ।।
निर्गुंडी द्विविधा हिङ्गु गणोऽयं वातहारकः ।।६२।।

बकायन, कपास, अरण्ड लाल और काला, दोनों वच, दो तरह की निर्गुण्डी और हींग यह वातहारक गण है।।६२।।

कृमिनाशक गण

विडङ्गनागभिन्ना च खुरासानी जवानिका ।।
द्विधा करञ्जष्टेकारी कौटजः कृमिहा गणः ।।६३।।

वायविडंग, नागभेदी, खुरासानी, अजवायन, दोनों करंज, टेकारी कुटज

यह सब कृमिनाशक गण है।।६३।।

तृण (घास) गण

त्रिधा वंशः कुशा काशास्त्रिधा दूर्वा नलोचगाः ।।
गुन्दो मुञ्जो दर्भमेथी चटकादिगणस्तृणम् ।।६४।।

तीन तरह के बांस, कुश, कास, तीन प्रकार की दूब, गाडर जलभंगरा, भांग, गांजा, बालछर, मूंज, डाभ, मोथिया यह सब तृण (घास) गण कहा गया है।।६४।।

प्रसरगण

प्रसारिणीद्वयं मुण्डी लज्जालुर्द्वे पुनर्नवाः ।।
द्विः सारिवाभृङ्गराजः पञ्चधा छिक्कणी द्विधा ।।६५।।
ब्राह्मीद्वयमलम्बूषा शंखपुष्पीसुशातलाः ।।
पातालगरुडी घोटा गणः प्रसरसंज्ञिकः ।।६६।।

प्रसारिणी, गन्धप्रसारिणी, दोनों तरह की गोरखमुंड़ी, लज्जालु, लज्जावंती, दोनों प्रकार की सांठी, सरवन, पिठवन, पांच तरह का भंगरा दो तरह की नकछिकनी। दो तरह की ब्राह्मी, तूम्बी, शंखाहुली, शातल, छः प्रकार की पातालगरुडी यह प्रसर यानी भोजनादि को फैलाने वाला गण है।।६५-६६।।

वृक्षगण

कम्भारी तिन्दुकं शाला सणबीजकशाल्मली ।।
शिंशुपा ककुभो नन्दी रोहितः खदिरत्रयम् ।।६७।।
बन्धूलः पुत्रजीवश्च अरिष्टोङ्गुदजिङ्गिनी ।।
तमालभूर्जभूल्यश्च धवो धन्वंगमोक्षकः ।।६८।।
भूमिसहः सप्तपर्णः शाखोटो वरुणः शमी ।।
कटभीस्तिनिशो मालुजैत्रो वृक्षगणस्त्वयम् ।।६९।।

कुह्मरेण, गोनापाठा, शाला, सणबीज, शाल्मली, शिंशुप, अर्जुन, वृक्ष, वृक्षनंदी (पीपलभेद), रुहेड़ा, तीन तरह का खैर, बन्धूलवृक्ष,

पतिजिया, अरिष्ट (नींव), गोदी, जीगन, तमाल, भोजपत्र, भूल्य, धव, धामिनवृक्ष, मोक्षक। भूमिसह, सप्तपर्ण, शाखोट, वरुण, शमी, कटभी तिनिस, मालु और जैत्र यह वृक्षगण है।।६७-६९।।

गुल्मगण

बलाचतुष्टयं पर्णीपञ्चकं चाग्निमन्थकः ।।
पाठा जवासा वार्ताकी कोकिलाक्षाशतो द्विधा ।।७०।।
अपामार्गद्वयं मूर्वा त्राहिमाञ्छरपुंखिका ।।
काकनासा काकजंघा मेषशृङ्गी च वन्दकम् ।।७१।।
वन्ध्या कर्कोटिकी त्रेधा वर्वरी तुलसी द्विधा ।।
वज्रदन्ती द्विधाऽजाजी भीमा गुल्मगणस्त्वयम् ।।७२।।

चारों बला (बला, अतिबला, नागबला और महाबला), पांचो, पर्णी (शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी, मुद्गपर्णी, माषपर्णी और मंडूकपर्णी), पाठ, जवासा, छोटी कटेली, कोकिलवृक्ष, पीतसार, विजयसार, दोनों, ओंगा मूर्वा त्रायमाण, शरफोंका, काकनासा, काकजंघा मेढासिंगी, बंदलाडोडा, तीनों तरह की ककोड़ी, (ककोड़ी, वांझ, ककोड़ी, खखसा), वरवटी, दोनों तरह की तुलसी, दोनों वज्रदन्ती दोनो प्रकार का रूरू, जीरा, दोनों कलौंजी यह भीमा (उत्तम गुच्छेदार) वृक्षों का समूह कहा है।।७०-७२।।

वल्लीगण

गुडूचिका नागवल्ली सोमवल्ल्यपराजिता ।।
स्वर्णवल्ल्यस्थिसंहारी भ्वदंत्याकाशवल्लिका ।।७३।।
वटपत्री हिङ्गुपत्री वंशपत्री बृहन्नला ।।
अर्कपुष्पी च सर्पाक्षी द्रोणमूढककर्णिका ।।७४।।
द्विपोटरा मयूरस्य शिखा बन्धनवल्लिका ।।
कनकाह्वा च वासन्ती मनोज्ञेति लतागणः ।।७५।।

गिलोय, नागवेल, अमृतवेली, अमरवेल, दोनों शालिपर्णी, दोनों

विष्णुक्रांता, अपराजिता, स्वर्णवेल, काकवल्लरी, हड़संहारी श्वानदन्ती, आकाशवेल, वटपत्री, मोहनी, हिंगुपत्री, कवरी, वंशपत्री, वेणुपत्री, वृहन्नला, अर्कपुष्पी, सर्पाक्षी सरहंटी, गूमा, मूषाकर्णी, द्विकोटरा मोरशिखा, बंधनवेल, कनकवेल, मनोदा यह सब वेलों का गण है॥७३-७५॥

कुसुमगण

चतुर्धा स्थलपद्मानि सेवन्ती गुलदावती ॥
नेपाली च गुलाबश्च गुलावासश्च दण्डिनी ॥७६॥
जाती यूथी राजवल्ली क्षुद्रयूथी त्रिधा मता ॥
चम्पको नागचम्पश्च बकुलश्च कदम्बकः ॥७७॥
कुब्जश्च शिववल्ली च द्विकुन्दः केतकी द्विधा ॥
किङ्किरातः कर्णिकारो ह्यशोको बाणपुष्पकम्॥७८॥
कुरण्टकश्चतुर्धा स्यात्तिलको मुचुकुन्दकः ॥
बन्धूकश्च चतुर्धा स्याज्जपा द्वेधा च सुन्दरी ॥७९॥
अगस्तिर्दमनी मारुः पेटारी बहुवर्णिकः ॥
द्विपाटला सूर्यमुखी दासः पुष्पगणस्त्वयम् ॥८०॥

चार तरह के कमल, सेवंती, गुलदाउदी, दीर्घपत्री, गुलाब, गुलावास, दंडिनी, जाती, जुही, लघुजुही, स्वर्णजुही, राजवेल, चंपा, नागचंपा, मौलश्री, कदंब, शिववेल, कुंद, मोघराकुंद, दोनों केतकी (केतकी और सुवर्ण केतकी) दोनों चिरायता, कर्णिकार (टेसू), अशोक, बाणपुष्प (गौड़ देशप्रसिद्ध वृक्ष), चार प्रकार का कुरंटक (गुलाबांसा), तिलक, मुचकुंद, चार तरह के वंधूक (रक्तक, वंधु वंधुक व बंधुजीव), दुपहरिया, दोनों सुन्दरीफूल, अगस्ति, दमनी, रवा, पेटारी वरबरीपुष्प, श्वेतरक्तवर्ण पुष्प, सूर्यमुखी और प्रियकपुष्प यह फूलों का गण है॥७६-८०॥

दुग्धवृक्षगण

द्विधार्कः पञ्चधा वज्री शातला दुग्धिका द्विधा ॥
वटस्त्रिः पिप्पलप्लक्षोदुम्बराश्च पयोगणः ॥८१॥

दोनों दुद्धी, तीन तरह का वड़ पीपल, पाकर और गूलर यह दुग्ध वाले वृक्षों का समूह है॥८१॥

धूपगण

द्विधाऽगुरुर्देवदारुर्गन्धपाषाणकस्त्रिधा ॥
गुग्गुलः पञ्चधा सर्जो निर्यासः सरलस्य च ॥८२॥
पद्मकाष्ठं मोचरसो निर्यासः शल्लकीभवः ॥
रालो नैपालकं चेति गणोऽयं धूपसंज्ञिकः ॥८३॥

दोनों अगरू (अगरू और कृष्णागरू), देवजारु, तीनों गन्धपाषाणी, पांचों गूगल, निर्यास, सरल, पद्माक, मोचरस, निर्यास शल्लकी, राल, और नहपाल यह सब धूपगण है॥८२-८३॥

सुगंधिद्रव्यगण

द्विकर्पूरस्त्रिकस्तूरी लता कस्तूरिकाण्डजः ॥
शिलारसो जातिफलं जातिपत्री लवङ्गकम् ॥८४॥
द्विधला रोचनं द्वेधा पञ्चधा कुंकुमं प्रिये ॥
गौडपत्री सुधासश्च सुगन्धाह्वगणस्त्वयम् ॥८५॥

दोनों कपूर (कपूर और चीनियां कपूर), तीनों कस्तूरी, लता कस्तूरी, कांडज शिलारस, जायफल, जावित्री, लौंग, दोनों प्रकार की इलायची दोनों रोचन, पांच तरह का केशर (काश्मीर देश का लाल, दूसरा वाहलीक देश का पीला, तीसरा फारसी देश का कुछ २ पीला, कटुकेशर व तिक्तकेसर), गौड़पत्री और सुधास हे प्रिये! यह सुगन्धगण है॥८४-८५॥

दूसरा सुगन्धगण

वालकं वीरणं मांसी द्विनखं चन्दनं त्रिधा ॥

शैलेयं त्रिविधं मुस्तं गन्धपालशिका मुरा ।।८६।।
द्विकर्चुरप्रियंगुश्च रेणुका गंधमालती ।।
ग्रंथिपर्णी त्रिधा सृक्का कङ्कोलाख्यं च तालिसम्।।८७।।
लामज्जकं नलीका च पद्मं बल्वेलबालकम् ।।
द्विरोहिषं पौण्डरीकं चान्यद्धूपगणस्त्वयम् ।।८८।।

वालक (सुगंधवाला), वीरण (गांडर), जटामांसी, दोनों नख (नख और नखी), तीनों प्रकार का चन्दन (श्वेत रक्त और पीत), शिलाजीत, मोथा, नागरमोथा, गंधपलासी, दोनों कचूर (कचूर, द्राविड़ कचूर) दोनों प्रियंगु (प्रियंगु और गंधप्रियंगु), रेणुका, गंधमालती, मिर्च के बराबर सुगंधवाली, तीन तरह की ग्रंथपर्णी, सिरका, शीतलचीनी, तालिसपत्र, घासभेद, नलिका सुगंधवस्तु, पद्मावती, एलवालुक, दोनों रोहिष, सुगंधवाला यह दूसरा धूपगण है।।८६-८८।।

दुग्धपशुगण और दुग्धादिगण

गावस्तु दशधा काली त्रिधाऽजाऽविस्त्रिधा मता ।।
मृगी ह्येका त्रिधा मेषी त्रिधोष्ट्री च दशधा हयी।।८९।।
पञ्चधा करिणी नारी दशधा शूकरी द्विधा ।।
व्याघ्री शुनी श्वदंष्ट्री च रासभी पञ्चधापृथक् ।।९०।।
त्रिधावृक्यष्टधा मत्स्यी गवयी खड्गिणी रुणी ।।
दुग्धं घृतं च तक्रं च दधि ताभ्यः प्रजायते ।।९१।।

दश तरह की गायें, तीन तरह की भैंसे, तीन तरह की बकरी, एक तरह की हिरणी, तीन तरह की भेढ़ी, तीन तरह की ऊंटनी, दश तरह की घोड़ी, पांच तरह की हथिनी, दश तरह की नारी, दो प्रकार की शूकरी, बंघेरी, कुतिया, और गधी पांच २ तरह की, तीन तरह की भेड़ ही, आठ तरह की मछली, रोझणी, रांभड़, शूकरी और रोड़ी, इन्हीं से ही दूध, दही, घृत, छाछ पैदा होते हैं यह दुग्धादिगण कहा

है॥८९-९१॥

धातुवर्ग

तिथिधा तु सुवर्णं स्यादष्टधा रजतं भवेत् ॥
पञ्चप्रकारकं ताम्रं वङ्गं तु द्विविधं स्मृतम् ॥९२॥
जसदं त्रिविधं प्रोक्तं भवेन्नागस्तु षड्विधः ॥
अष्टधा लोहमुद्दिष्टमेते सप्तैव धातवः ॥९३॥

सुवर्ण १५ तरह का है (स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेमहाटक, तपनीय, गांगेय, कलधौत, कांचन, चामीकर, शातकौंभ, कार्तस्वर, जांबूनद, जातरूप और महाराजत इस प्रकार ये १५ भेद सोने के कहे हैं), आठ तरह की चांदी (रूप्य, रजत, तार, चन्द्रकांति, सितप्रभ, गुरुस्निग्ध, मृदुश्वेत, घनक्षम और वर्णाढ्य), पांच प्रकार का तांबा (रविप्रिय, म्लैक्ष, मुख, सूर्य, पर्यायनामी और जपापुष्पसदृश) दो प्रकार का रांगा (रंग व वंग), तीन तरह का जस्त छ प्रकार का नाग और आठ तरह का लोहा इसी तरह ये सात धातु कही हैं॥९२-९३॥

उपधातुवर्ग

स्वर्णजं स्वर्णमाक्षीकं तारजं तारमाक्षिकम् ॥
तुत्थं ताम्रभवं ज्ञेयं कंकुष्ठं वङ्गसंभवम् ॥९४॥
रसको जगदाज्जातो नागात्सिन्दूरसम्भवः ॥
लोहजातं लोहकिट्टमेते सप्तोपधातवः ॥९५॥

सोना से सोनामक्खी, चांदी से रूपामक्खी, तांबे से तुत्थ (नीलाथोथा और तूतिया), वंग से कंकुष्ठ, जस्त से रस (पारा), नाग से सिन्दूर और लोहे से लोहकिट्ट ये सप्त धातुओं से सात ही उपधातु उत्पन्न हुए हैं॥९४-९५॥

उपरसवर्ग

रसश्चतुर्गन्धकश्च तालकश्च द्विधा मतः ॥

द्विधाऽञ्जनं च कासीसं गैरिकं च रसा इमे ।।९६।।
पारदाद्दरदो जातो टंकणं गन्धकात्तथा ।।
स्फटिकाभ्रकतो जाता हरितालान्मनःशिला ।।९७।।
अञ्जनाच्छुक्तिशखाद्याः कासीसाच्छंखमूर्वकः ।।
गैरिकान्मृत्तिका जाता तस्मादुपरसा इमे ।।९८।।

पारा चार तरह का (लाल, पीला, सफेद और काला), गंधक, चार तरह का (लाल, पीला, सफेद और काला), हरताल दो तरह का (पतरी का और पिंड़े का) अंजन (सुरमा) दो तरह का (स्रोतोंजन स्याह और सौवीरांजन धौला) कसीस और गैरिक (गेरू) ये वैद्यक में छः रस हैं पारे से दरद (शिंगरफ) उत्पन्न होता है, गंधक से टंकण (सोहागा), अभ्रक से खड़िया और हरताल से मैनशिल बनती है। सुरमा से सीपियां (शंखादि) कासीस से मूर्वा शंखभेद और गेरू से सादा गेरू पैदा होता है इस कारण ये उपरस हैं।।९६-९८।।

रत्नवर्ग

वज्रं मुक्ता प्रवालानि गोमेदो नीलशिल्वकम् ।।
पुष्पकं पिचु माणिक्यं रत्नान्येतान्यनुक्रमात् ।।९९।।

वज्र नाम हीरा, मुक्ता (मोती), प्रवाल, (मूंगा), गोमेद नीलम, पन्ना, पुखराज, इन्द्रनील और पद्मराग ये सब क्रम से नवरत्न कहे हैं।।९९।।

क्षुद्ररत्नवर्ग

वैक्रान्तो मौक्तिको शुक्ती रक्षो मरकतं लशुः ।।
लाजा गारुडजन्मा च स्फटिका रत्नजातयः ।।१००।।
इति श्रीरावणकृतार्कप्रकाशे नवमं शतकं समाप्तम् ।।९।।

वैक्रांत, मौक्तिक, शुक्ति, रक्षत, मरकत, लशुनिया, लाजा, गारुडक और स्फटिक ये रत्नों की नौ जाति कही हैं।।१००।।

इति पण्डितमुकुन्दरामकृतार्कप्रकाशहिन्दीटीकायां नवम शतक समाप्तम् ।।९।।

दशमं शतकम्

रावण उवाच

सोने के लक्षण

दाहे रक्तं सितं छेदे निषेके कुंकुमप्रभम् ॥
तारसुल्वोज्झितं स्निग्धं कोमलं गुरु हेम यत् ॥१॥

रावण बोला कि हे प्रिये! सुवर्ण ऐसा हो कि तपाने में लाल, छेदन और कूटने पर सफेदी लिये, बुझाने पर केशररंग के तुल्य पीला, रांग के मेल का शुल्व अर्थात् खोटापन से रहित, स्निग्ध (चिकना), रोचक और भारी हो, ऐसा सोना सर्वोपर श्रेष्ठ (सौ नंबरवाला) होता है॥१॥

धातुओं का मारण शोधन

पत्राणि सप्तधा कृत्वा वह्नौ तानि प्रतापयेत् ॥
वेष्टनैस्तैः समावेष्टच तैलवर्गे विनिक्षिपेत् ॥२॥
पृथक् पृथक् च दशधा तक्रवर्गे तथैव च ॥
धान्यक्वाथे मूत्रवर्गे मद्यवर्गे कटूद्भवे ॥३॥
अम्लवर्गे पुष्पवर्गे रक्तवर्गे फलोद्भवे ॥
क्षीरवर्गे ह्यर्कवर्गेनिर्वाप्यास्ते समंततः ॥४॥

अब शुद्ध करना कहते हैं। धातु के सात पत्र करके अग्नि में तपा करके फिर अपने अपने वेष्टनों से लपेट के तेल के भरे पात्र में छोड़ देवे यानी तपे को बुझावे फिर पृथक् पृथक् प्रकार से छाछ में, फिर अन्न की कांजी में, फिर गोमूत्र में, मदिरा में, फिर कटुक के रस में फिर खटाई के रस में, फिर फूलों के अर्क में, उपरान्त लाल फूलों के अर्क में फिर फलों के रस में, फिर दूध में, फिर शुद्ध जल में, फिर अर्कवर्ग में इस प्रकार दश २ बेर बुझाय देना चाहिये॥२-४॥

कृत्रिमा धातुसम्मिश्रा ये च नो कार्यसाधकाः ॥
जायन्ते दग्धदोषास्तु धातवो गाङ्गवारिवत् ॥५॥
गैरिकं स्वर्जिकक्षारो बिडलोणं च भास्वरम् ॥
नवसादरकः कन्यागुञ्जास्वर्णादिवेष्टितम् ॥६॥

जो कृत्रिम मिली हुई धातु है सो कार्य साधक नहीं हैं रस में बुझाने के कर्म से सब दोषोंवाली भी गंगाजल समान होती हैं। गेरू, सज्जीखार, बिडलवण, काचलवण, नौसादर, ग्वारपाठा, चिरमिटी ये सुवर्णादि सात धातुओं के वेष्टने (लपेटने) के द्रव्य हैं॥५-६॥

दद्यात्पत्राणि धान्याम्बून्यथ तानि समुद्धरेत् ॥
गोमूत्रकेऽथवा तानि दत्वा वारि त्रिकं त्रिकम् ॥७॥
पात्रेषु सर्वधातूनां दत्वा तत्तुल्यकज्जलीम् ॥
दत्वानलान्तरे तानि वालुकायन्त्रके पचेत् ॥८॥
पृथक् पृथक् सूर्यदण्डैर्वह्निभिर्दीप्तिकादीभिः ॥
शुद्धीकृत्य पुनस्ताश्च यथेच्छं पुटतः पचेत् ॥९॥

यह कजली लगाकर इनको कांजी में या गोमूत्र में तीन तीन वेर बुझावे और निकाल लेवे यह दूसरे प्रकार की रीति है। फिर सप्त धातुओं के पत्रों में उन उनके समान कजली लपेटके फिर उनको अग्नि में लगाकर वालुका यंत्र में अर्थात् बड़ी हंडिया में छोड़ करके उसको बीच में धातु कजली से लिपटाकर रख दे और नीचे के छेद की रास्ता से अग्नि देवे तो शुद्ध होगी। सातों धातु न्यारे २ बारह २ घड़ी प्रथम शतक में कही दीप्ताग्नि से खूब विधिपूर्वक पकावे तो सम्पूर्ण सुवर्णादि धातु शुद्ध हो जावेंगे फिर ग्रन्थातरों की रीति से यथेच्छ पुट लगाकर भस्म को बना ले इतना करने से ये उत्तम गुणदायक और रोगनाशक हो जाते हैं। यह धातुओं का मारण प्रकरण कहा है॥७-९॥

शुद्ध किये हुए सुवर्ण के द्रव्यसंयोग मे पृथक् २ गुण

योगेन मत्स्यपीतायाः स्वर्णं तत्कालदाहहृत् ॥

भङ्गयोगाच्च तद्वृष्यं दुग्धयोगाद्बलप्रदम् ।।१०।।
पुनर्नवायुगे नेत्र्यं घृतयोगाद्रसायनम् ।।
स्मृत्यादिकृद्वचायोगात्कान्तिकृत्कुंकुमेन च ।।११।।
पयसा राजयक्ष्माणं निर्विष्या च विषं हरेत् ।।
शुण्ठी लवङ्गमरिचैस्त्रिदोषोन्मादहृत्परः ।।१२।।
असम्यङ्मारितं स्वर्णं बलवीर्यं च नाशयेत् ।।
करोति रोगान् मृत्युं च तस्मात्कुर्यात्प्रयत्नतः ।।१३।।

शुद्ध सुवर्ण मत्स्यपीता (केदारकुटकी) के योग से रत्ती या आधी रत्ती यथावल खाने से तुर्त ही दाह को दूर करता है, भांग के योग से खावे तो शरीर को महापुष्ट करता है, दूध के संग खाने से महावल बढ़ाता है, दोनों साठियों के योग से खावे तो नेत्रों के रोग को दूर करता है, घृत के योग से महारसायन वाजीकरण है, वच के साथ खाने से स्मरण शक्ति (बुद्धि) को बढ़ाता है, केसर के संग खाने से कान्ति को अधिक करे हैं, दुग्ध के साथ खाने से राजयक्ष्मा नाम महारोग को दूर करता है, निर्विषी के संग खाने से विष को दूर करता है, सोंठ, स्याह मिर्च और लौंग के संग खाने से वातपित्तकफात्मक तीनों दोषों को और उन्मादरोग को दूर करता है। कुरीति से मारा भया सुवर्ण बल और वीर्य को दूर करता है, अनेक रोग उत्पन्न कर देता है, यहां तक कि मरण कर देता है, इसी कारण यत्न से सुवर्ण मारे।।१०-१३।।

चांदी के गुण

गुरु स्निग्धं मृदु श्वेतं दाहच्छेदे घनक्षमम् ।।
वर्णाढ्यं चन्द्रवत्स्वच्छं तारं नवगुणं शुभम् ।।१४।।
सितया हन्ति दाहाद्यं वातपित्तं फलत्रिकात् ।।
त्रिसुगन्धैः प्रमेहादि रजतं हन्त्यसंशयम् ।।१५।।
विट्बंधनं च वीर्यं च वृष्यं सक्षयजित्परम् ।।
कृशत्वं रोगसङ्घातं कुरुते तदशोधितम् ।।१६।।

अब चांदी के गुणागुण कहते हैं। भारी, चिकनी, कोमल, सफेद, जलाने में और छेदने में घन के योग्य, रंगत लिये और चन्द्र समान निर्मल ये चांदी के गुण हैं। परंतु हमने यहां विशेष करके नौ गुण रखे हैं। मिश्री के संग दाहादि को दूर करता है, त्रिफला के संग वातपित्त को दूर करता है, त्रिसुगंध से धातुक्षीणादि रोगों को चांदी का रस निःसन्देह दूर करता है। मल को व वीर्य को बांधता है, शरीर को पुष्ट करे है और क्षयी को अत्यंत दूर करता है। तथा विना शोधा हुआ दुर्बलता को करे है और अनेक रोग समूह को उत्पन्न करता है।।१४-१६।।

तांवे के गुण

जपाकुसुमसंकाशं स्निग्धं मृदुघनक्षमम् ।।
लोहनागोज्झितं ताम्रं मारणाय प्रशस्यते ।।१७।।
दुग्धसन्नाहखण्डैर्यस्ताम्रं रक्तिद्वयोन्मितम् ।।
पिबेत्तस्य विरेकेन प्राप्तान्ते निर्ययुर्गदाः ।।१८।।
कुष्ठकासश्वासपित्तहरश्लेष्मो दरामयान् ।।
ज्वराम्लपित्तरपाड्वर्शःशूलशोथकृमीनपि ।।१९।।
एवं दोषाः स्मृतास्ताम्रे त्वसम्यङ्मारिते सति ।।
दाहः स्वेदो रुचिर्मूर्च्छोत्क्लेदो रेको वमिर्भ्रमः ।।२०।।

जो तांबा जपापुष्प के तुल्य लाल, चिकना, कोमल, घन के योग्य लोह शीशे के मेल से रहित होवे वह तांबा मारने को उत्तम होता है। दुग्ध सनाय और खांड़ से जो पुरुष दो रत्ती के बराबर ताम्र भस्म खावे अवश्य करके दस्तों के जरिये उसके सर्व रोग दूर होते हैं। कोढ़, खांसी, श्वास और पित्त को दूर करता है। श्लेष्मविकार और उदररोग, ज्वर, अम्लपित्त, पीलिया, ववासीर, शूल, सूजन व कृमिरोग को दूर करता है। कुरीति से मारा हुआ तांबा इतने रोगों को ज्यादा कर देता है, दाह, पसीना, अरुचि, मूर्च्छा, उत्क्लेद, वमन और भ्रम इन सर्व रोगों को उत्पन्न करता है।।१७-२०।।

वंग (रांगे) के गुण

शीघ्रद्रावि सशब्दं वा स्फुटनं चन्द्रसन्निभम् ॥
चन्द्रिकामलहीनं यद्गालितं वङ्गमुत्तमम् ॥२१॥
सर्वमेहान् सितादुग्धैः सतालं यच्च मारितम् ॥
हन्त्यष्टादश कुष्ठानि रजनीक्वाथसंयुतम् ॥२२॥
अशुद्धवङ्गं कुरुते शूलं गुल्मत्वचांघ्रिजम् ॥
वातशोथप्रमेहं च पाण्डुरोगं भगन्दरम् ॥२३॥

जो रांगा झट पतला और नर्म हो जाता है और शब्द के साथ तुर्त टूट जाता है और जो गलाने पर चमक सहित और मल रहित हो सो वंग (रांगा) उत्तम होता है। जो हरताल के साथ बना होवे वह मिश्री दुग्ध के संग पिया जावे तो बीस प्रमेहों को दूर करता है, हलदी के काढ़े के साथ पिये तो अठारह प्रकार के कुंष्ठों को दूर करता है। विना शोधा हुआ वंग (रांगा) शूल, गुल्म, त्वचा और पैर में वादीपन, सूजन, प्रमेह, पीलिया और भगन्दर इत्यादि रोगों को पैदा करता है॥२१-२३॥

जस्त के गुण

जसदं दर्पणाभासं घनच्छायं सितप्रभम् ॥
निषेके यद्रजतवद्दाहे छेदे च तालवत् ॥२४॥
पुराणगोघृतैर्नेत्र्यं ताम्बूलेन प्रमेहजित् ॥
अग्निमन्थेनाग्निकारी त्रिसुगन्धैस्त्रिदोषजित् ॥२५॥
अशुद्धजसदं कुर्याद्रक्तपित्तं च शीतलाम् ॥
मन्दानलत्वमाधिक्यं धातुनाशं ज्वरादि च ॥२६॥

जस्त दर्पणसमान साफ, गहरी परछाही वाला, सफेद, कान्तिवाला, बुझाने में चांदी के समान, तपाने तथा काटने में हरताल के समान हो वह जस्त शुभ जानना चाहिये। गाय के पुराने घृत में खावे तो नेत्रों को उत्तम है, पान के साथ खावे तो सर्व प्रकार के प्रमेह जाते हैं, अरणी के साथ तो अग्नि को प्रदीप्त करता है और त्रिसुगन्ध के साथ खावे तो

त्रिदोष का नाश करता है। अशुद्ध जस्त खावे तो रक्तपित्त और शीतला रोग को उत्पन्न करता है, मन्दाग्नि धातु क्षीणता और ज्वर आदि को करता है।।२४-२६।।

शीशे के गुण

विकीर्णं दृश्यते श्वेतं गालितं गगनोपमम् ।।
दृश्यते नागवत्तत्र सन्नागं शमिवत्कुषे ।।२७।।
नागस्तु नागशततुल्यबलं ददाति ।।
व्याधिं च नाशयति जीवनमातनोति ।।
वह्निं प्रदीपयति कामबलं करोति ।।
मृत्युं च नाशयति सन्ततसेवितः सः ।।२८।।
मंदाग्निमामशूलं च पिंगमेहादिरुग्व्रजम् ।।
अशुद्धनागः कुरुते प्राणानपि निहंति च ।।२९।।

जो शीशा उकेलने में सफेद दीखे, गलते ही आकाश के समान काला हो जाय. देखने में वंग के समान रंग होय और कुष (हटाने) में शमीवृक्ष कासा हो जाय वह नाग (शीशा) श्रेष्ठ होता है। यह नाग सौ हाथियों के समान बल को देता है और व्याधि (रोग समूहों) का नाश करता है, जीवन (आयु) को वढ़ाता है; अग्नि को भी प्रदीप्त करता है, कामबल को वढ़ाता है, मृत्यु को दूर करता है, हमेशा सेवन करने से वह इस प्रकार गुण करता है। विना शोधा हुआ नाग मन्दाग्नि, आंव, शूल, फिरंग व प्रमेह इत्यादि रोगों को करता है और प्राणों को भी हरता है।।२७-२९।।

लोहसार मारण शोधन

दुग्धेऽग्नौ शिखराकाराण्यंगाराम्लेन लेपिते ।।
लोहे स्युः पत्रसूक्ष्माणि तत्सारमभिधीयते ।।३०।।
शुद्धलोहभवं चूर्णं पातालगरुडीरसैः ।।
त्रिपुटे च कुमार्याऽपि त्रिषट् वै माचिकारसैः ।।३१।।

सद्द्वादशांशं दरदं यंत्रे क्षिप्त्वा पुनः पुटेत् ॥
त्रिपुटं त्रिफलाभिश्च दाडिमस्य त्वचैककम् ॥३२॥
उरूबुक्नाग्निपत्रेण निर्गुण्डीतोयमुत्तरैः ॥
एवं सप्तपुटैर्लोहं मृतं वारितरं भवेत् ॥३३॥
शुण्ठी वाते सिता पित्ते कफे कृष्णा त्रिजातकम् ॥
सन्धिरोगे वरा पाण्डौ प्रोक्तं लोहानुपानकम् ॥३४॥
त्वक्षु कण्ठे च हृद्रोगशूलहृल्लासमश्मरीन् ॥
नानारोगान्प्रकुरुते चूर्णलोहमशोधितम् ॥३५॥

जहां दुग्ध में छोड़ देने या अग्नि में तपाने या साधारण देखने में शिखर के आकार पर बीछी के समान छोटे २ चिह्न वा खटाई के लेप से लोह में होवें तो वह लोहसार लोहा कहाता है पूर्वोक्त रीति से बुझावे और उस लोहे के चूरा को पाताल मूली (छरहटा) के रस में खूब घोटे और तीन पुट देकर आंच देवे फिर ग्वारपाठा में घोटे फिर गिलोय के रस में खूब रगड़े और अठारह पुटों से भस्में हो जाती है। वा जितना लोहा हो उसका बारहवां भाग शिंगरफ देवे फिर यत्र (पुट) में त्रिफला के रस में तीन बार घोटे, अनार की छाल से एक बार घोटे, अंडा और चित्रक के पत्तों के रस में दो वार, फिर निर्गुण्डी के रस में एक बार इस प्रकार सात पुटों से लोहा जल करके जल समान हो जाता है। यह भस्म या अर्क वातरोग में उत्तम सोंठ के संग, पित्त में मिश्री से, कफ में पीपर से, संधिरोग में त्रिजात (दालचीनी, इलायची व तेजपात) के संग, पांडुरोग में त्रिफला के साथ सेवन करे। ये लोहे के अनुपान कहे हैं। विना शुद्ध किया लोह त्वचारोग, कण्ठरोग, हृदयरोग, शूल, छाती के रोग, उत्क्लेद और पथरी रोग ऐसे अनेक रोगों को पैदा करता है॥३०-३५॥

उपधातु मारण शोधन

पादांशसैन्धवं दत्वा चोपधातून् विमर्दयेत् ॥

दशधा चाम्लवर्गेण कटाहे लोहसम्भवे ।।३६।।
घर्षयेल्लोहदण्डेन प्रत्येकं च मुहूर्तकम् ।।
यथासिन्दुरवर्णत्वं धातूनां सम्प्रजायते ।।३७।।

अब उपधातु शुद्धि कहते हैं। उपधातु से चौथाई सेंधानोन देकर खटाई से खूब घोटे और दश वार इसी तरह सातों को घोटकर फिर सातों को लोह के पात्र में धरकर अग्निपर धर देवे फिर उनको लोहे के दंड़े से खूब दो घड़ी रगड़े। प्रत्येक उपधातु सेंदूर के, समान हो जाय तो भस्म होती है फिर उतार लेवे।।३६-३७।।

दूसरी विधि

अथवा दोषशान्त्यर्थं त्रिकुटार्कवरार्कजे ।।
विभावयेद्द्वादशधा ततस्तान् पुटतः पचेत् ।।३८।।
कपोतौत्वोर्विष्ठया वा लिप्त्वा तानि विनिःक्षिपेत् ।।
अजामूत्रेऽथ तप्तांस्तान्क्वाथे कौलत्थिजे तथा ।।३९।।
मधुनाऽभ्यज्य तैलेन मर्दयित्वा पृथक् पृथक् ।।
टङ्कणं दशमांशेन दत्वा कुक्कुटजे पुटे ।।४०।।
दत्वा वह्निं दृढतरं उपधातून्सुधीः पचेत् ।।
अभावे मुख्यधातूनां प्रयोज्या उपधातवः ।।
न कुर्वन्ति गुणांस्तेऽपि प्रायःकुत्सितशोधिताः ।।४१।।

अथवा दोष शांति के लिये त्रिकुटा के अर्क में और त्रिफला के अर्क में बारह बारह भावना देवे फिर पुट में रखकर पचावे तो उत्तम भस्म होवेगी। बिलाव की विष्ठा और कबूतर की विष्ठा से लपेटे फिर बकरी के मूत्र में, कुलथी के काढ़े में शहद लगाकर तेल से सातों को न्यारी न्यारी रगड़े और कुक्कुट पुट में इन्हीं को न्यारे २ दशवां हिस्सा सुहागा इनमें देकर रखे तो वह सातों उपधातु भस्म हो जायँगी। मुख्य धातुओं के अभाव से उपधातु काम में लेवे बहुत करके गुणों को वगैरे विना शोधी नहीं करती हैं अर्थात् शोधनविधि से बनी हुई मुख्य धातुओं का

ही काम देती हैं। प्रायः कुरीति से शुद्ध हुए उपधातु गुण वहीं करते हैं।।३८-४१।।

कुर्वंति दोषान्भोक्तारं सिंदूरं यदि भक्षयेत् ।।
अशुद्धं वाऽथ शुद्धं वा विना मंत्रगुरूक्तितः ।।४२।।
विना तस्य भवेच्छीघ्रं स्वरभंगो मृतिस्तथा ।।
राक्षसीमस्तके लग्नं दृष्ट्वा शप्तो हनुमता ।।४३।।
आदिवाराहकल्पे तु कृता तस्य च निष्कृतिः ।।
तेनैव वानरेंद्रेण शृणु मंत्रं यथोदितम् ।।४४।।
तारासिंदूरपाचेति सिस्थाने सम्प्रयोजयेत् ।।
सिंदूरं हलकादेव चालयेति पदं वदेत् ।।४५।।
री तु प्रोक्ता खलभली जीतया कलवलीति च ।।
मंत्रः शाबरमंत्राणां शिखामणिरयं स्मृतः ।।४६।।

सिन्दूर शुद्ध हो वा अशुद्ध हो परंतु विना गुरु की उक्ति वा मंत्र के खाने वालों को अनेक प्रकार से दोष उत्पन्न करता है विना मंत्रादि के खाने वालों की स्वर क्षीणता होकर मृत्यु भी हो जाती है। राक्षसी के मस्तक पर लगा देखकर हनुमान्‌जी ने इसे शाप दिया है और आदि वराहकल्प में इसकी निश्चयता करी है फिर उन्हीं वानरों के इन्द्र हनुमान्‌जी से जो मंत्र कहा गया है सो हे प्यारी पार्वती! तुम सुनो, दो श्लोकों में मंत्रोद्धार कहा है, मंत्र यह है "ॐ तार सिन्दूरया खलभलित्वकलचलिन् कालभैरव सिन्दूर हलकादेव चालय" यह सावरमंत्रों का शिखामणि मंत्र है।।४२-४६।।

सिंदूरविधान

गुरुतो वा महेशाढ्यात् गृहीत्वा मंत्रमुत्तमम् ।।
पुरश्चर्यासहस्रं तु तद्दशांशं तु होमयेत् ।।४७।।
सिंदूरं तैलवटकैः पूजयेत्करवीरकैः ।।
दूर्वाभिर्मार्जनं कार्यं सक्षीरब्रह्मभोजनम् ।।४८।।

ततः सिद्धो भवेन्मंत्रः शबरासुरभाषितः ॥
अनेनामंत्र्य सिंदूरं षण्मासं यस्तु भक्षयेत् ॥४९॥
विमुक्तः क्रोधलोभाभ्यां तथा तृष्णाजयान्वितः ॥
यत्तो यो नियमैः शाम्यादिभिश्चापि जितेंद्रियः ॥५०॥

अपने गुरु से या किसी शैव से यह उत्तम प्रकार से मंत्र सीखकरके विधिपूर्वक एक हजार वेर जप करे और उसके दशांश होम करे और सिन्दूर को तेल के बड़ों से और कनेर के फूलों से भली भांति पूजे फिर दूब से दशांश हवन का मार्जन करे फिर खीर से ब्राह्मणों को भोजन करावे फिर यह शबरासुर का कहा हुआ मंत्र अवश्य सिद्ध होवेगा और इस मंत्र से सिन्दूर को पढ़कर यदि छः मास बराबर खावे तो वह क्रोध, लोभ और तृष्णा से रहित, शमदमादि नियमों से युक्त और जितेन्द्रिय होवेगा॥४७-५०॥

ब्रह्मचर्यरतस्तस्य बिंदुरूर्ध्वं प्रजायते ॥
महारात्रौ तु यो नग्नो जपन्गृह्णाति मन्त्रकम् ॥५१॥
क्रियते येन सुधिया जपता मंत्रमुत्तमम् ॥
वानराणां च सप्तानां प्रसरं तिलकाह्वयम् ॥५२॥
मोहयेत्सकलं विश्वं रणे जयति निश्चितम् ॥
ललाटे तिलको यावत्तावदीशः स एव हि ॥५३॥

ब्रह्मचर्य धर्म में तत्पर रहने वाला जो खावे तो उसके वीर्य की बूंद ऊपर को हो जाती है और जो महारात्रि (दिवाली) में रात्रि को नग्न होकर मंत्र को जपता है और उस करके जपते हुए सात बन्दरों के माथे में सिन्दूर का यदि तिलक देवे तो वह मनुष्य सब विश्व को मोह लेवेगा और संग्राम में अवश्य करके विजय पावेगा और ललाट (मस्तक) में जब तक तिलक रहे तब तक ईश (स्वामी) समान सुखी रहे। यह सिंदूर विधि कही है॥५१-५३॥

पारदविधान

उन्मत्तविजयार्कं वा काञ्जिके सूतधावने ॥
हालाहलेन तुल्येन दरदोत्थं विमर्दयेत् ॥५४॥
नष्टपिष्टं तु तद्गत्वा भावयेत्पद्मिनीदलैः ॥
गोधूमराशौ संस्थाप्य मासमेकं ततः पुनः ॥५५॥
निष्कास्य क्षालयित्वा तु अहिफेनेन मर्दयेत् ॥
कुर्याच्च पूर्ववत्पश्चान्नवसारेण मर्दयेत् ॥५६॥
कमलस्य रसेनादि कृष्णोन्मत्तरसेन च ॥
हिङ्गुना गन्धपाषाणसत्वेनाथ विमर्द्य च ॥५७॥

पारे के धोवन में धतूरे और भांग का अर्क वा कांजी में वा सिंगरफ से निकसे पारे को बराबर के विष के संग खूब घोटे और कठोर होने पर पद्मिनी के पत्तों के अर्क से भावना देवे फिर गेहुओं की राशि (ढ़ेरी) में एक मास तक धर देवे फिर उसको निकाल करके शुद्ध पानी से धोवे और अफीम से खूब घोटे, पूर्ववत् (पहिले की तरह) धान्य में एक मास धरकर फिर नौसादर में घोटे, फिर कमल के रस से घोटे, इसी तरह काले धतूरे के रस से और हींग से, गंधपाषाण के सत से घोटे॥५४-५७॥

षण्मासे तरतः स्थाप्यः सूरणस्थोदरे रसः ॥
एवं वर्षेण सिद्धः स्याद्रसराट् च स्वयं मतम् ॥५८॥
दृश्यते चूर्णसंकाशो जीवनाख्यो रसोत्तमः ॥
एवं गुञ्जा द्विगुञ्जा वा दृष्ट्वा दोषबलाबलम् ॥५९॥
दृष्ट्वौषधगुणं देयस्तेन सोऽर्करसोत्तमः ॥
देयो गुणो न चेच्चेतो तं ब्रह्माऽपि न जीवयेत् ॥६०॥

फिर छः मास सूरण (जिमीकन्द) में धर देवे, इस प्रकार एक साल भर में रसों का राजा पारा आप ही अपने मत से शुद्ध होता है। वह जीवनरूप पारा उत्तम चूससा होता दीख पड़ता है और फिर इसको

रत्ती या दो रत्ती के प्रमाण से देवे। इस रस के गुण को देखकर उत्तम योग के साथ देवे तो महागुण करता है और इसके देनेपर भी आतुर को नहीं जिलावे तो समझना कि ब्रह्मा भी नहीं जिला सकते हैं।।५८-६०।।

दरदशिंगरफ शोधन

चणकाभानि खण्डानि दरदस्य तु कारयेत् ।।
ताम्रजे वायसे पात्रे स्थाप्यस्तानि धमेद्दृढम् ।।६१।।
जातायामुष्णतायां तु तद्द्रव्येण च सेचयेत् ।।
द्रव्यतुल्यं द्रवद्रव्यमेषा स्याद्वह्निभावना ।।६२।।
मेषीक्षीरेण दशधा दशधा क्षीरजार्ककैः ।।
दीप्तिवर्गेण दशधा विरेक्यर्के च पञ्चधा ।।६३।।
पञ्चधा दुग्धवर्गेण अन्तराम्लस्य भावना ।।
अयं शतार्कदरदो नानारोगविनाशकः ।।
क्षुधोद्बोधकरी नित्यं योगवाही निगद्यते ।।६४।।

दरद (सिंगरफ) के चना बराबर टुकड़े करे फिर उनको तांबे वा लोहे के पात्र में धरकर खूब तपावे और जब उसमें गरमाई आ जावे तो उसमें पानी के तुल्य पतला द्रव्य उसी के बराबर छोड़े यह वह्निभावना है। इस द्रवद्रव्य को भेड़ के दुग्ध में दश, वार, दूधवाले वृक्षों के अर्क में दश वार, दीपन वर्ग में अर्क में दश वार, रेचनवर्ग के अर्क में पांच वार, दूध वर्ग में पांच वार और खटाई के अर्क में दश वार इस प्रकार पचास वार भावना देवे। यह संस्कार करा हुआ दरद (सिंगरफ) अनेक तरह के रोगों का नाश करता है और हमेशा क्षुधा बढ़ाने वाला, मद को बढ़ाने वाला और योगवाही है। यह दरदपिवान कहा।।६१-६४।।

गन्धकशोधन

गंधकं भूमिलवणं सममेकत्र चूर्णयेत् ।।
अप्रकाशमसूर्यास्ततोयं खल्वे विनिक्षिपेत् ।।६५।।

निष्कास्य तज्जलं प्रातः सममम्लेन मर्दयेत् ॥
पुनर्दत्वा जलं क्षिप्त्वा शतवारं समाचरेत् ॥६६॥
जायते गन्धको दिव्यश्वेतो गन्धविवर्जितः ॥
शतधो भावयेत्तं तु कदलीदण्डजैर्जलैः ॥६७॥
दीप्तो न जायते वह्निस्तत्संयोगात्कदाचन ॥
सुगन्धार्केण भाव्योऽसौ नखवारं प्रयत्नतः ॥६८॥
को वा तस्य गुणान्वक्तुं भुवि शक्तो हि मानवः ॥
हंति कुष्ठादिकान्रोगान् पामादीनां तु का कथा॥६९॥

गन्धक का पिवान लिखते हैं गन्धक और खारी नोंन बराबर लेके एक में शामिल कर पीसे, धूप न लगने देवे फिर मसूर की दाल के पानी के साथ पात्र में छोड़ देवे और प्रातः होते ही उस पानी को निकाल देवे फिर बराबर की खटाई में घोटे फिर धरे जल से निकाले इसी प्रकार सौ बार करे तो गन्धक सफेद, दिव्यवास रहित, उत्तम शुद्ध, सर्व काम में लाने योग्य होता है। फिर उसको केला के अर्क से सौ बार भावना देवे तो उसके योग से अग्नि नहीं जलने पावेगी इस प्रकार विपरीत होता है। फिर सुगन्धा (माघवीलता) के रस में बीस बेर यत्नपूर्वक भावना देवे तो फिर पृथिवी में इसके गुण कौन कह सकता है? वह कुष्ठ आदि अनेक रोगों को दूर करता है, फिर पामा आदि रोगों का कहना ही क्या है॥६५-६९॥

अभ्रकमारण

यदभ्रकं गजपुटे गणैः पुटीकृतम् ॥
सहस्राभ्रं तदाख्यातं वयसंस्थापनं परम् ॥७०॥
परं गुणावहं ह्येतद्वयोवृद्धिकरं मतम् ॥७१॥

जो अभ्रक सम्पूर्ण दीपनादि गणों करके पुट संस्कार दिया हुआ है उसको फिर गजपुट में पकाया जाय तो वह सहस्राभ्रक होता है सो आयु को अधिक करने में परम श्रेष्ठ है और सर्व रोग मात्र पर गुण करता

है॥७०-७१॥

हरिताल शोधन

हरिताले द्विधा प्रोक्ते गोदन्तः सर्वतोऽधिकः ॥
तदभावे तु पत्राख्यस्तस्य पत्राणि कारयेत् ॥७२॥
यामं यामं तु तत्स्वेद्यं द्रव्येषु नवसु क्रमात् ॥
तिलतैले वराक्वाथे चूर्णतोये कुलत्थजे ॥७३॥
काञ्जिके कदलीतोये दुग्धे कूष्माण्डजद्रवे ॥
अजादुग्धेन तत्तालं संशुद्धं दोषवर्जितम् ॥७४॥
अशीतिकर्षं चिञ्चाया ग्राह्यं भस्म सुशोधितम् ॥
त्रिंशत्कर्षं हण्डिकायां दृढायां तन्निवेशयेत् ॥७५॥
आस्तीर्य तालपत्राणि कर्षद्वयमितानि च ॥
त्रिंशत्कर्षं पुनर्भस्म स्थापयेत्तालकोपरि ॥७६॥

हरताल दो प्रकार का है। तिनमें गोदन्ती नाम का हरताल सबसे उत्तम गुण कारक है, वंह नहीं मिले तो पत्र ही का लेवे, सो उसके पत्र करावे फिर उसे इन द्रवद्रव्यों में क्रम से प्रहर २ भर मसले और तिलों के तेल में, वरियारे के काढ़े में, चूने के पानी में, कुल्थी के पानी में, कांजी में, केला के अर्क में, दूध में कुम्हड़े के द्रव में और बकरी के दूध में इसी प्रकार नवविधिजल में धोवे तो हरताल शुद्ध दोष रहित होवेगा। फिर अस्सी कर्ष (२० पल) इमली की शुद्ध पिसी पत्ती लेकर उसमें से २० कर्षभर चूर्ण पक्की हांड़ी में बिछावे फिर उस पर दो कर्ष तुले हरताल के पत्र धरे और उस पर तीस कर्ष चूर्ण बिछावे और बाकी बीस कर्ष हांड़ी के ढकने की जगह खाम में लगा देवे॥७२-७६॥

संपूज्य भैरवादींश्च हंडीं चुल्ल्यां निवेशयेत् ॥
यामं यामं क्रमादग्निं संकुर्यात्पञ्चयामकम् ॥७७॥
पश्येत्तदैकचित्तस्तु कुत्र धूमोऽस्य गच्छति ॥
गच्छंतं धूममालोक्य भस्मना चावरोधयेत् ॥७८॥

एवं तु पञ्चभिर्यामैस्तत्तालं तु मृतं भवेत् ॥
भस्मोपरिस्थं युक्त्या च गृह्णीयाद्रविसन्निधौ ॥७९॥

भैरव इत्यादि देवताओं को पूजके हाड़ी को चूल्हे पर चढ़ा देवे फिर प्रहर २ के क्रम से पांच प्रहर तक चितको स्थिर करके अग्नि जलाता रहे इसी प्रकार एकाग्रचित्त होकर देखे कि किस तरफ को धुवां जाता है सो निकलते हुए धुंएं को देखकर भस्म से उसको रोकता जाय यानी पूर्वोक्त २० कर्ष बाकी में से चूर्ण लगाता जाय इस तरह पांच प्रहर में हरताल भस्म सर्वोपर होता है और भस्म ऊपर टिक्के को युक्ति से सूर्य के सन्निध ले लेवे॥७७-७९॥

तस्मिंस्ताले विचूर्णानि पत्राण्यन्यानि निक्षिपेत् ॥
पुटं दद्यात्पूर्ववच्च एवं वाऽर्कदिनावधि ॥८०॥
तत्तालं जायते दिव्यं सर्वरोगनिकृन्तनम् ॥
रक्तिकायाः सप्त मात्रा तालकस्य सुसम्मितिः ॥८१॥

उस हरताल में अन्य भी पीसा हुआ इमली के पत्ते का चूरा डालकर पूर्व कहे प्रकार पुट लगावे, इस प्रकार बारह दिन तक बराबर करने से वह दिव्य हरताल सर्व रोगों को नष्ट करने वाला होता है। उसके खाने की मात्रा एक रत्ती को सात बेर में खावे॥८०-८१॥

शुद्ध हुए हरताल का अनुपान

उपोदक्यथ वक्ष्येऽहं तालकस्यानुपानकम् ॥
हरताले तु संसिद्धे हरिणा किं प्रयोजनम् ॥८२॥
सर्वरक्तविकारेषु देयमात्रहरिद्रया ॥
सुहालाहलजीराभ्यामपस्मारविनाशनम् ॥८३॥
समुद्रफलयोगेन जलोदरविनाशनम् ॥
देवदालीरसैर्युक्तो भगन्दरहरः स्मृतः ॥८४॥

रावण मन्दोदरी से कहता है कि, हे गर्भिणी! मैं अब हरताल का अनुपान कहता हूँ। हरताल सिद्ध हो जाने में हरि से क्या प्रयोजन है

अर्थात् इस हरिरूप के समुद्र में मग्न हुए फिर एक छोटी वानर आदि नदियों से क्या प्रयोजन है? इसको सम्पूर्ण रक्तविकारों में आमा हल्दी के साथ देवे। यह कुछ थोड़े ही विष के संयोग व जीरे से मृगीरोग को दूर करता है, समुद्र फल के संयोग से जलोदर रोग का नाश करता है और देवदारू के रस से मिलाकर देने से भगन्दर रोग को दूर करता है।।८२-८४।।

मैनशिल का मारण शोधन

पचेत्त्र्यहमजामूत्रे दोलायंत्रे मनःशिलाम् ।।
भावयेत्सप्तधा पित्तैरजायाः स विशुद्धयति ।।८५।।
घृतानुपानतो व्रणं वरानुपानतो मलम् ।।
वसानुपानतः कफं हरेन्मनः शिला ह्यलम् ।।८६।।

मैनशिल को तीन दिन बराबर बकरी के पेशाब से दोलायंत्र में धरकर पकावे और आठ प्रहर अग्नि देवे फिर मूत्र निकालकर फेंक देवे इसी तरह सात वार करने से मैनशिल शुद्ध हो जावेगी। इसको घृत के साथ खाने से व्रण को ठीक करता है और त्रिफला के साथ खाने से कफ को नाश करता है। मैनशिल सर्वथा उत्तम है।।८५-८६।।

खपरियाशोधन

दोलायंत्रेण सप्ताहं मूत्रवर्गे रसं पचेत् ।।
तच्छुद्धं नेत्ररोगाणां नाशकं वरया सह ।।८७।।

पारे को इसी दोलायंत्र में सात दिन मूत्रों के साथ पकावे तो वह शुद्ध हुआ। यह त्रिफला के साथ सर्व प्रकार के नेत्ररोगों को दूर करता है, और भी सर्व रोगों को उत्तम है।।८७।।

उपरसशोधन

त्रिक्षारे लवणे देयमम्लवर्गे त्रिधा पचेत् ।।
एवं तूपरसाः शुद्धा जायन्ते दोषवर्जिताः ।।८८।।
रसाभावे प्रदातव्यास्तस्यैवोपरसा रसे ।।

सेवतो बहुकालं स सर्वतः कुरुते गुणम् ॥८९॥

तीन बेर खारीनोन में और तीन बेर खटाई के वर्ग में भावना देनी चाहिये इस तरह सर्व उपरस दोष रहित शुद्ध होते हैं। रस के अभाव में उपरस देना उचित है। वह भी अधिक कालतक सेवन किया जाय तो सब प्रकार से गुण ही करता है॥८८-८९॥

रत्नशोधन

हिङ्गुसैन्धवसंयुक्ते क्षिपेत्क्वाथे कुलित्थजे ॥
रत्नानां सप्तसप्तानां भवेद्भस्म त्रिसप्तधा ॥९०॥
श्रेष्ठं वज्रं ततो हीनगुणमन्योन्यमीरितम् ॥
सेवितं सर्वरोगघ्नं बलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥९१॥

रत्नों की यह रीति है, कि सेंधेनोन के साथ कुलथी के क्वाथ में उन्हें छोड़ देवे और मर्दन करके पुट में देवे, इसी प्रकार लगातार २१ बार में सब भस्म होते हैं। सर्व रत्नों की अपेक्षा शुद्ध (भस्म) किया हुआ हीरा अधिक गुणों को देता है इसका सेवन करने से सर्वरोग दूर होते हैं और बल बढ़ता है और शरीर पुष्ट होता है॥९०-९१॥

विषशोधन

गोमूत्रे त्रिदिनं स्थाप्यं विषं तेन विशुद्ध्यति ॥
रक्तसर्षपतैलाक्ते तथा धार्यं च वाससि ॥९२॥
पञ्चगव्येषु शुद्धानि देयान्युपविषाणि च ॥
विषाभावे प्रयोगेषु योज्यास्तत्कार्यकारिणः ॥९३॥

विष को गोमूत्र में तीन दिन बराबर रखे तो शुद्ध होता है, इसी प्रकार लाल सरसों के तेल में और वस्त्र में भी धरना। यह उत्तम मतवाला वातकफ को खोता है, सन्निपात को दूर करता है, यह युक्ति से खानपान में लिया तो प्राणों को भी देनेवाला रसायनरूप है। पञ्चगव्यों में शुद्ध किये उपविषयी देवे। विष न होने पर इनको देने से कार्य होते हैं॥९२-९३॥

उपविषशोधन

पञ्चगव्येषु शुद्धानि देयान्युपविषाणि च ॥
विषाभावे प्रयोगेषु योज्योपविषकार्यकृत् ॥९४॥

पञ्चगव्यों से शुद्ध किये उपविष दोषों को दूर करते हैं और विष के अभाव में उपविष देवे तो सर्व कार्य होते हैं॥९४॥

जैपाल (जमालगोटा) शोधन

न विषं विषमित्याहुर्जैपालो विषमुच्यते ॥
शोधितोऽयं विरेकेषु चमत्कृतिकरः परः ॥९५॥
पञ्चगव्येषु संशोद्धय दूरीकुर्य्याच्च जिह्विकाम् ॥
ततोऽम्लवर्गे दशधा क्षारवर्गे त्रिधा पुनः ॥९६॥
कुमारिकाद्रवे भस्म जले चैवं विशोधयेत् ॥
एवं शुद्धस्तु जैपालो वांतिदाहविवर्जितः ॥९७॥

विष को विष नहीं कहते हैं, जैपाल (जमालगोटे) को विष कहते हैं। यह शोधा हुआ दस्तों में अत्यन्त ही उत्तम चमत्कार करने वाला है परंतु उसकी जीभी को निकाल लेवे और सब गुठली को पञ्चगव्य में शुद्ध कर लेवे और दश वार खटाई के वर्ग में, तीन वार खार के वर्ग में, तीन वार घीग्वार के पट्ठे के अर्क में और इमली की भस्म के पानी में शोधे, इस तरह का शुद्ध किया जमालगोटा वमन और दाह से रहित होता है॥९५-९७॥

मन्दोदरि तवाख्यातं यन्मया शिवतः श्रुतम् ॥
एतज्ज्ञात्वा तु गर्भिण्या त्वया यत्नं विधीयताम् ॥९८॥

रावण बोला कि, हे प्रिये मन्दोदरी! यह मैंने शिवजी का सुना हुआ औषधकल्प तुमको अच्छे प्रकार सुनाया है सो सर्व उत्तम तरह जानकर और अब तुम तो गर्भवाली हो इसलिये तुर्त यत्न करना और आनन्दपूर्वक रहना॥९८॥

एवमुक्त्वा तु भैषज्यरहस्यं स दशाननः ॥
सायंसन्ध्याविधिं कर्तुमुत्थितो मंदिरं ययौ ॥९९॥

इसी तरह रावण ने औषध रहस्य को कहकर फिर सायं संध्याविधि करने को अपने मंदिर को जाता हुआ॥९९॥

सुयोग्यं निजगेहस्य सुखकार्यं कुरु प्रिये ॥
अहं संन्ध्याविधानार्थं त्वथ यामि नदीतटम् ॥१००॥

इति श्रीरावणकृतार्कप्रकाशे दशमं शतकं समाप्तम् ॥१०॥

उस वक्त फिर मन्दोदरी से कहा कि हे प्रिये! निजगृह के कार्य को आनन्दपूर्वक करो और मैं भी संध्या करने को नदी के निकट जाता हूँ॥१००॥

इति पण्डितमुकुन्दरामकृतार्कप्रकाशहिन्दीटीकायां
दशमं शतकं समाप्तम् ॥१०॥

इति हिन्दीटीकासहितः अर्कप्रकाशः समाप्तः।

आयुर्वेद सम्बन्धी हमारे कुछ विशिष्ट प्रकाशन

अष्टांग हृदय (वाग्भट्ट) सूत्रस्थान–वाग्भट्टकृत मूल, अरुणदत्त कृत सर्वांग सुन्दरा, चन्दनदत्त कृत पदार्थ चन्द्रिका, हेमाद्रि आयुर्वेद रसायन; कठिनस्थल पर राजवैद्य वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजीकृत टिप्पणी सहित

अमृतसागर–(हिन्दी में) इसमे सर्व रोगों के वर्णन और यत्न हैं। इसके द्वारा बिना गुरु वैद्य हो सकते हैं।

अनुपान दर्पण–हिन्दीटीका सहित । इसमें रस धातु बनाने की क्रिया और रोगानुसार औषधियों के अनुपान वर्णित हैं।

आयुर्वेद सूत्र–हिन्दीटीका सहित ।

इलाजुल गुर्बा–(हिन्दी अनुवाद)

कामरत्न–योगेश्वर नित्यानाथ प्रणीत और पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें कामशास्त्रादि विषय और रोगों की औषध तथा वाजीकरण औषध अनुभूत है। और वशीकरण प्रयोग भी है।

चक्रदत्त–(चिकित्सासार संग्रह) दत्तकुलोत्पन्न चरक चतुरानन श्रीमच्चक्र पाणि विरचित। श्री० पं० जगन्नाथ शर्मा वाजपेयी आयुर्वेदाचार्य द्वारा नितान्त परिशोधित सुबोधिनी टीका सहित

पारद संहिता–हिन्दी टीका सहित। इस ग्रंथ में रसविषयक सभी अवयवों का सांगोपांग वर्णन है तथा अरबी, फारसी, यूनानी, तिब्बी आदि अनेक वैद्यक ग्रंथों का सारांश लेकर विषय प्रतिपादन किया है। अतः पारद (पारे) को सिद्ध करनेवालों के लिए अतीव उपयोगी है।

बृहन्निघण्टु रत्नाकर भाग ७-८ अर्थात् शालिग्रामनिघण्टुभूषण–इसमें वनौषधियों की सम्पूर्ण जानकारी दी गयी है। इसमें औषधियों के चित्र, गुण, तथा अनेकों भाषाओं में नाम दिये गये हैं।

योग तरंगिणी–त्रिमल्ल भट्ट कृत मूल तथा पं० दत्तराम चौबे कृत हिन्दी टीका सहित–इसमें सब वैद्यक संहिताओं का सार संग्रह है।

रसेन्द्र सार संग्रह–म० म० गोपाल सिंह सूरि विरचित। वैद्यराज पं० रामप्रसादजी राजवैद्य कृत हिन्दी टीका सहित। यह प्रामाणिक व परीक्षा में नियुक्त ग्रन्थ है।

रसेन्द्र पुराण–वैद्यराज पं० राम प्रसाद पटियाला राजवैद्य कृत हिन्दी टीका सहित

लोलिम्बराजकृत वैद्य जीवन–सुखानन्द कृत संस्कृत टीका तथा पं० मिहिरि चन्द्र कृत हिन्दी टीका सहित। इसमें श्रृंगार रस प्राधान्य से रोगों की चिकित्सा लिखी है

वैद्यक रसराज महोदधि–सम्पूर्ण पांचों भागों की एक जिल्द

शालिग्रामौषधि शब्द सागर–अर्थात् आयुर्वेदीय औषधि कोष गो० वा० लाला शालग्राम वैश्यकृत

हरीतक्यादि निघण्टु–भाव मिश्र कृत। वैद्यरत्न पं० शिवशर्माजी कृत "शिव प्रकाशिका" हिन्दी टीका सहित। इसमें अंग्रेजी तथा फारसी औषधियों के संस्कृत नाम व संस्कृत नामों के फारसी नाम भी है।

कामसूत्र–महर्षि वात्स्यायन प्रणीत पं० यशोधर विरचित मंगलाजख्य व्याख्या तथा रिसर्च स्कॉलर पं० माधवाचार्य कृत पुरुषार्थ प्रभाख्य हिन्दी टीका व टिप्पणी विभूषित। संपूर्ण ग्रन्थ मजबूत कपड़े की दो जिल्दों में।

कोकसार वैद्यक–नारायणप्रसाद मिश्रकृत तथा इच्छागिरिजीकृत काम कलासार सहित। वात्स्यायन कामसूत्र आदि ग्रन्थों में प्रतिपादित विषयों को सरलता से समझने के लिये उक्त ग्रन्थ दो भागों में बनाया गया है। पूर्व भाग में स्त्री पुरुषों के अनेक रोगों के निवारणार्थ उत्तम साधन बताये गये हैं, ईक्षागिरीजी ने कामशास्त्र तथा वैद्यक के अनुभव से कोकशास्त्रों में भी नहीं पाये जाने वाले साधनों का विशद रूप से संग्रह किया है।

गुणों की पिटारी–काशी निवासी स्वामी परमानन्द कृत–

चर्या चन्द्रोदय–हिन्दी टीका सहित

चरक संहिता–(महर्षिप्रवर चरक–ऋषि प्रणीत) मूलमात्र संस्कृत में सजिल्द

ज्वर तिमिर नाशक–क्या खूब चौबे रामप्रसादजीकृत हिन्दी टीका

डाक्टरी चिकित्सासार–पं० मुरलीधर शर्मा राजवैद्य संग्रहीत

त्रिशती-(वैद्यवल्लभ) श्री शार्ङ्गधर रचित। संस्कृत टीका व हिन्दी टीका सहित

नपुंसकामृतार्णव–वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्यकृत हिन्दी टीका सहित। इसमें नपुंसकोपयोगी नाना प्रकार के तेल, लेप, घृत आदि वाजीकरण और औषधियां सर्वोत्तम हैं।

पशु चिकित्सा–(वृष कल्पद्रुम) छन्दवद्ध भाषा

पाकप्रदीप और पुष्टि प्रकाश–हिन्दी टीका सहित

बालतंत्र–हिन्दी टीका सहित

बृहन्निघण्टु रत्नाकर–पञ्चम भाग–रोगों का कर्म विपाक

बृहन्निघण्टु रत्नाकर–षष्ठ भाग–रोगों का चिकित्सा विभाग

बोपदेव शतक–हिन्दी टीका सहित

भैषज्य रत्नावली–हिन्दी टीका सहित। मूल रचयिता श्री गोविन्ददासजीसेन हिन्दीटीकाकार–स्वं० वैद्य शंकरलालजी। इसमें क्वाथ, चूर्ण, अवलेह, आसव, अरिष्ट आदि वनस्पतिजन्य प्रयोग और रस, धातु आदि के द्वारा सिद्ध किये रसायन आदि के अनेक प्रयोग हैं।

मदनपाल निघण्टु–वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्य कृत हिन्दी टीकासहित। औषधियों के नाम व गुणदोष वर्णित हैं।

महामारी विवेचन–हिन्दी टीका सहित

मानव संतति–प्रसूति शास्त्र अथवा युवतिसखा–कविराज बलवन्त सिंह मोहन वैद्यवाचस्पति कृत

योग महोदधि–(वैद्यक रत्न भंडार)

रसरत्न समुच्चय–वाग्भट्टाचार्य विरचित। भिषग् भूषण पं० शंकर लाल हर शंकर कृत हिन्दी टीका सहित। रस, भस्म आदि का अद्वितीय ग्रंथ। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की वैद्य विशारद, परीक्षा में स्वीकृत सहायक पाठ्य ग्रन्थ

वैद्य कलाधर–आरोग्य संबधी उपदेश, निदान व उपाय

वैद्य मनोरमा और धारा कल्प–भिषग्वर कालीदासजी वैद्यकृत।

वैद्यकृत विनोद संहिता–शंकर भट्ट विरचित तथा भिषग्वर गदाधर त्रिपाठी कृत हिन्दी टिप्पणी सहित

वैद्यक रसराज महोदधि (प्रथम भाग)--भगत भगवानदास कृत। यूनानी हिकमत, यूनानी दवा, जड़ी बूटी और संतो की पुस्तकों का संग्रह।

वैद्यक रसराज महोदधि–द्वितीय भाग (उपरोक्त विषयानुसार शरबत पाक आदि की विधि सहित।

वैद्यक रसराज महोदधि–(तृतीय भाग) जड़ी बूटी द्वारा धातु आदि का शोधन, मारण, गुण तथा अनुपान

वैद्यक रसराज महोदधि (चतुर्थ भाग) इसमें सर्व रोगों के निदान, लक्षण, चिकित्सा और पथ्यापथ्य है।

वैद्यक रसराज महोदधि–(पञ्चम भाग) इसमें प्राचीन ग्रन्थों के अच्छे अच्छे नुस्खे व औषधियों का विचार है।

वैद्यक रसराज महोदधि–चारो भाग की एक जिल्द

शरीर पुष्टि विधान भाषा

शिशुपालन–(बालकों के पालन पोषण की विधि सचित्र और नक्शोंसहित) कविराज बलवन्त सिंह मोहर वैद्य वाचस्पति कृत

शीतला परिहार अर्थात् आरोग्यमृतविन्दु–हिन्दी में

शुभ सन्तति योग प्रकाश–हिन्दी टीका सहित। वैद्यराज पं० राम प्रसाद राजवैद्यकृत

हितोपदेश वैद्यक–हिन्दी टीका सहित। जैनाचार्य श्रीकण्ठजी कृत। इसमें ज्वरादि रोगों के विलक्षण लक्षण तथा सविस्तार चिकित्सा लिखी है।

होम्योपैथी–(हिन्दी में)–लेखक डा० मुकेश बत्रा

हिन्दी मटेरिया मेडिका–द्वितीय भाग

अपवित्र मोरस चीनी–स्वामी भास्करानन्द प्रणीत

चरक संहिता–वैद्यरत्न पं० राप्रसाद राजवैद्यकृत हिन्दीटीका एवं विद्यालंकार आयुर्वेदाचार्य प० शिवशर्माजी द्वारा संशोधित। चरक के आठों स्थान एक से एक अपूर्व होने पर भी 'चिकित्सास्थान' तो अद्वितीय ही है। प्रथम भाग पृष्ठसंख्या ९१६ तथा द्वितीय भाग पृष्ठसंख्या ११३६ है। सुनहरे अक्षरों से मुद्रित सुदर प्लास्टिक कवर से मंडित संपूर्ण दो जिल्दों में है।

भावप्रकाश–तीनो खण्ड भावमिश्र संग्रहीत। हिन्दीटीकासहित। हिन्दीटीकाकार गो० वा० लालाशालिग्रामजी। संशोधक–डा० कान्तिनारायणजी मिश्र आयुर्वेद विशारद। ए० एल० आई० एम० (मद्रास) डाइरेक्टर ऑफ आयुर्वेद (पंजाब)। इसमें शारीरिक निदान, नाड़ीज्ञान, रस प्रकरण और अष्टांग चिकित्सा आदि वैभव संबधी सभी विषय वर्णित हैं।

माधवनिदान–प० दत्तरामजी चौबेकृत हिन्दीटीकासहित। इसमें संपूर्ण रोगों का कारण, उत्पत्ति, लक्षण, संप्राप्ति इत्यादि का वर्णन है।

योगचिन्तामणि पं० दत्तराम चौबेकृत हिन्दीटीकासहित

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

